पुस्तक :

गुरुदेव श्री मांगीलालजी म. सा. का दिव्य जीवन

लेखक

मुनि हस्तिमल्ल (मेवाड़ी)

प्रकाशक

वीर वर्धमान पुस्तकालय कुंवारिया (राज.)

वीर संवत्

२४९२–विक्रमाब्द २०२२ अक्षय तृतीया सन् १९६५–४–

प्रथम प्रवेश

१२५० प्रतियाँ – राज संस्करण

डाक खर्च

१ रु. २५ नये पैसे––

मुद्रक

वसंत प्रिंटिंग प्रेस जयंति घेलाभाई दलाल,

घी कांटा रोड, अहमदाबाद ।

प्राप्तिस्थान

श्री जैन ज्ञान भण्डार, महलोंकी पीपली, वाया–कांकरोली (राज)

सप्रेम भेंट

श्रीमान् ____________________

____________________ की तरफ से

उपहारमें

समर्पण

उस प्रकाश पुञ्जको,

जिनके अमर सन्देशों ने, सेवक को उठाने में प्रेरणा दी ।

जिनके आशिर्वाद से,

मैने संयम पथ पर बढ़नेका साहस किया ।

जिनका पवित्र नाम लेकर,

मैं सफलता की राह में बढ़ रहा हूँ ।

जिनके पवित्र कर कमलों से,

आचार की दीक्षा और विचार की,

ज्योति पाकर मैं धन्य-धन्य हो गया ।

उन परमश्रद्धेय गुरुदेव श्री,

" **माङ्गीलालजी महाराज सा.** को

" सविनय "

सभक्ति

समर्पित

मुनि हस्तिमल्ल (मेवाडी)

श्री

प्रश्न—क्या है, बतलाईये ?

उत्तर—यह है, पढ़ लीजिये

गुरुदेव का दिव्य जीवन

श्री

जन्म से संयमी जीवन

संक्षिप्त परिचय रेखा

मातृभूमि —मेवाड़देश

जन्मभूमि —राजकरेड़ा

पितृनाम —श्रीमान् गम्भीरमलजी

मातृनाम —श्रीमगनकुंवरबाई

वंश —बीसा ओसवाल

गोत्र —संचेती

जन्मसंवत्—विक्रम स १९६७ पौषी अमावस्या गुरुवा

जन्म नाम —मांगीलालजी

दीक्षा संवत—वि स १९७८ वैशाख शुक्ला तीज गुरुवार

दीक्षा वय —दशवर्ष ४ माह तीन (३) दिन

मुनि नाम —श्री पृथ्वीचन्दजी अपर नाम (मांगीलालजी) महाराज

दीक्षास्थान —रायपुर (मेवाड़) छोटेमोतीचन्दजी बम्ब के घर

दीक्षा गुरु—पूज्य एकलिंगदासजी म सा गुरु सेवा का संयोगनोवर्ष,
ढाईमास बड़मनगरमें कालधर्म सं १९८७ श्रावणमास

विद्यागुरु —मेवाड़ केसरी मुनि श्री जोधराजजी महाराज सा

अध्ययनः—सिमित संस्कृत प्राकृत एव सम्पूर्ण आगमों का वाँचन ओर थोकड़ोंके ज्ञाता

कलावृति—शास्त्रीय व्याख्यान, लेखनकला, पात्ररंगाई आदि

युवाचार्य पद—वि. स. १९९३ जेष्ठ माह, लावासरदारगढ (मेवाड)

विद्यागुरुवर्यकी सेवा—२० वर्ष ५ माह, आश्विन शुक्ला पंचमी शुक्रवार कुंवारिया में स्वर्गवास

पदत्याग—वि सं २००५ मिगसर, माह जूनदा (राजस्थान)

विहारस्थल—मेवाड, मालवा, मारवाड, हाड़ोती, गुजरात, झालावाड, महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश, बम्बई, देहली, आगरा ग्वालियर, भोपाल, इन्दौर उज्जैन

हस्त दीक्षाएँ—नौ को दीक्षाएँ दी

पदवियों से विरक्त—मुनिपद के अलावा शास्त्रीयपद और लौकिक-पदवी का त्याग

चातुर्मास संख्या—नौ चौमासे पूज्यश्री के साथ (१२) बारह मेवाड़ केशरीमुनिश्री जोधराजजी म सा. के साथ, शेष २१ एव ४२ चातुर्मास -सर्वायु ५२ वर्ष ५ माह १५ दिन।

स्वर्गवास—वि. सं. २०२० जेष्ठ सुदी १४ गुरुवार सहाड़ा (राजस्थान)

शिष्यगणः—मुनिश्री हस्तीमलजी म पुष्कर मुनिजी, मुनिश्री कन्हैया-लालजी म ठाणा ३

जहाँ किये गये चातुर्मासीक गांव और सम्वत् की यादी

चा तु र्मा स

गाँव	संख्या	विक्रम संवत्
रामपुर (राज)	दो	वि सं ७९ + ८५"
देवगढ "	दो	" ८० × ८९"
पड़ासोली "	एक	९० "
थामला "	एक	९१ "
कुंवारिया "	तीन	८१ + ९८ × २००२ "
भाकोला "	एक	" ८२"
ऊँठाला "	दो	" ८३ + ८७
छोटी सादड़ी "	एक	" ८४"
मावली "	एक	८६"
सरदारगढ "	दो	" ८८ + ९२
देलवाड़ा ,	दो	" ७८ + ९३
लसणोर "	एक	" ९४"
सादड़ी (मारवाड़) "	एक	" ९५"
गोगुंदा "	एक	" ९६"
समवाड़ "	एक	" ९७"
माई (उदयपुर) "	तीन	" ९९" + २००१ + २००९

गाँव	संख्या	विक्रम संवत्
चाघपुरा ,,	तीन	,,२००० + २००५–२०१३
मसूदा ,,	एक	,, २००३"
रेलमगरा,,	एक	,, २००४"
रामपुरा (म प्र.)	दो	" २००६ + २०१०
उज्जैन ,, ,,	एक	२००७"
लश्कर ,, ,,	एक	२००८"
बम्बई चपोकली (१)	दो (१)बम्बई मलाड़	"२०११ + २०१२"
बनेड़िया (राज)	एक	२०१४"
राजकरेड़ा ,,	एक	२०१५:'
भीम ,,	एक	२०१६"
कनकपुर ,,	एक	२०१७"
पलानाकलां,,	एक	२०१८"
भादसोड़ा,,	एक	२०१९"
गाव २७	चातुर्मास ४२	

जन्म, संयम ओर स्वर्ग, इन तीनमें एक गुरुवार का योग मिला

श्री

दानवीर–दाताओं की सूचि

२५० श्री श्वेताम्बर स्था जैन संघ "राज करेड़ा" (राजस्थान)
१५ श्री श्वेताम्बर स्था जैन श्री संघ "पड़ासोली" ''
१२५ श्री श्वेताम्बर स्था जैन श्री संघ "रायपुरा" ''
१०१ श्री प्यारचन्दजी मिसरीलालजी संचेती "राजकरेड़ा" ''
१०१ श्री राजमलजी धनराजजी नौलखा "भैंटाली" ''
१०१ श्री भासीरामजी धनराजजी कोठारी "छर्रापुरस्तकर्मेहार" ''
अमदाबाद (गुज)
१०१ श्री कजोड़ीमलजी बोलियाकी सुपुत्री "टमूबाईजी "रायपुर" राज
१०१ श्री भैरूँलालजी तेजसिंहजी बुलिया "रायपुर" ''
१०१ श्री पन्नालालजी भंवरलालजी मड़ोत्रा "रायपुर" ''
१०१ श्री जोरावरमलजी धर्मचन्दजी डूंगरवाल 'राजकरेड़ा' ''
१०० श्री नानालालजी शंकरलालजी दूगड़ "फलानाकला" ''
७५ श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन श्री संघ "आमेसर ''
७१ श्री धनराजजी मोहनलालजी कोठारी "भट्टूण" ''
७० श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन संघ "शीवपुर" ''
५१ श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन संघ "कालादेह" ''
५१ श्री भूरालालजी उदयलालजी बावेल "भंटाली" ''
५१ श्री राजमलजी मेमीचन्दजी नौलखा '' ''
५१ श्री मौजीरामजी शान्तिलालजी मारू भीम ''

५१ श्री सोहनलालजी भंवरलालजी गुडलिया,, ,,
५१ श्री कन्हैयालालजी बाफना की धर्मपत्नि सोहनबाई "शम्भूगढ़",,
५१ श्री उदयलालजी जेठमलजी ओस्तवाल "भींटा" ,,
५१ श्री नाथूलालजी रोशनलालजी कछारा कुंवारिया ,,
५१ श्री चीमनलालजी रीखबचन्दजी जीरावला अमदाबाद (गुज)
५१ श्री स्वर्गीयश्रीमति रुपाबाई की पुण्यस्मृतिमें ,, ,,
५१ श्री भैरुलालजी वशीलालजी झगडावत डबोक ,,
५१ श्री दौलतरामजी चांदमलजी मारु शम्भूगढ़ ,,
५१ श्री बहोतलालजी के सुपुत्र भंवरलालजी अर्जुनलालजी
डालचन्दजी बडालमिया सगेसरा ,,
५१ श्री ख्यालीलालजी विजयसिंह दलाल नाई ,,
५१ श्री छगनलालजी इन्द्रमलजी मादरेचा काकरवा ,,
५१ श्री मिश्रीलालजी रमेशचन्द्र कौठारी वली (जसाखेड़ा)
५० वकील सा श्री चून्निलालजी भवरलालजी पोरवरणा (वलभनगर)
४६ श्री श्वेताम्बर स्था जैन श्री सघ "खेमली" ,,
३१ श्री कंवरलालजी शोभालालजी आँचलिया मौतीपुर ,,
३१ श्री चाँदमलजी माधुलालजी रांका भादसोड़ा ,,
३१ श्री गणेशलालजी अम्बालालजी सिंघवी गौराणा (राज)
३१ ,, जमनालालजी गहरीलालजी डागा रायपुर ,,
२५ ,, जवाहरमलजी रोशनलालजी गन्ना भीम ,,
२५ ,, वरधीचन्दजी गोकूलचन्दजी महता ,, ,,
२५ ,, कन्हैयालालजी सिंघवी महेला की पीपली ,,

२५ „ घासीरामजी देवीलालजी हींगड़ हाल मु० भरणोरा „
२५ „ मगनलालजी मुन्नालालजी लोढ़ा सिरधू „
२५ , प्रतापमलजी राममलजी बया "छींपाका आकोला „
२५ „ कन्हैयालालजी गणेशलालजी चौधरी कोल्यारी „
२१ „ मनोहरलालजी कोठारी नाई „
२१ „ नानालालजी डालचन्दजी ओस्तवाल मगरवाड़ „
२१ „ गहरीलालजी महताकी धर्मपत्नि सोहनबाई,
पंचतिथितपके उपलक्षमें, अमदाबाद
२१ „ कन्हैयालालजी चांदमलजी परमार पाँसा „
२१ „ मयन्तिलाल गोर्धनदास तुर्लिया मयककुमारनी ब्रह्म
खुशीमां अमदावाद
२१ , कजोड़ीमलजी मोहनलालजी तातेड़ गढ़बड़ (राज)
२१ „ सन्तोकचन्दजी प्यारचन्दजी सहलोत देवगढ़ „
२१ „ मोहनलालजी मदनमलजी संचेती राजकरेड़ा „
२१ , कजोड़ीमलजी मुन्नालालजी तातेड़ गढ़बड़ „
२० „ श्वेताम्बर स्था० जैन श्री संघ कोशल „
११ , चन्दनमलजी हीरालालजी भाड़ भीम ,
११ तेजपालजी फतहलालजी सींयार मावली „

इस ग्रन्थ के प्रकाशनमें उपरोक्त सज्जनोंने द्रव्य की सहायता देकर इस पुण्यकार्य में अपना हार्दिक सहयोग प्रकट किया है एतदर्थ इनका सधन्यवाद आभार प्रगट करता हूँ।

व्यवस्थापककी ओर से

स्व० पूज्य गुरुदेव श्री मांगीलालजी महाराज साहब का जीवन चरित्र आपके हाथों में है। यह चरित्र कैसा बना इसके निर्णय का भार आप पर है। पुस्तक के स्थाई महत्त्व को ध्यान में रखकर इस पुस्तक में अच्छे कागज और सुन्दर टाईपों का भी उपयोग किया हैं।

प्रस्तुत पुस्तक के लेखक पं० मुनि श्री हस्तीमलजी महाराज है। आपका जन्म वि सं १९७९ चैत्र शुक्ला तेरस को हुआ। पलाना कला (मेवाड़) ग्राम के निवासी श्रीमान् नानालालजी दुगड वीसा ओसवाल के आप पुत्र है। आपकी माता का नाम लहरबाई अपर नाम मोतीबाई है। गुरुदेव का सम्पर्क पाकर आपने सोलह वर्ष की अवस्था में वि सं १९९६ की माघ कृष्णा प्रतिपदा के दिन पलाना में दीक्षा अंगीकार की।

दीक्षा लेने के बाद गुरुदेवकी सेवामें रहकर काफी अनुभव प्राप्त किया। आपकी गुरुभक्ति अद्वितीय और असीम है। सामाजिक उत्थान और संगठन के लिऐ आप सतत प्रयत्न शील रहते हैं। साथ ही जैन धर्म का प्रचार, साहित्य सृजन, जैनेतरों को प्रबोध आदि प्रवृत्तियों की ओर सदा से आपश्रीका विशेष लक्ष्य रहा है। आपने स्वर्गीय पूज्य गुरुदेव की २४ वर्ष तक निष्ठापूर्वक सेवा की है। उस सेवाका ही यह प्रताप है कि आपकी समाज में अच्छी प्रतिष्ठा है। आपने अनेक प्रान्तों में विहार का जैन धर्मका अच्छा प्रचार

किया। आपके प्रिय गुरु भ्राता मुनि श्री कन्हैयालालजी म० एवं विनम्र शिष्य श्री पुष्कर मुनिजी महाराज भी अच्छे सेवाभावी और विद्या रसिक सन्त हैं।

इस ग्रन्थ के प्रकाशन में श्रीमान् प्यारचन्दजी सा संचेती जो कि चरित्रनायकजी के संसार पक्ष में काका के भाई लगते हैं उनका सहयोग अत्यन्त सराहनीय रहा साथ ही उन्नति पुस्तक भण्डार के मालिक श्रीमान् धनराजजी साहब युवक हृदय उत्साही एवं अनेक शुभ प्रवृत्तियों के समर्थक श्रीमान् रतनमल जी सा कोठारी इन सज्जनों के सौजन्य आग्रह और तनमन धन के सहयोग से इस ग्रन्थ का प्रकाशन हो सका है। तथा इस ग्रन्थ के प्रकाशन का श्रेय सहायता देनेवाले दानी महानुभावों को अधिक है जिनके सत् प्रयास से एवं धन के सदुपयोग से यह चरित्र प्रकाशित हो सका है। अतः इन सबका मैं अत्यन्त आभारी हूँ।

—हीरालाल कन्हैयालाल जैन ।

ज्ञान और वैराग्य से परिपूर्ण पुस्तके

मननपूर्वक अवश्य पढिये

रचयिता—पं० मेवाड़ी मुनि श्री चौथमलजी म० सा०

यशोधर चरित्र	३७	नये पैसे
विद्या विलास चरित्र	२५	,,
हंसवच्छ चरित्र	२५	,,
अमर चरित्र ऋषिदत्ता चरित्र	३७	,,
विक्रम-हरिश्चन्द्र	२५	,,
भीमसेण हरीसेन	३१	,,
प्रद्युम्न चरित्र	४४	,,
विपाक सूत्र रास	५०	,,
चन्द्रसेन लीला	३१	,,
चन्दनबाला चरित्र	१५	,,
नवरत्न किरणावली	५०	,,
अनमोल मणि मंजूषा	५०	,,
लीलापत झणकारा	२८	

प्राकथन

किसी भी राष्ट्र की महानिधियों में संतों के व्यक्तित्व और कृतित्व का विशिष्ट महत्त्व रहता आया है। वस्तुत राष्ट्रका वास्तविक उत्थान सतों की स्नेहसिक्त वाणी का ही परिणाम है। जनता के हृदय पर स्वभावत सन्तों की सयम शील वृत्ति सदैव घर किये रहती है। जिसके परिणामस्वरूप जनता को मानवता-मूलक सद्भावना के सुदृढ़ सूत्र में बाँधे रहते हैं। सतों का निश्छल व्यवहार, निरपेक्ष वाणी और उनकी सम्यकमूलक साधना जीवन की नैतिक अनमोल धरोहर है।

जैन-सस्कृति व्यकित मूलक न होकर गुणमूलक परंपरा के प्रति आस्थावान है। इसलिए बहुत प्राचीनकाल से ही जैन धर्मावलम्बियों में गुरुपद का स्थान सदा से ऊँचा और आदरणीय रहता आयाहै। समान राष्ट्र और धर्म का नैतिकता मूलक भार मुनियों के सुदृढ़ स्कन्धों पर रहता आया है। राजस्थान की लोकचेतना और क्रांतिकारी धर्म भावनाओं को प्रोत्साहन देने में शताब्दियों से जैनमुनियों ने जो योग दिया है वह आज भी अनुकरणीय है। राजस्थान की ही नहीं अपितु समस्त भारत की लोकसंस्कृति पर इन प्रबुद्ध चेतनाओं का आज भी अक्षुण्ण प्रभाव है। उनकी वाणी और सयमशील वृत्ति से जनता आज भी आस्थावान है।

गुरुदेव श्री मागीलालजी महाराज राजस्थान के ऐसे ही महान सन्तो में से एक थे जिनके व्यक्तित्व का गहरा प्रभाव न केवल मेवाड तक ही सीमित है अपितु सम्पूर्ण राजस्थान, मध्य-प्रदेश जैसे सुविस्तृत प्रदेशो में भी इनके प्रति श्रद्धानिष्ठ व्यक्तियों

का अभाव नहीं है। इनकी संयमशील वृत्ति, अनुभवमूलक सुमधुर वाणी और निष्कपटता आदि कुछ ऐसे गुण थे जिनमें से एक भी जीवन में साकार हो जाय तो मनुष्य उच्च मरातब पर पहुँच सकता है। भले ही मुनि श्री मांगीलालजी म० बहुत प्रसिद्ध मुनियों में न रहे हों पर उनमें जो साधुता को शोभित करने वाले महान गुण थे उनका अभाव भले ही आज न हो पर इनके समकक्ष बहुत कम व्यक्ति हैं। यह तो निःसंकोच स्वीकार करना ही पड़ेगा। सच बात तो यह है कि वे साधक थे। संयम उनकी आत्मा में रमा हुआ था। प्रशंसा और प्रसिद्धि को वे पौद्गलिक वस्तु मानते थे। आदर और अनादर के प्रति उनकी भावना समान थी। वे आत्मा के उपासक थे। सतत स्वाध्याय आत्मचिंतन और मनन उनके जीवन की मौलिक विशेषतायें थीं। ज्ञानरूप में साकार बहती हुई ज्ञानगंगा थे। जिधर भी गए, अध्ययन, मनन, एवं चिन्तन के सूखे और उजड़े हुए खेत हरे-भरे हो गये। मध्य प्रदेश उत्तर प्रदेश राजस्थान और विशेषतः मेवाड़प्रदेश के जन-जीवन में महा-मेघ के समान शत-शत धाराओं में बरस कर विभोर किया। अनेक स्थानों पर बलिप्रथा के रूप में प्रचलित पशु हत्या बन्द कराई, अन्धविश्वास और अज्ञानता के आधार पर फैले हुए सम्प्रदाय मूलभेदभाव वर्गीय रीति रिवाज का आपने हृदय से उन्मूलन किया। उनकी सरलताने अज्ञान-मूलक कई ग्रामों के झगड़ों को समेटा। समस्याओं का समाधान मिला। वर्षों की द्वेषाग्नि को मुक्ति मिली। संक्षेप में मिलाकर कहा जाय कि उनका सम्पूर्ण जीवन सम, दम और श्रम की त्रिवेणी पर आधारित था

यह कहना युक्ति संगत जान पड़ता है कि मनुष्य जिसकी उपासना करता आया है वह वैसा ही बन जाता है। जैन परम्परा में वीतरागत्व का ही महत्त्व है। इसीलिये श्रमण-संस्कृति त्याग प्रधान रही है। निवृत्ति मूलक प्रवृत्ति

उसका आदर्श है । सयम उसका प्रशस्त पथ है। तात्पर्य यह है कि व्यक्ति उत्थान पतन के लिए स्वय दोषीहै । उनके विकास अवरोध में कोई साधक बाधक नहीं किन्तु यह निश्चित है कि महापुरुषों का गुणानुवाद जीवन को सुगधित बनाता है । उनके जीवन के एक-एक प्रस ग से मानव को बडी भारी प्रेरणा मिलती है। इसलिए मानव-जीवन के विकास में सन्तों के जीवन चरित्र का सदा से ऊंचा स्थान रहता आया है । सन्तों का जीवन मानव-जीवन की एक ऐसी प्रयोगशाला है जिसके परीक्षण का इतिहास अतीत की सीमा से परे है। इन्हीं महान्, प्रेरणाओ से सश्रद्धा उत्प्रेरित होकर गुरुदेव के जीवन के किंचित् प्रसगों का आलेखन इस छोटी सी पुस्तिका में किया है । आशा है पाठकगण इसका समुचित आदर करेंगे ।

शुभेच्छुक { ख्यालीलाल / गहरीलाल } जैन "उदयपुर"

पूज्य श्री एकलिंगदासजी म. की सम्प्रदाय का संक्षिप्त परिचय

भगवान महावीर के निर्माण के पश्चात् जैसे-जैसे समय व्यतीत होता गया वैसे-वैसे साधु परम्परा में भी बहुत कुछ मतभेद होता गया । इसी मतभेद के कारण उनके निर्वाण के ६८० वर्ष बाद अनेक गच्छ स्थापित हो गये। गच्छों की अनेकता के कारण उनकी परम्पराएँ भी विविध होने से अनेक प्रकार की हो गई हैं। गच्छों का विविध जाल फैल जाने पर भी उनमें प्रकाण्ड दार्शनिक सिद्धान्तवेत्ता प्रभावशाली और विविध विषयों के ज्ञाता अनेक आचार्य हो गये हैं । जिन्होंने अपनी महत्वपूर्ण कृतियों से जैन वाङ्मय की समृद्धि में स स्मरणीय योगदान दिया है । भगवान महावीर द्वारा प्ररूपित तत्त्व ज्ञान तथा आचार शास्त्र ऐसी ठोस भूमि पर स्थित था कि उसे

लेकर इतने वर्षों बाद भी कोई खास उल्लेखनीय मत भेद नहीं हुआ। जैसा कि वैदिक धराम या ब्राह्मण परम्परा में दृष्टि गोचर होता है या बौद्ध परम्परा में भी दिखाई देता है। परन्तु निष्प्राण बाह्य क्रियाकाण्डों को ही धर्म मानकर समय-समय पर अनेक गच्छ उत्पन्न होते गये। क्रियाकाण्ड धर्म के अंग बन जाने से धीरे धीरे सघ में शिथिलता आने लगी। फल स्वरूप वह अनेक विकृतियों का आगार बन गया। कठोर संयम का पालन करने वाले साधु मात्र चैत्यवासी हो गये। यहाँ तक कि यह बात अपनी पराकाष्ठा तक आ पहुँचा। जो साधु समाज पहले जंगल, अरण्य वन, उद्यान या धर्मशाला आदि जहाँ कहीं स्थान मिल जाता वहाँ सुखपूर्ण निवास करता था। वह अब मठों की तरह उपाश्रय बनाकर रहने लगा। साधु समाज यति रूप में परिवर्तित हो गया। यह यति समाज अनेक प्रकार के आरंभ का सेवन करने लगा। बहुत से यति गृहस्थों की तरह आवास बसाकर रहने लगे। भगवान का लोकाभ्युदय कारी पवित्र उपदेश विस्मृत सा कर दिया गया था। धर्म का शुद्ध स्वरूप सर्वथा लुप्त सा हो गया था।

ऐसे समय एक महान क्रान्तिकारी श्रेष्ठ पुरुष का जन्म हुआ। यह विलक्षण पुरुष श्री लोंकाशाह के नाम से सारे स्थानकवासी समाज में विख्यात है। उनका जन्म गुजरात प्रान्त में स्थित सिरोही राज्यान्तर्गत 'अरहटवाड़ा' नामक ग्राम में विक्रमसंवत् १४८२ की कार्तिक पूर्णिमा को हुआ। उनके पिता का नाम 'हेमाभाई' एवं माता का नाम 'गंगाबाई' था। श्रीमान लोंकाशाह अपने समय में धार्मिक संस्कारों से संपन्न एक असाधारण पुरुष थे। आपकी बुद्धि अत्यन्त निर्मल तथा ग्रहण शक्ति अद्भुत थी। अक्षर भी मोती की तरह सुन्दर लिखते थे। कार्यकुशलता के साथ अपनी अद्भुत सूझ के कारण

राजदरबार में भी उनकी बहुत प्रतिष्ठा थी। अपने जीवन को धर्ममय बनाने के लिए उन्होंने उच्च धार्मिक ज्ञान प्राप्त किया। अक्षर सुन्दर होने से उस समय के यति समुदाय ने इन्हें जीर्ण आगमों की प्रतिलिपि करने का कार्य सौंपा। जैसे-जैसे ये प्रतिलिपि करते गये वैसे-वैसे वे आगमों के अर्थ की गहराई में उतरने लगे। इस परिशीलन से उन्होंने देखा कि आगम प्रतिपादित साधुओं के आचार तथा वर्तमान यति समाज के आचार में वही समानता कहीं है। दोनों में आकाश पाताल का अन्तर है। यह विषमता उन्हें बहुत खटकने लगी। फिर तो वे अपनी बुलंद आवाज से शास्त्रोक्त आचार का प्रतिपादन करने लगे। उनके शुद्ध आचार का दर्शन कर धीरे-धीरे उनके अनुयायियों की संख्या भी बढने लगी।

यद्यपि 'लोंकाशाह' गृहस्थ थे फिर भी शासन की अभिवृद्धि करने में रत रहते थे। आपके प्रेरणादायी पवित्र उपदेश से प्रेरित होकर एक साथ ४५ मुमुक्षु साधकों ने ज्ञानऋषि के समीप सं १५३१ में जैन दीक्षा ग्रहण की। दीक्षा अंगीकार करने के बाद उन महापुरुषों ने अपने उपकारी पुरुष के प्रति कृतज्ञता प्रगट करने के लिए अपने गच्छ का नाम 'लोंकागच्छ' रखा। संवत् १५४१ में धर्मप्राण लोंकाशाह का स्वर्गवास हो गया।

इन ४५ महापुरुषों द्वारा आरब्ध लोंकागच्छ उत्तरोत्तर प्रगतिपथ की ओर प्रयाण करने लगा। इनके शुद्ध आचार और विचार से प्रभावित होकर अनुयायी वर्ग में केवल श्रावक श्राविकाओं की संख्या ही नहीं बढी वरन् साधुओं की संख्या भी उत्तरोत्तर बढने लगी। देखते-देखते ७०-७५ वर्ष के अल्पकाल में यह संख्या ११०० तक जा पहुँची।

इधर नवदीक्षित साधुओं के शुद्ध आचार से लोंकागच्छ

की जितनी प्रबल वेग से उन्नति हुई उतने ही वेग से कालान्तर में पुनः साधुओं के शिथिल आचार के कारण उनमें ह्रास के चिह्न दृष्टिगोचर होने लगे । सबसे अधिक फूट ने इस ह्रास में अपना योगदान दिया ।

लोंकागच्छ के पट्टपर श्री भानजी ऋषिजी म. दूसरे श्री रूपजी ऋषि एवं जीवाजी म. थे। श्री जीवाजी महाराज के तीन शिष्य थे। एक श्री कुंवरजी, श्री पृथ्वीचन्द्रसिंहजी, एवं श्री मल्लजी म. सा०। श्री जीवाजी महाराज के स्वर्गवास के बाद यह सम्प्रदाय तीन विभागों में विभक्त हो गया। १-गुजराती लोंकागच्छ, २ नागोरी लोंकागच्छ और ३-उत्तरार्द्ध लोंकागच्छ।

लोंकागच्छ के बासठवें पट्ट पर यति वज्रांगजी हुए थे। वे शास्त्र के गहन अभ्यासी थे। लवजी ऋषि ने इन्हें प्रव्रज्या-ग्रहण कर क्रियोद्धार किया था। सोलहवीं सदी के उत्तरार्द्ध एवं सत्रहवीं सदी में पाँच महापुरुष विशेष प्रभावक हुए, जिन्होंने लोंकाशाह द्वारा प्रज्वलित धर्मक्रान्ति को पुनः क्रान्तिमय बनाया और उनके सिद्धान्त को एक नया मोड़ दिया। यदि उसी नये मोड़ को ही वर्तमान स्थानकवासी सम्प्रदाय का प्रारम्भकाल माना जाय तो अधिक युक्ति संगत रहेगा। वे पाँच महापुरुष थे
१-पूज्य श्री जीवराजजी म. २-पूज्य श्री धर्मसिंहजी म. सा.
३-पूज्य श्री लवजी ऋषिजी म०सा ४-पूज्य श्री हरजी ऋषिजी म. सा.

पूज्य श्री धर्मदासजी म० सा० अपने युग के एक महान् उग्र विचारक एवं क्रियाकांडी थे। ज्ञान और क्रिया आचार एवं विचार दोनों की ही आपने उत्कट, कठोर और प्रखर साधना की। शिथिलाचार की घन-घटाएँ छिन्न भिन्न कर शुद्धाचार का सूर्य पुनः गगनांगन में अपने पूर्ण तेज से चमकने

लगा। आपने दूर-दूर तक की विहार यात्रा करके शुद्ध धर्म और शुद्धाचार का व्यापक प्रचार एवं प्रसार किया।

धर्म वीर 'लोकाशाह' द्वारा प्रेरणा प्राप्त स्थानकवासी परम्परा के क्रियोद्धारक मुनिवरों के सम्बन्ध में प्रसंगवश यहाँ एक स्पष्टीकरण कर देना आवश्यक है। इन महापुरुषों ने कोई नया धर्म खड़ा नहीं किया, और न उनकी ओर से ऐसा कोई दावा ही कभी किया गया है। पुरातन परम्परा में हीन आचार का उचित सशोधन करना, शिथिल क्रिया को कठोर तथा प्रखर बनाना, समाज में विशुद्धाचार की नये सिरे से स्फूर्ति चेतना और जागृति पैदा करना ही उनका एक मात्र ध्येय था। साधु-जीवन में जो एक प्रकार की जड़ता और आडम्बर प्रियता उत्पन्न हो गई थी, उन्होंने उसी को दूर का पथ कर शुद्ध साधु चर्या प्रशस्त किया। इसी को क्रियोद्धार कहा जाता है। क्रियोद्धार की इस आत्मालक्षी विशुद्ध प्रक्रिया में न किसी के प्रति द्वेष था और न किसी के प्रति मनोमालिन्य था। न किसी के प्रति पक्षपात की भावना थी और न किसी वर्गविशेष के प्रति अहित-कामना ही। यह तो केवल भगवान महावीर के विशुद्ध धर्म की एक-मात्र पुनर्जागृति थी।

पूज्यश्री धर्मदासजी म० सा० के पाचवें पट्टधर शिष्य छोटे पृथ्वीराजजी म० सा० हुए। मेवाड़ सप्रदाय की शाखा उन्हीं से सबन्ध रखती है। आचार्य श्री छोटे पृथ्वीराजजी महाराज के पट्टधर पूज्य दुर्गादासजी म० सा० हुए। उनके पट्टधर पूज्य गुरुदेव श्री हरिरामजी महाराज सा० हुए। उनके पाट पर पूज्य श्री गगारामजी महाराज बिराजे एव उनके पट्ट पर पूज्यश्री नारायनदासजी महाराज सा० हुए। उनके पट्ट पर पूज्य श्री पूरणमलजी महाराज हुए। उनके पट्ट पर पूज्य तपस्वी जी श्री रोड़ीदासजी महाराज हुए।

पूज्य रोड़ीदासजी महाराज का तप बड़ा कठोर था। एक वर्ष में दो मास खमन एवं प्रतिमास दो अट्ठाई तप करते थे। बेले-बेले की तपस्या वे निरन्तर किया करते थे। उन्होंने ऐसे कई अभिग्रह किये थे किन्तु दो अभिग्रह तो बड़े ही विचित्र एवं कठोर थे। उनके अभिग्रह में हाथी आहार दे तो आहार करना, एवं दूसरे अभिग्रह में सांड (बैल) आहार दे तो भोजन करना, ऐसा ले रखा था। ये दोनों अभिग्रह उदयपुर में सफल हुए। मेवाड़ में सातसौ गाँवों के लोगों को धर्मशील बनाया था। ये प्रखर तपस्वी एवं महान प्रभावक सन्त थे। इनके पट्ट पर नृसिंहदासजी महाराज हुए। आप आगम शास्त्रों के मर्मज्ञ विद्वान थे। आपकी आगम विषयक धारणाएँ तत्कालीन साधु संघ में सर्वाधिक प्रामाणिक एवं प्रभावित मानी जाती थी। आपके पट्ट पर पूज्य श्री मानमलजी म सा विराजे। आपका जन्म देवगढ़ (मदारिया) में हुआ। पिता का नाम तिलोकचन्दजी एवं माता का नाम धन्नाबाई था। आपका जन्म सं १८६१ में हुआ। नौ वर्ष की अवस्था में अपने दीक्षा ग्रहण की। आप प्रखर शास्त्रज्ञ एवं उत्कृष्ट आचार पालने वाले सन्त थे। आपकी वचनसिद्धि के चमत्कार की गाथाएँ मेवाड़प्रान्त में काफी प्रचलित हैं। उदयपुर के महाराणा सज्जनसिंह आपके परम भक्त थे। आपका संवत् १९४२ कार्तिक सुदी पंचमी को भाणहारे में स्वर्गवास हुआ।

आपके प्रधान शिष्य कविवर पंडित मुनि श्री रिखबचन्दजी महाराज हुए। एवं आपके हाथ दीक्षित क्रियोद्धारक मुनि श्री वेनीचन्दजी महाराज हुए। इनके पट्टधर शिष्य थे हमारे चरित्रनायक श्री मांगीलालजी म० सा० के गुरु पूज्य श्री एक सिंगदासजी म० सा०।

पूज्य एकलिंगदासजी म० सा० पूज्य श्री धर्मदासजी म० सा के बारहवें पाट पर आचार्य पद पर विराजमान हुए।

आप मेवाड में परमत्यागी और तपस्वी मुनिराज थे। संवत् १६१७ में आपका जन्म औशवाल वंश मे हुआ। आपके पिता का नाम शिवलालजी एवं माता का नाम सुरताबाई था। आप संगेसरा (मेवाड़) के रहनेवाले थे। तीस वर्षकी युवावस्था में वि० स० १६४७ में आकोला (मेवाड़) में गुरुवर्य श्री वेनीचन्द जी महाराज के समीप प्रव्रज्या ग्रहण की। आपने अल्प काल में ही शास्त्रों का गहन अध्ययन कर लिया था। आपकी तेजस्विता, वाक्यपटुता और क्रियाशीलता को देखकर मेवाड़ सम्प्रदाय के समस्त साधु साध्वियों ने सर्वसम्मति से राशमी ग्राम में वि. स. १६६८ में आपको आचार्य पद से विभूषित किया। आप अपने समय के एक अच्छे प्रभावशाली सन्त थे। आपने अपने जीवनकाल में अनेक परोपकार के काम किए, उन सब-का उल्लेख स्थानाभाव के कारण संभव नहीं है। किन्तु उनके जीवन के एक महत्त्वपूर्ण प्रसंग का उल्लेख उपेक्षणीय नहीं किया जा सकता।

बलि-बन्ध का पट्टा

राजकरेड़ा-कालाभेरूँजी के सामने प्रतिवर्ष हजारों पशुओं की बलि होती थी। गुरुदेव ने अपने उपदेश द्वारा उसे सदा के लिये बन्द कर दिया। राजकरेड़ा के राजा साहब ने अमरपट्टा लिख-कर पूज्य श्री को भेंट किया। अमरपट्टे की प्रतिलिपि इस प्रकार है।

॥ श्री गोपालजी ॥ ॥ श्री रामजी ॥

पट्टा नंबर ३० सावत

सोध श्री राजाबहादुर श्री अमरसिंहजी बचना हेतु कस्बा राज करेड़ा समस्त महाजना का पंचा कसै अपरंच राज ओर पंच मिलकर भैरुजी जाकर पाति मागी के अठे बकरा व पाड़ा बलिदान होवे जीरे बजाये अमरिया कोधा जावेगा। बोहरी पाती वगमें- सो भैरुजी ने पाती दी दी, के मंजूर है। ई वास्ते मारी तरफ से

था बात मंजूर होकर बजाए जीव, बलिदान के अमरियाँ कीरा जावेगा। ओर देवमराज और प च मिलकर धरमशाला भैरुंजी के बनावणी को थी, सो धरमशाला होने पर ई खातरी परासति कायम कर दी जावेगा। सारू अमुमन लोगों को भी खबास रेवेगा के अठे जीव हिंसा नहीं होवे है। और जीव हि सा न हो वास्ते ओपा के भी हुकुम दे दी दो है। इवास्ते माने आ खातरी लीख देवाणी है। १९७४ कुती आसरा सुदी। १।

द केशरीमल कोठारी रावला हुकुम सु खातरी लीख दी दी।

इस प्रकार आपके उपदेश के प्रभाव से अनेक धार्मिक कार्य हुए। आपका वि सं १९८० में कँठारा (बल्लभनगर) ग्राम म अनशन पूर्वक स्वर्गवास हो गया।

आपके अनेक शिष्य प्रशिष्य थे जिनमें मेवाड़केशरी जोधराजजी म० सा० प्रखर वक्ता एवं शास्त्रज्ञ सन्त थे। आप शांति के धात्रर्व-शील थे। आपके संयमी जीवन में भी क्षात्रवृत्ति की झलक मिलती थी। आप वगड़ियाँ गाँव के निवासी मोतीसिंह जी के पुत्र थे। आपकी माता का नाम चम्पाबाई था। आपने वि सं १९२६ में दीक्षा ग्रहण की थी। आप सम्प्रदाय में अग्रगण्य थे। हमारे चरित्र नायक जी के विद्यागुरु एवं अच्छे मार्गदर्शक थे। चरित्रनायक जी के आप बड़े गुरु भ्राता होते थे। आपने ४२ वर्ष तक संयम की आराधना कर वि सं १९६८ में कुँवारियाँ गाँव में स्वर्गवासी हो गये। पूज्य एकलिंग दासजी म० सा० के इकट्ठे शिष्य मांगीलालजी म सा की विज्यजीवन-पुस्तिका पाठकों के हाथ में है।

राजस्थान सांस्कृतिक दृष्टि से एक महान प्रान्त रहा है। भारतीय सांस्कृतिक और सभ्यता के मुख को उज्ज्वल करने वाली प्रचुर विभूतियों से यह भूखड सदैव परिपूर्ण रहा है। यहाँ की समाज-मूलक आध्यात्मिक क्रान्तियों ने समय-समय पर देशव्यापक जनमानस को प्रभावित किया है। सन्तों की समन्वयात्मक अन्तर्मुखी साधना से राष्ट्र का नैतिक स्तर समुन्नत रहा है। उनके आदर्श, उपदेश और सयम-प्रवाह ने जो उत्कर्ष स्थापित किया, उससे शताब्दियों तक मानवता अनुप्राणित होती रहेगी। सन्तों का औपदेशिक साहित्य आज प्राचीन होकर भी नव्य और भावनाओं से परिपूरित है। समीचीन तथ्यों का नूतन मूल्यांकन भावी पीढ़ी को प्रशान्त बना सकता है। राजस्थान की भूमि की विशेषता है कि उसने एक ओर अजेय योद्धाओं को जन्म दिया तो दूसरी ओर ऐसे सन्त भी अवतरित हुए जिनकी सयमिक गरिमा आज भी स्वर्णिम पथ का सफल प्रदर्शन करने में सक्षम है, जिनकी तपश्चर्या की ध्वनि मुमुक्षु साधक को कर्णगोचर हो रही है। उनकी प्रकाश-किरणे और चिन्मय-चेतना ऐसा स्फुल्लिंग जो सहस्त्राब्दी तक अमरत्व को लिये हुए है।

राजस्थान का एक भाग-मेदपाट-मेवाड़ के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें उदयपुर राज्य का भी समावेश होता था। इसका स्वर्णिम अतीत अत्यन्त गौरवास्पद रहा है। वीरों की कीर्तिगाथा से यहाँ की भूमि परिप्लावित होती रही है। नारी जाति का उच्चतम आदर्श यहाँ की एक ऐसी विशेषता थी जो अन्यत्र दुष्प्राप्य है। मेवाड़ का इतिहास वीरों की भव्य परम्परा का प्रकाशपुंज है जिनकी आभाने अन्तर्मुखी जीवन को भी प्रकाशित किया है। यह विना किसी संकोच के कहा जा सकता है कि मेवाड की सस्कृति के निर्माण और विकास में जैनों का योग सबसे अधिक और

उल्लेखनीय रहा है। प्राचीन इतिहास इस बातका साक्षी है कि एक समय था जब कि सम्पूर्ण पश्चिमी भारत को मेवाड़वासी जैनों ने ही संस्कृति के एक सुदृढ़ सूत्र में बाँध रक्खा था। यहाँ का जनजीवन आज भी जैन संस्कृति के मूल्यवान तत्त्व से प्रभावित है। परम्परावर्ती मुनिसमाज के सततविहार ने और भी जन-हृदय को संस्कृति की ज्योति से प्रकाशित किया। उग्रविहारी जैनमुनियों का सम्पर्क झोपड़ों में रहनेवाले मनुष्यों से लगाकर राजमहलों में निवास करने वाले शासक वर्ग तक व्यापक था। उनकी साधनापवित्र वाणी सभी को समानरूप से मार्ग दर्शन कराती थी। उनका ओज और आध्यात्मिक बल इतना अनुकरणीय था कि अहिंसा का आलोक स्वतः स्फुरित हुआ करता था। मेवाड़, मेवाड़ ही क्यों ? सम्पूर्ण भारत को ही ले जहाँ भी जैन मुनियों का सतत विहार होता रहा है वहाँ अहिंसा के मौलिक तत्त्व फैले हैं। स्वभावतः जन हृदय में सुकुमार भावनाओं ने घर बनाया है। सौम्य, समत्व और नैतिकता ने अपनी निष्ठा द्वारा धर्म को आत्मा का वास्तविक अंग मान लिया है। इन पंक्तियों के लेखक का विनम्र अनुभव रहा है कि जब-जब देश का नैतिक धरातल गिरा है और अकर्मण्यता का प्रभाव बढ़ा है तब-तब जैन सन्तों ने अपनी अनुभवमयी वाणी से देश को ऊपर उठाया है और नैतिक चरित्र की सुस्थिर आत्मसंयम का पथ प्रशस्त किया है। यह उनके संयममय जीवन का ही प्रबल प्रताप है। जैन संस्कृति का मेवाड़ पर गहरा प्रभाव पड़ा है किन्तु उसका सही मूल्यांकन अभी शेष है। पर इतना तो निस्संकोच कहा ही जा सकता है कि यहाँ की सन्त परम्परा ने इस वीर-भूमि को सर्वाधिक प्रभावित किया है।

आगामी पंक्तियों में एक ऐसे ही महर्षी सन्त का स्वल्प परिचय कराया जा रहा है जिसने मेवाड़ की पुण्यभूमि को

अपने जन्म से पवित्र कर भारतीय जनमानस को आध्यात्मिक चेतना से परिप्लावित किया। वे है युवाचार्य श्री मांगीलालजी महाराज सा०। यद्यपि महापुरुषो का जीवन-काव्य, व्यापक-सत्य से इस प्रकार अनुप्राणित होता है कि उसकी गरिमा को शब्दों की सीमा मे नहीं बाँधा जा सकता, तथापि गुरुभक्ति वश यह प्रयास किया जा रहा है, ताकि उनके सुरम्य जीवन के अनुभवो से हम लाभान्वित हो सकें, प्रेरणा लेकर आत्मकल्याण का मार्ग प्रशस्त बना सकें। उनके जीवनका एक पवित्र क्षण भी यदि हमारे जीवन में साकार हो जाय तो हम अपने को धन्य मानेगे। इसी महती भावना से उत्प्रेरित होकर गुरुगुण सकीर्तन का यह प्राप्त अवसर मैं हाथ से नहीं जाने देना चाहता। महापुरुषों के गुणस्तवन से आत्मा निर्मल-पथ-गामिनी बनती है। आत्मा में गुणों का प्रकाश फैलता है, यह एक सनातन सत्य है।

जन्मस्थान :—

रत्नगर्भा मेदपाट-मेवाड़ की भूमि में प्रकृति सदैव अठ खेलियाँ करती रही है। यहाँ के गिरि-कन्दराओं मे आत्मस्थ सौन्दर्य को उद्बुद्ध करनेवाली शक्ति और कला के उपादान विद्यमान हैं। इसलिए प्रकृति के गोद में पलनेवाली सस्कृति की अजस्र धारा का प्रवाह निरन्तर बहता रहता है। उसके कण-कण मे केवल भौतिक शक्ति का ही स्रोत नहीं बहता, अपितु आध्यात्मिक शक्ति का प्रवाह भी परिलक्षित होता है। एक ओर मेवाड़ वीर-भूमि है तो दूसरी ओर त्यागभूमि भी है। देश की रक्षा के लिए यहाँ के वीरों ने अपने आपको होम दिया। इसी प्रकार मानवता के नाम पर पनपने वाली अमानवीय वृत्ति के विरुद्ध झूंझने वाले भी इसी मिट्टी में उत्पन्न हुए जिनकी साधना आज भी हमे मार्गदर्शन कराती है। यद्यपि मेवाड़ की सन्त परम्परा के स्वर्णिम अतीत पर जितना चाहिए

उतना विचार नहीं किया गया है तथापि बिना झिझक के यह कहा जा सकता है कि यहाँ की वास्तविक गरिमा सन्त जीवन में ही प्रस्फुटित हुई है।

महापुरुषों की जन्मभूमि भी पुण्यरजको लिये हुए रहती है। भारतरत्न महामुनि श्री मांगीलालजी महाराज का जन्मस्थान भीलवाड़ा जिलान्तर्गत राजा जी का करेड़ा है। नगर के साथ राजाजी शब्द का प्रयोग विशेष महत्त्व का परिचायक है। कारण कि इस नाम का एक और नगर भी मेवाड़ में ही विद्यमान है, जिसे 'गोपालसागर' के नाम से संबोधित किया जाता है। विवक्षित राजाजी का करेड़ा अपना विगत गौरव आज भी सुरक्षित रखे हुए है। यहाँ के शासक देवगढ़–महाराणावाले जसवन्तसिंह के पुत्र रावत गोपालदास के वंशज थे, जिनको जयपुर शासन की ओर से राजा बहादुर की सम्मानित उपाधि प्राप्त थी। चरितनायकजी के समकालीन करेड़ा के राजा अमरसिंहजी का अपने इलाके पर बड़ा दबदबा था। उनकी धाक से किसी भी डाकुओं के दल की उनके राज्य पर धाका डालने की हिम्मत नहीं होती थी। वे प्रजाको पुत्रवत् समझते थे और अपने इलाके को सदा समृद्ध बनाने में लगे रहते थे। चरित्र नायकजी के काका सा गणेशलालजी ओरगालाल जी का इनके साथ घनिष्ठ सम्बन्ध था। आर्थिक लेन-देन के कारण राजा साहब इनकी बात का बड़ा सम्मान रखते थे। करेड़ा यद्यपि आज अपनी आर्थिक दशा के कारण बहुत विख्यात नगर तो नहीं रहा पर जैन संस्कृति की दृष्टि से तो उसका अपना महत्त्व आज भी यथावत् है। यहाँ ओसवालों की अच्छी संख्या है। मुनियों के चातुर्मासादि होते रहते हैं। लोगोंमें धर्मध्यान की भावना प्रचुर मात्रा में पाई जाती है।

करेड़ा का संचेती वंश अपनी कीर्तिमयी गौरव गाथा

के कारण उस जिले में प्रसिद्ध रहा है। इसी वंशमें श्रीमान् गम्भीरमलजी उत्पन्न हुए जो आर्थिक दृष्टि से तो अधिक संपन्न नहीं थे, पर धार्मिक और नैतिकता के कारण उनकी प्रतिष्ठा उच्च शिखर पर थी। सचमुच मानव का मूल्य केवल अर्थमूलक ही नहीं होता, उनकी प्रतिष्ठा के आधार होते हैं — उनके जीवन के नैतिक और निर्मल गुण। वे ही तो आदर्श की स्थापना कर भव्य परंपरा का निर्माण कर सकते हैं। संचेती-कुलभूषण गम्भीरमलजी का स्वभाव अत्यन्त कोमल और नम्र था। सरलता की तो वे साक्षात् मूर्ति ही थे। कहना चाहिए जैन जीवन ही उनके जीवन का आधार था। अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए दूसरों का उत्पीड़न उनके लिए असह्य था। उनका अपना व्यवसाय था, पर क्या मजाल कि उसमें भी किसीका शोषण हो जाय। न्याय पूर्वक उपार्जित वित्त ही उनके लिए ग्राह्य था। उनका यह सौभाग्य था कि उनकी धर्मपत्नी श्री मगनबाई भी परम विवेकवती सन्नारी थीं। पति की सेवा ही उनके जीवन का आदर्श था। सामाजिक मर्यादा पारिवारिक शील-शिष्टता और लोक लाज का पूरा ख्याल रखती थी।

पति और पत्नी का पारस्परिक सद्भाव ही कुटुम्ब और समाज में सुख और शान्ति का संचार कर सकता है। जिस परिवार में यह सुख नहीं है, वह, समाज में घोर अशान्ति पैदा करता है। यहाँ तक की पड़ोस के परिवारों की शान्ति भी खतरे में पड़ जाती है। और कलह और कल्याण में छत्तीस का नाता है। कलह का कुफल सन्तानों को भी भोगना पड़ता है। श्रीमान गम्भीरमलजी एवं उनकी धर्मपत्नी मगनबाई अपने परस्पर के सद्भाव पूर्ण पारिवारिक जीवन से अत्यन्त संतुष्ट थे। दोनों का जीवन सन्त समागम और धर्म-

ध्यान में व्यतीत हो रहा था। इस आदर्श जीवन में कमी थी तो केवल यही कि इनके कोई सन्तान नहीं थी।

नारी जीवन की महती आकांक्षा रहती है पुत्र की। कुलरक्षा के लिए कुलदीपक अपेक्षित ही है। श्री मगनबाई के मन में यह चिन्ता सदैव रहा करती थी। पुरुषोत्तम सं वि० स १९६७ पौष कृष्णा अमावस्या गुरुवार को संपन्ना मगनबाई की रत्नकुक्षी से एक बालक अवतरित हुआ। माता-पिता की प्रसन्नता का पार नहीं था। विस्तृत परिवार एवं स्नेही गण भी इससे अपार हर्ष हुआ। माता पिता ने पुत्र जन्म की खुशी में उस समय की स्थिति और प्रथा के अनुसार जन्म-महोत्सव किया। स्वजन सम्बन्धीजनों को प्रीतिभोजन आदि से सम्मानित किया और बालक की दीर्घायु के लिए वृद्धजनों के आशीर्वचनों का सनम्र स्वागत किया। प्रसूति-स्नान के बाद इस होनहार बालक का नामकरण-संस्कार निष्पन्न हुआ। जिसमें सर्वसम्मति से बालक का नाम 'मांगीलाल' रखा गया। आयु का बहुत सा भागव्यतीत करने पर जीवन में पहली बार ही मांगीलाल जैसे शिशु-रत्न को पाकर उसे आदर्श दम्पति श्री गम्भीरमलजी एवं उनकी पत्नी मगनबाई को कितना हर्ष हुआ होगा इसका माप तो थोड़ी कर पाये होंगे। हाँ, यह तो निस्सन्देह है कि करेड़ा ग्राँव की जिस भूमि को बालक मांगीलाल के चरणकमलों ने चिन्हित किया वह भूमि आज आर्य संस्कृति की एक विशेष परम्परा के लिए पवित्र तीर्थ स्थान जितना ही महत्व रखती है।

यह एक दार्शनिक सिद्धान्त है कि यह जीवात्मा अनन्त शक्तियों का भण्डार है। अनन्त गुण सम्पदाओं का आकर है। परन्तु इस सत्तागत शक्तियों या गुणों का उसमें कब और कैसे विकास होगा ? कौन जीव किस समय कहाँ उत्पन्न होकर कैसे

विकास करेगा ? यह सब तो भविष्य के गर्भ मे निहित है। इसका प्रत्यक्ष अनुभव तो समय आने पर ही होता है। जब-कि वह व्यक्त दशा को प्राप्त करे। इससे पूर्व तो उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। कौन जानता था कि 'राजकरेड़ा' नामके गाँव में आकर बसे हुए एक साधारण ओसवाल परि-वार में जन्म लेने वाला 'भांगीलाल' नामका यह बालक भविष्य में श्रमण-सस्कृति की एक विशिष्ट परम्परा के युवाचार्य के रूप में विश्व-विश्रुत होगा। यह किसे खबर थी कि मगनबाई जैसी ग्रामीण माता ने जिस बालक को जन्म दिया है भविष्य में वह उसी की गुणगरिमा के प्रभाव से वर्तमान युग में वैसी ही ख्याति प्राप्त करेगी जैसी कि अतीत युग में स्वनाम धन्य त्याग-रत्न पुत्रों को जन्म देने वाली माताओं ने प्राप्त की है।

माता पिता अपनी एक मात्र और चिर प्रतीक्षित सन्तान होने से इसे बड़े लाड़-प्यार से रखने लगे। साथ ही उनके समस्त परिवार के वे एक ही आशा-स्तभ थे।

मानवजीवन अनेक प्रकार की विषम परिस्थितियों का केन्द्र है। इसमें अनेक तरह के उतार चढाव दृष्टिगोचर होते ही रहते हैं। जीवनयात्रा में इष्ट वियोग और अनिष्ट सयोग यह जीव के स्वोपार्जित शुभाशुभ कर्मों के ही परिणाम हैं। इसी नियम के अनुसार यह मानव सुख-दु ख का अनुभव करते हुए अपनी भव-स्थिति को पूरा करता है। श्रीमान् 'गम्भीरमलजी' की आशालता अभिपल्लवित भी न होने पाई थी कि कराल-काल (मृत्यु) की भयकर अग्नि में वह भस्म हो गई। जब भागीलाल पाँच वर्ष के भी नहीं हुए थे। तभी इनकी मृत्यु हो गई। इन्हें अपने प्रिय पुत्र की साहस पूर्ण बालचर्या में

बीज रूप से रही हुई, शुभ सन्तति के भावी विकास को देखने का सुनीत अवसर नहीं मिल सका । पिता की मृत्यु से बालक मांगीलाल एवं उनकी मातुश्री मगनबाई पर वज्र टूट पड़ा । अब इन्हें चारों ओर अन्धकार ही अन्धकार दृष्टिगोचर होने लगा । नारी का गर्व, सुख, अभिलाषा, उसका सब कुछ उसके सौभाग्य पर निर्भर है । यदि वह सुहागिन बनी रही तो वह इस लोक को स्वर्ग मानती है । चाँद को सुधाकर कहती है। और दुःख में भी फूली-फूली फिरती है । यदि उसका सोहाग-बाग हरा-भरा और फूला-फला न रहा तो उसके लिए यह अनोखा संसार इतना ही निस्सार हो जाता है कि जितना योगियों के लिए भी नहीं होता ।

भारतीय-परिवार को स्वर्गीय सुखों का क्रीड़ास्थल बनाने-वाली आर्यकुलांगना के अनेक रूपों में पत्नी और जननी का रूप सर्वोपरि और महिमा-मण्डित है । किन्तु जिस समय हिन्दू परिवार की विधवा पर दृष्टि पड़ती है, उस समय सारी कामनाओं का भस्म रमाकर बैठी एक तरुण-तपस्विनी ही ध्यान में आती है । उसके चारों ओर सर्वेन्द्रिय सुखों की विरागिन धधकती रहती है । उसकी लालसाओं की लोल-लहरें किसी किनारे तक नहीं पहुँचने पाती । उसकी अभिलाषाओं की अल्हड़ आँधी हृदय में हाहाकार मचा कर उद्दत बवंडर की भाँति उसके मस्तिष्क में गड़ जाती है । संयमशीलता का कैसा निष्ठुर निदर्शन है । सहिष्णुता की कैसी गगनाकार सीमा है । आत्मत्याग का कैसा ज्वलंत आदर्श है ! सामाजिक शासन का कितना भयंकर चित्र है ।

पति की अचानक मृत्यु से, 'मगनबाई' को जो असह्य दुःख हुआ वह अकथनीय है । इस अपार दुःख के बीच अगर

कोई सहारा था तो वह अपने पुत्र का ही । देहातों में मुश्किल से ऐसे कुछ इने-गिने परिवार मिलेगे जिनमें विधवाओं पर वस्तुत. उतना ही ध्यान दिया जाता हो जितना सधवाओं को सहज सुलभ है । हा दैव ! आँगन और घर में चारों ओर लालसाओं की ज्वाला धधक रही है, नाना प्रकार के मगलमोद महोत्सव मनाये जा रहे हैं पर किसी व्यक्ति के हृदय को बेचारी करुण-कातर विधवा की मर्म वेदना छूने भी नहीं पाती। वह दूर ही मे सब कुछ देख कर मन ही-मन आह भरती और चुपके से आँसू पोंछ कर परिवार वालों के सुख सवर्धन में हाथ बटाती है। आखिर क्या करे ? हिन्दू परिवार में विधवा का कुछ दायभाग भी तो नहीं। उससे भरमुँह मीठी बात बोलने वाला कोई सहृदयी भी तो नहीं है। ताने और तिरस्कार के सिवा उसे समाज से और कुछ भी प्राप्त नहीं होता ।

पति के स्वर्गवास के बाद 'मगनबाई' को श्वसुर पक्ष की ओर से साधारण सहारा ही मिल सका। पुत्री की यह स्थिति देख कर उसके पिता पोटला निवासी श्रीमान् 'अमरचन्द'जी तातेड़ ने उसे अपने घर पर ही रहने का बहुत आग्रह किया। किन्तु इस धैर्यशील नारी के हृदय का स्वाभिमान जाग उठा। उसने दूसरों के सहारे जीना दीनता की निशानी समझा। परमुखापेक्षी रहने के बजाय स्वाश्रय मे जीवन व्यतीत करना ही श्रेयस्कर माना। उसने पिता के आग्रह को विनम्र शब्दों में अस्वीकार कर दिया। वह अपने घर रह कर ही चर्खा सिलाई आदि श्रम से अपना और पुत्र का निर्वाह करने लगी।

परिवार के अन्य सदस्य मगनबाई को साधारण स्त्री समझ-कर प्रस्ताव करने लगे कि इस होनहार बालक को निकटवर्ती

परिवार के सदस्य को गोद दे दो वही इसका लालन-पालन करेंगे। माता चाहे कितनी ही निष्ठुर हो पर क्या वह अपने लाडले को किसी को सौंपने को तैयार हो सकती है? वह कि मगनबाई तो एक समझदार महिला थी। उसने आगन्तुक बन्धुओं को स्पष्ट कह दिया कि यह बालक किसी के भी गोद में नहीं जायगा। क्या मैं इतनी दुर्बल हूँ कि एक बालक की परिचर्या नहीं कर सकती? उसका मातृहृदय जाग उठा, और मन में निश्चय कर लिया कि इसे खूब पढ़ा-लिखा कर तैयार किया जाय ताकि यह बालक भावी पीढ़ी के लिए कुछ आदर्श उपस्थित कर सके।

संसार में समाज का निर्माण माता ही करती है। प्रत्येक मनुष्य बहुत कुछ अपनी माता का बनाया हुआ है। व्यक्तियों के समूह से समाज बनता है और व्यक्तियों को माता बनाती है। इस तरह माता ही समाज बनाने वाली है। यदि मातायें चाहें तो आदर्श समाज बना सकती हैं। मातृ शक्ति की महिमा अपार है।

सन्तान को विद्वान वीर और दानी बनाना माता का ही काम है। माता ही पुत्री को आदर्श गृहिणी और जननी तथा पुत्र को सदाचारी एवं यशस्वी बना सकती है। नर और नारी के जीवन तथा भविष्य का निर्माण माता ही करती है। माता की महिमा पिता से भी बड़ा है। क्योंकि वह सन्तान को नव मास तक अपने गर्भ में धारण कर के उसे अपने रक्त के रस से पोषती है और फिर संसार में पैदा कर के जबतक जीती है तबतक पालती है। माता का कोमल-क्रोड ही शान्ति का निकेतन है। माता का हृदय बच्चे की पाठशाला है।

माता के धर्म-संस्कार प्रतिदिन जागृत हुए जा रहे थे। उनके जीवन का यही लक्ष्य रह गया था कि बालक को अधिक से अधिक शिक्षित और सस्कारी बनाना और अपना शेष जीवन धर्म ध्यान में बिताना। तदनुसार सामायिक प्रतिक्रमण और सन्त-सती समागम में माता का काल-क्षेप होता था। मेवाड़ संप्रदाय की सतियों का आवागमन राजकरेड़ा में होता रहता था। यहाँ यह स्पष्ट कर देना चाहिए कि माता की निष्ठा स्थानकवासी सप्रदाय की थी। और उसी के उपकार का परिणाम था कि सचेती परिवार में धर्म के सुदृढ़-सस्कार आरोपित हुए थे। बाल्यकालिक धर्म संस्कार सतियों के समागम और निर्मल उपदेश-श्रवण से और भी प्रबलतम होने लगे। धर्म-भावना हृदय में हिलोरे लेने लगी। चरित्र नायक की माता मगनबाई मेवाड़ सप्रदाय की सती शिरोमणि प्रवर्तिनी 'श्री फूलकुँवरजी की सुशिष्या श्री शृंगार कुँवर जी के परिचय में आई। इनके धार्मिक उपदेशों ने माता तथा मांगीलाल के हृदय में त्याग और वैराग्य की भावना उत्पन्न की। पुण्योदय से जैन धर्म के महान आचार्य संयम मूर्ति श्री एकलिंग दास जी म० सा० का नगर में पदार्पण हुआ। ये त्याग और करुणा की प्रतिमुर्ति थे। इनके वैराग्य पूर्ण उपदेश सुनकर श्री मगनबाई का हृदय वैराग्य से भर गया। इन्हें अब सांसारिक वृत्ति अखरने लगी। परिणाम की निर्मल धारा यहाँ तक पहुँची कि संसार-त्याग के लिए उद्यत हो गई। वैराग्य पूर्वजन्म के अर्जित कर्मों का फल है जो करोड़ों इन्सानों में एकाध को ही प्राप्त होता है। वस्तुत ससार के बाह्य पदार्थ एव परिवर्तन मानव को ससार से विक्षुब्ध नहीं बना सकते, वरन् उसके अपने ही सस्कार जीवन-मोड़ के कारण बन जाते हैं। श्री मगनबाई में धार्मिक सस्कार थे ही, पूज्य श्री के उपदेश से उन संस्कारों ने मूर्त रूप

ले लिया । उसने पूज्य गुरुदेव के समक्ष दीक्षा ग्रहण करने की भावना प्रकट की । दीक्षा लेने के पूर्व उसे बालक मांगी लाल की भी व्यवस्था करनी थी । उसने सोचा–बालक संसार में रह कर बहुत हुआ तो आर्थिक उन्नति करेगा, अपने परिवार की वृद्धि कर उसका भरण-पोषण करेगा । पर यदि वह आत्मकल्याण के प्रशस्त पथ पर अग्रसर होगा तो संसार में अनेक भव्य जीवों का उद्धार करेगा । और श्रमण-संस्कृति की धारा को वेग देगा । यही सोच उसने अपने पुत्र मांगीलाल को बैठा कर उसके सामने दीक्षा लेने की अपनी भावना प्रगट की । और कहा कि–बोल ! अब तेरी क्या इच्छा है ? क्या तुझे किसी के गोद जाना है या मेरे साथ दीक्षा लेनी है ? इसपर वीर बालक मांगीलाल ने उत्तर दिया कि–मां, तुमसे बढ़कर मेरा हितैषी इस संसार में अन्य कौन हो सकता है । मां तो हमेशां अपने बालक का हित ही चाहती है तू ने अपने रक्त से सींच कर मेरा भरण-पोषण किया है, बड़ा किया है । मैं अपना सर्वस्व देकर भी तेरे उपकार से उऋण नहीं हो सकता । आपने अपने लिए जो आत्मकल्याण का मार्ग अपनाने का निश्चय किया है मैं भी उसी मार्ग पर चलना चाहता हूँ । अगर आप दीक्षा लेना चाहती हों तो मैं भी दीक्षा-ग्रहण करूँगा । धन्य है वह माता और पुत्र जिनके इतने ऊँचे विचार थे । इस कहते हैं स्वार्थत्याग का प्रत्यक्ष उदाहरण । माता की सच्ची हितैषिता इसी में है कि बालक को उन्नत-पथगामी बनाये ।

उस समय पूज्य एकलिंगदासजी म. सा० कोशीथल (मेवाड़) में विराज रहे थे । माता अपने पुत्र मांगीलाल को साथ में ले कोशीथल में गुरुचरणों में आई । गुरुचरणों में मांगीलाल को समर्पण कर उस दिक्षित बनाने की अपनी सहमति प्रकट की

और साथ में स्वयंने भी दीक्षा लेने की भावना प्रकट की। उस अवसर पर कोशीथल का संघ एकत्र हुआ। उनके सामने माता ने मागीलाल की दीक्षा का आज्ञा-पत्र लिख कर दे दिया।

चरित्रनायकजी की शिक्षा और दीक्षा:—

अब मागीलाल की व्यवहारिक शिक्षा समाप्त होकर आध्यात्मिक क्षेत्र में काम आने वाली शिक्षा प्रारभ हुई। अब उनका जीवन वैयक्तिक न होकर समष्टि का रूप बनने लगा। अब परिवार की सम्पत्ति न बन कर लोककल्याण का दीपस्तभ बनने जा रहा है। माता सतुष्ट थी कि चलो हमारे कुल का एक बालक जनकल्याण का निमित्त तो बन रहा है।

माता मगनबाई और पुत्र मागीलाल ने सतियों के समीप गाँव घासा में प्रतिक्रमण सूत्र, पच्चीस बोल, आदि सीखने प्रारंभ किये। क्योंकि दोनों को अब तो विशाल दायित्व ग्रहण करना था। उन दिनों पूज्य गुरुवर का चातुर्मास भारत विख्यात तीर्थ नाथद्वारा में था। ससार में यह अटल नियम देखा गया है कि अच्छे काम में सौ विघ्न आते हैं। यहाँ तक कि पारलौकिक क्षेत्र भी इसके प्रभाव से बच नहीं पाता। इधर तो माता और बालक अपने उस स्वर्ण दिन की प्रतीक्षा में थे। कब वह स्वर्णघड़ी आवे कि हम सयम ग्रहण कर आत्मकल्याण के पवित्र मार्ग पर आगे बढ़े, पर उधर स चेती परिवार में ही जो मागीलाल के पितृव्य श्री छोगालालजी सा० कुछ और ही सोच रहे थे। वह यह नहीं चाहते थे कि मगनबाई और मागीलाल ससार को छोड़ कर सयम पथ के पथिक बने। इन्होंने उनके शुभकाम में बाधाएँ खड़ी करना शुरू कर दिया। बालक मागीलाल को एव उनकी माता को अनेक प्रलोभन दिये।

यहाँ तक की मांगीलाल को माँ से अलग रख कर उसे अच्छे खान पान वस्त्राभूषण आदि से उसके मन को लुभाने के अनेक प्रयास भी किये। किन्तु उन्हें इसमें सफलता नहीं मिली। जिनके मन में ज्ञान-मूलक वैराग्य की तरंगें उठती हैं तो संसार की कोई शक्ति नहीं जो उसे आत्मकल्याण-पथ से विचलित कर सके। इस बीच श्रीमान् जोगालालजी सा० अस्वस्थ हो गये। और इसी में उनकी मृत्यु हो गई। श्री मान जोगालालजी सा० की मृत्यु से इनका मार्ग प्रशस्त बन गया, अब इनके आत्मकल्याण के मार्ग में रोड़ा अटकाने वाला कोई नहीं रहा। अवसर पाकर श्री मगनबाई अपने पुत्र मांगीलाल को साथ ले रायपुर गई जहाँ पूज्य गुरुदेव श्री एकलिंगदासजी म० सा० बिराज रहे थे।

रायपुर (मेवाड़) क्षेत्र गुरुभक्ति और गुरु भक्तों का स्थान होने के कारण बड़ा प्रसिद्ध रहा है। यहाँ के लोग बड़े उदार और धर्मप्रेमी हैं। यहाँ जैनों की बस्ती बड़ी तादाद में है। यहाँ सन्त सतियों के चातुर्मास प्रायः हुआ करते हैं। पूज्य गुरुदेव श्री एकलिंगदासजी म० सा० ने यहाँ के समाज को नया जीवन नूतन चेतना प्रदान की थी। उस नवीन संचार की किरणों से जिनका रोम-रोम प्रकाशित हुआ उनमें से कर्मठ मठ श्रीमान् सीतारामजी चोरड़िया देवीचन्दजी बनवट श्री भेरुलालजी सा० बोलियों आदि का नाम अतीव विख्यात है। ये समाज के प्रमुख थे। इनमें गुरु भक्ति कूट-कूट कर भरी थी। ये केवल अपने इलाके में ही प्रसिद्ध नहीं थे बल्कि आसपास के गाँव-निवासी इनका बड़ा आदर रखते थे। श्री मगनबाई ने अपने पुत्र के साथ दीक्षा ग्रहण करने की भावना आचार्य श्री के सामने रखी। उस समय सीतारामजी चोरड़िया और देवीचन्दजी सा० बनवट भी उपस्थित थे। ये इन दोनों के

तीव्र वैराग्य भाव से बडे प्रभावित हुए। इन्होंने इन दोनों को दीक्षा देने की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली। फलस्वरूप शुभ मुहूर्त में सं १९७८ वैशाख शुक्ला तीज गुरुवार के दिन बडे ठाठ बाट से इनकी दीक्षा विधि समाप्त हो गई। मांगीलाल आचार्य श्री के शिष्य बने और मगनबाई महा सतीजी श्री फूलकुंवरजी को शिष्या बनी।

शिक्षा और गुरु वियोग :—

गुरु महाराज इनकी बाल्यकालिक प्रतिभा से पूर्णतया प्रभावित थे। अतएव इन्हे सेवारत प० मुनि श्री 'जोधराजजी' महाराज सा० को सौंपा, और निर्देश दिया कि इनकी शिक्षा का दायित्व आप पर है। प. मुनि जोधराजजी म० इस समय मेवाड़–सम्प्रदाय के मुनियों में विद्वान् शास्त्रज्ञ एवं सयमशील सन्त माने जाते थे। अपने उग्र तप और त्याग के कारण इन्हें लोग 'मेवाड़-केशरी' भी कहते थे। आचार्य महाराज सा० का विश्वास ये सम्पादित कर चुके थे। इनके सानिध्य में रहकर मुनि मांगीलालजी शास्त्राध्ययन करने लगे। साथ ही पूज्य गुरुदेव की सेवा भी बड़ी तत्परता से करने लगे। नौ वर्ष तक मुनि मांगीलालजी ने पूज्य गुरुदेव की सेवा की। सवत् १९८७ का श्रावण कृष्णा बीज को पूज्य गुरुदेव श्री एकलिंगदासजी म० सा० का स्वर्गवास हो गया। गुरुदेव के स्वर्गवास से इनके दिल पर जो आघात लगा वह अवर्णनीय है। वे अनाथ से हो गये। पर क्या किया जाय ? तीर्थंकर और चक्रवर्ती जैसे महा शक्तिशाली भी इस काल–कराल से नही बच सके। सभी को एक दिन इस पथ का अनुगामी बनना है यह, समझकर सयम की साधना में तन्मय हो गये।

ऐसे महान पंडित एवं तेजस्वी गुरुदेव का संग स्नेह साहचर्य पाकर कौन कंकर शंकर नहीं बनेगा । चरित्र-नायक श्री तो जिज्ञासु, विनयी, सुसंस्कृत प्रतिभास पन्न, परिश्रमी, गुरु आज्ञा पालक थे ही । आप गुरु महाराज श्री की निश्रा में बराबर उनके स्वर्गारोहणकाल पर्यन्त बने रहे और स्वाध्याय, विद्याभ्यास में अति उन्नति की । गुरुदेव द्वारा प्रदत्त संयम की उत्तरोत्तर वृद्धि करते हुए संवत् १९८७ का चातुर्मास उदयपुर व्यतीत कर ग्रामानुग्राम विहार करते हुए भव्य जीवोंको उपदेशामृत का पान कराते हुए आगामी चातुर्मास लावासरदारगढ़ पधारे ।

सं० १९८८ का लावासरदारगढ़ का चातुर्मास –

यह मेवाड़ प्रांत का छोटा सा गाँव होते हुए भी यहाँ के श्रावकों की धार्मिक भावना प्रशंसनीय है। यहाँ की आम जनता जैन मुनियों के प्रति अटूट श्रद्धा रखती आयी है । गुरुवर्य के चातुर्मास से लोगों में धार्मिक भावना खूब बढ़ी । यहाँ दान दया तपस्या आदि अनेक शासन प्रभावक कार्य हुए। महाराज श्री के व्याख्यान आदि का आम लोगों ने खूब लाभ उठाया । मध्याह्न में शास्त्र-वाचन एवं तात्त्विक चर्चा चलती थी । यहाँ का चातुर्मास पूरा कर लोगों को आत्मकल्याण का प्रशस्त मार्ग बताने के लिए अन्यत्र विहार कर गये ।

सं० १९८९ का देवगढ़ चातुर्मास –

देवगढ़– मदारिया का अपना ऐतिहासिक महत्त्व है । यहां के शासक रावत कहलाते थे । ये वीर और परम धर्मी थे । उदयपुर से ६८ मील पर बसे हुए इस नगर में जैन समाज

बड़ी संख्या में वर्षों से निवास करता आया है । कई जैन मुनियोंने यहाँ निवास कर न केवल स्थानीय जन-मानस को धार्मिक दृष्टि से ही उद्बुद्ध किया है, अपितु अवकाश के क्षणों में जन प्रबोध कारी साहित्य रचकर माता सरस्वती के मन्दिरमें ग्रन्थरूपी पुष्प भी चढाये हैं । महाराज श्री का यही चातुर्मास-होने से जनसाधारण में धर्म की अनुपम जागृति हुई । आस-पास के गाँवोंकी जैन जनता भी प्रचुर मात्रा में दर्शनार्थ आती रहती थी । अजमेर के लोढा साहब की प्रेरणा से श्री नानक राम जी महाराज की सप्रदाय के पं० मुनि श्री हगामी लालजी महाराज साहब को अपने साथ रख कर सयम-आराधना में पूर्ण सहयोग दिया । यह उनके उदार हृदय का प्रत्यक्ष उदाहरण है । इस चौमासे की विशेषता यह रही कि जैन समाज के लोग तो महाराज श्री की अमृतश्रावणी वाणी से लाभान्वित होते ही रहे, पर वहां के रावजी भी व्याख्यान का बराबर लाभ लेते रहे । दर्शनार्थियों में अजमेर के श्री लोढाजी भी पधारे थे ।

श्रमण सम्मेलन की ओर प्रस्थान-

भारत में ऐसे सन्तों की कमी नहीं है जो साम्प्रदायिकता से अलग रहकर शुद्ध आत्मोत्थान के पथ पर चलना चाहते है । किन्तु उनके सामने ऐसा कोई मार्ग नही है । यदि त्याग-प्रधान श्रमण-सस्कृति में विश्वास रखने वाले कुछ सन्त ऐसा मार्ग बना लेवे जहाँ व्यक्ति साम्प्रदायिकता से दूर रह कर कल्याण कर सके तो साम्प्रदायिक सीमाएँ अपने आप शिथिल होने लगेगी ।मुनि श्री मागीलालजी म० सा० इसी सिद्धान्त मे विश्वास रखते थे । और वे सप्रदाय से भी अधिक श्रमण सघ-ठन को ऊँचा मानते थे । चातुर्मास समाप्त होते ही ये मेवा -

केसरी व मुनि श्री जोधराजजी म० सा० के साथ अजमेर सम्मेलन में प्रतिनिधि बनकर विहार कर गये। अजमेर में अनेक मुनि और आचार्यों के दर्शन समागम का लाभ मिला। उनकी विनम्रता और वैनयिक वृत्ति से सम्मेलन का मुनि समाज बहुत प्रभावित रहा। अजमेर मुनि सम्मेलन के सम्बन्ध में मुझे यहाँ विस्तार से प्रकाश डालने की आवश्यकता नहीं है, कारण कि सम्मेलन की रिपोर्ट में पूरा विवरण दिया गया है। उसे लिखकर पृष्ठपेषण करना नहीं चाहता।

स० १९९० का वर्षावास पञ्चौली –

अजमेर सम्मेलन के पश्चात् मेवाड़ के उप मण्डल प्रान्त में बदनोरा प्रदेश में खारी नदी के सुरम्य तट पर यह नगर अवस्थित है। यहाँ पर गुरुदेव श्री जोधराजजी म सा० एवं चरित्रनायकजी के चरण पड़ने से भक्तालुओं के हृदय में धार्मिक-भावनाओं का ज्वार उमड़ पड़ा। इनकी विद्वत्ता पूर्ण भाव गर्भित व्याख्यान शैली से जनता गद्‌गद् हो गई। इस गाँव के लिए कई वर्षों के बाद सन्तों का यह पहला चातुर्मास था। आसपास के लोग बड़ी संख्या में महाराज श्री के दर्शन के लिए आते थे। गाँव के लोग उनका हृदय से स्वागत करते थे। छोटा सा गाँव होने पर यहाँ जो धार्मिक कार्य एवं तपश्चर्या हुई वह गुरुदेव के विद्वत्तापूर्ण वाणी का ही परिणाम था।

स १९९१ का चातुर्मास आमला –

पञ्चौली का चातुर्मास समाप्त कर गुरुदेव ने मेवाड़ भूमि को पावन करने के लिए अन्यत्र विहार कर दिया। मार्ग में उन्होंने अनेक भव्य जीवों को धर्माभिमुख किया।

रायपुर संघ के सत्याग्रह से इस वर्ष का चातुर्मास रायपुर में करने का विचार किया था। गुरुदेव के आगमन की रायपुर-संघ चातक की तरह प्रतीक्षा कर रहा था। गुरुदेव ने भी चातुर्मास के लिए रायपुर की ओर विहार कर दिया। किन्तु भावी भाव प्रबल है। जेष्ठ की वर्षा से मावली से थामला पधारते हुए रास्ते में चिकनी मिट्टी के कारण गुरुदेव श्री जोधराजजी म० सा० का पैर फिसल गया और साघातिक चोट आ जाने से बड़ी कठिनाई से वे थामला गाँव में प्रवेश कर सके। यहाँ तक कि बैठना चलना-फिरना कत्तई स्थगित हो गया। छ माह तक असह्य वेदना का भारी उदय रहा। अनुकूल औषधियाँ और मर्दन का क्रम चलता रहा। स्थानीय श्रावकों की उत्साह भरी सेवा के परिणामस्वरूप श्री जोधराजजी म० सा० ने पूर्ण स्वास्थ्य प्राप्त कर लिया। शारीरिक अस्वस्थता के कारण गुरुदेव का चातुर्मास यहीं रहा। चातुर्मास के बीच लोगोंने धार्मिक उत्साह लगन और सेवा का आदर्श उपस्थित किया, वह अन्य गाँव वालों के लिए एक उदाहरण था। यहाँ तपश्चर्या आदि प्रचुर मात्रा में हुई। यहाँ के ठाकुर साहबने भी समय-समय पर गुरुदेव श्री का उपदेश सुनकर अपनी भक्ति का अपूर्व परिचय दिया। यहाँ तक कि उन्होंने स्थानक बनाने के लिए अपनी ओर से जमीन तक मुफ्त में दे दी। गुरुदेव ने पूर्ण स्वास्थ्य लाभ कर यहाँ से विहार कर दिया।

स० १९९२ का चौमासा लावा सरदारगढ –

आठ माह तक शेष काल मे विभिन्न ग्राम नगरों में जिनवाणी का प्रचार करते हुए चातुर्मासार्थ असाढ़ शुक्ला में नगर में पदार्पण किया। आज्ञा प्राप्त कर जैन मन्दिर के अग्रभाग मे विराजे। यहाँ इनके भाषणों का इतना व्यापक प्रभाव रहा

कि देवास पन्थी भाई भी बड़े चाव से व्याख्यान श्रवण कर अपने को धन्य मानने लगे।

मेवाड़–सम्प्रदाय के आचार्य श्री एकलिंगदासजी म० सा० का रूँढाला में स्वर्गवास होने के कारण जैन समाज इनके रिक्त स्थान की पूर्ति के लिए बहुत चिंतित था। संघ में एक योग्य और संयमशील आचार्य की आवश्यकता थी। संघ की उन्नति के लिए नेता का होना अनिवार्य होता है।

इस चातुर्मास में आचार्य के स्थान पूर्ति की चर्चा जोरों पर चली। इन दिनों मुनिवर श्री जोधराजजी म० सा० और मुनि श्री मोतीलालजी म में पारस्परिक वैमनस्य चल रहा था। मुनि श्री जोधराजजी म सा श्रमण संस्कृति के अनुकूल विचारों के प्रति पूर्ण निष्ठावान थे। स्वभाव से भी वे सरल और विनम्र थे। संयम मार्ग की तनिक भी शिथिलता वह सहन नहीं कर सकते थे। स्वयं भी संयम में रत रहते थे और इस दृष्टि से मुनियों पर भी उनका कड़ा नियंत्रण रहता था। जब स्वेच्छा से संयम ग्रहण कर आत्मकल्याण के पथ पर चल रहे हैं तो उसमें शैथिल्य क्यों ? इसी बात को लेकर गुरुवर श्री जोधराजजी म० सा में एवं मुनि श्री मोतीलालजी म सा में मतभेद था। इसी मतभेद को मिटाने के लिए दोनों का आपसी मिलन हुआ। एक दूसरे के चाव की भ्रान्तियाँ मिटी–और गुरुदेव श्री जोधराजजी म सा की सरलता से प्रभावित हो मुनि श्री मोतीलालजी म सा ने संघ–संगठन में रहना स्वीकार किया और संघ शैथिल्य को दूर करने वाले नियमों को स्वीकार किये। दोनों के आपसी मतभेद के दूर होने से संघ में आनन्द छा गया। अन्त में चतुर्विध संघने मिलकर मुनि श्री मोतीलालजी म० सा को आचार्य पद एवं मुनि श्री

मांगीलालजी म० सा० को युवाचार्य पद प्रदान किये गये। यह "लावासरदारगढ़'का' सौभाग्य था। आगामी चातुर्मास सब मुनिमण्डल साथ ही करें ऐसा तय हुआ। सयमवृत्ति विशुद्ध जिनाज्ञानुकूल रखेंगे ऐसा आपसी लिखित निर्णय हुआ।। 'लावासरदारगढ़' में पद महोत्सव के पश्चात देलवाड़ा का सघ आगामी चौमासे की विनती के लिए आ पहुँचा और उसे स्वीकृति दी गई।

स० १९९३ का वर्षावास देवकुल पाटक देलवाडा –

मेवाड़ के जैन इतिहास में देलवाड़ा का प्राचीन नाम देवकुल पाटक मिलता है। इस नगर का इतिहास बहुत उज्ज्वल रहा है। यहाँ विपुल जैन साहित्य सस्कृत, प्राकृत भाषाओं में विभिन्न मुनियों द्वारा रचा गया। लावासरदार गढ के निर्णयानुसार सब मुनि सामूहिक रूप से चौमासे के लिए पधारे। यहाँ मुनियों में आपसी शान्ति की बजाय वैमनस्य और भी बढ़ गया। प० मुनि श्री जोधराजजी म० सा० ने पूज्य श्री मोतीलाल जी म सा को संघ एकता के समय ली गई प्रतिज्ञा को पालने का बार-बार अनुरोध किया। विनम्र प्रार्थना और बार-बार विनय पूर्वक मोतीलाल जी म सा को अपने आचार धर्म पर दृढ रहने का आग्रह किया। किन्तु इसका असर इनपर विपरीत ही पड़ा। परिणामस्वरूप चातुर्मास समाप्ति के बाद मुनि श्री जोधराज जी म सा ने आहार पानी आदि का सम्बन्ध-विच्छेद कर अलग विहार कर दिया।

सन्त तो समाज के ही एक अग होते हैं। उनके आस-पास के लोगों का समाज पर उनका प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। दीपक, आत्म-निर्वाण के लिए जलता है किन्तु उसकी तप. पूत ज्योति से निकटवर्ती स्थान प्रकाशित होता है। दीपक को

भले ही इसका भान न हो । और यदि कहीं उस निकटवर्ती स्थान में कोई भिन्न वातावरण उत्पन्न हो गया हो तो उसके परिणाम से विभे भी क्योंकि कैसे अलिप्त रह सकती है ? इसके सिवाय भारतीय जन साधारण में धर्म-भावना का संस्कार परम्परा से चला आ रहा है । सद्गुरु और सन्त उनके लिए ईश्वर तुल्य होते हैं । अतएव उनके आचार विचार का भक्ति भाव पूर्वक यथाशक्ति अनुकरण करने में वे अपने को धन्य मानते हैं । 'यद्यदाचरति श्रेष्ठः लोक स्तदनुवर्तते' यह सिद्धान्त सर्व विदित है । जिन्हें हम अपना नेता या आचार्य मानते हैं उन के आचार विचारों का प्रभाव अवश्य ही शिष्यगण पर पड़ता है । आचार्य जितना आचार विचार में श्रेष्ठ होगा उसका संघ भी उतना ही श्रेष्ठ होगा । अगर आचार्य में दूषण है तो उसका असर संघ पर अवश्य पड़ता है । इसी उद्देश्य को लक्ष्य में रखकर जोधराजजी म० सा० उनसे पृथक हो गये ।

सं० १९९४ का चातुर्मास खमणोर –

वीर भूमि हल्दीघाटी के नाम से शायद ही कोई वीर-पूजक भारतवासी अपरिचित होगा । महाराणा प्रताप के साथ हल्दीघाटी का जो सम्बन्ध रहा है उसे लिखने की आवश्यकता नहीं है । इसी घाटी की सुरम्य तलहटी में यह नगर बसा हुआ है । शताब्दियों से यह खमणोर गुलाब के पुष्प उत्पादन का केन्द्र रहा है । मुगलकाल से ही यहाँ के गुलाब बाग विख्यात रहे हैं । आज भी गुलाबजल, गुलाबइत्र और गुलकन्द के लिए ऐसा विख्यात स्थान है । जैन इतिहास की दृष्टि से भी इसका स्थान कम महत्वपूर्ण नहीं है । आचार्य सौबर-धमजीने यहाँ कई वर्षावास व्यतीत कर जैन संस्कृति को पास

वित पुष्पित किया था। खमणोर में प्रतिलिपित जैन साहित्य प्रचुर परिमाण में अन्यत्र उपलब्ध है।

इस इतिहास-प्रसिद्ध नगर मे पू गुरुदेव के पदार्पण से जनता की भावना प्रबल हो उठी और चातुर्मास की विनति होने लगी। गुरुदेव ने श्रावकों की उत्कृष्ट भावना देखकर चातुर्मास की विनति मानली। महाराज श्री की भव्य व्याख्यान शैली से प्रभावित दिगम्बर श्रावक श्री तोलारामजीने अपने निवास में ही चातुर्मास करवाया। बिना किसी भेद भावना के सर्वसाधारण जन आपके दिव्य उपदेशों का पानकर अपने को कृतकृत्य मानते थे। खमणोर के आसपास के कई गांवों के लोग गुलाब और उनसे बनी हुई चीजों का व्यापार करते थे। कई श्रावकों की गुलाब व इत्र की बडी-बडी भट्टियाँ चलती थीं किन्तु गुरुदेव के प्रभाव पूर्ण उपदेश से श्रावकों ने इस महारंभ पूर्ण व्यापार को सदा के लिए त्याग दिया। कइयोंने मद्य, मांस आदि व्यसनो का परित्याग किया। श्रमण-सस्कृति के मौलिक तत्वों का महाराजश्रीने ऐसी प्रभावशाली शैली में प्रतिपादन किया कि आज भी उसकी ध्वनि गूँज रही है। यहाँ का प्रभावशाली चातुर्मास पूर्ण कर म सा श्री ने मारवाड़ की ओर विहार कर दिया।

स० १९९५, का चौमासा सादड़ी (मारवाड़)

सयमको साधना में पद-पद पर परिषहों का सामना करना पड़ता है। वही साधुजीवन की कसौटी है। मेवाड़ से विहार कर अरावली की पहाड़ियों में बसे कई छोटे बड़े गावों को पावन करते हुए विचर रहे थे। मार्गमें कई तरह के

परिषह सहन करने पड़े। पाली, सांडेराव पाली, जोधपुर आदि नगरों को फरसते हुए गुरुदेव घानेराव सादड़ी पधारे। वहाँ के संघ ने गुरुदेव का भावभीना स्वागत किया। महाराजश्री की धर्मदेशना से लोगों में धर्मोत्साह बढ़ा। परिणामस्वरूप संघने चातुर्मास की भाव भिनी विनति की। गुरुदेवने स्वीकृति फरमा दी।

राजस्थान के जैन इतिहास में सादड़ी का बहुत महत्व पूर्ण स्थान रहा है। विशाल राणकपुर का मन्दिर भी इसी के समीप है। सादड़ी में जैन समाज का बहुत प्राचीन काल से ही वर्चस्व बसा आ रहा है। मुनि विनयविजयजी और महोपाध्याय मघ विजयजीने-अपनी मूल्यवान संस्कृत साहित्यिक रचनाओं में इसे और भी अमर कर दिया है। सुप्रसिद्ध मेवाड़ के दानवीर भामाशाह के लघु भ्राता ताराचन्द शाह' यहाँ के हाकिम थे। वे लोंकाशाह के सिद्धान्त को मानने वाले थे। वे लोंकागच्छ में इतने अधिक प्रिय थे की उनकी मत्यु के बाद उनकी और उनकी पत्नी की वि स १६४८, मे सादड़ी में एक प्रतिमा स्थापित की गई थी। वह प्रतिमा आज भी उपलब्ध है। स्थानकवासी समाज की यहाँ विशाल संख्या है। विशाल जन समुदाय होते हुए भी धर्म के मामलों में अद्भुत सघटन है। महाराजश्री के पधारने से जनता मे धार्मिक आनन्द द्विगुणी बढ़ गई। चातुर्मास काल में उपवास आदि तपश्चर्या के साथ-साथ दया, पौषध आदि भी प्रचुर मात्रा मे हुए। निकटवर्ती ग्रामों की जनता भी प्रचुर मात्रा में दर्शनार्थ आई। चरित्रनायकजी का मारवाड़ का यह प्रथम चातुर्मास अत्यन्त सफल और प्रभावपूर्ण रहा।

चातुर्मास के अनन्तर आपका विहार पुन मेवाड़ की ओर हुआ। देवगढ़ मदारिया मे आपको कारण वश विशेष

रुकना पड़ा। होली चौमासा भी आपका यहीं हुआ। इस अवसर पर गोगुदा का संघ चौमासे की विनति के लिए आया। उनकी विशेष श्रद्धा देख गुरुदेव ने आगामी चातुर्मास की स्वीकृति फरमा दी।

इसी अवसर पर मैं पलाना से गुरुदेवकी सेवामें पहुँचा। मैंने दीक्षा लेनेकी अपनी इच्छा व्यक्त की। मेरी दृढ भावना देखकर गुरुदेवने मुझे साथ मे रखना स्वीकार कर लिया। मैंने प्रतिक्रमण, पच्चीस बोल आदि धार्मिक अभ्यास प्रारभ कर दिया। साथ ही दीक्षा के लिए माता-पिता आदि कुटुम्बी-जनों से आज्ञा प्राप्त करने का प्रयास भी प्रारभ कर दिया। किन्तु माता-पिता का विशिष्ट मोह होने से उन्होंने मुझे दीक्षा लेने की आज्ञा प्रदान नहीं की। ससार में मोह का आवरण प्रबल होता है।

देवगढ़ से विहार कर गुरुदेव राजकरेड़ा, रायपुर, होते हुए 'कुंवारियाँ' पधारे। जहाँ पूज्य श्री घासीलालजी म० सा० का प्रेम पूर्ण मिलन हुआ। मैं भी उस समय गुरुदेव के साथ ही था। पूज्य श्री घासीलालजी म० सा० ने मेरे उत्कट वैराग्य भाव को देखकर मेरे माता पिता से मेरे लिए दीक्षा की अनुमति प्राप्त करवाने के लिए अपने शिष्य मुनि श्री समीरमलजी म०सा० ठानादो को युवाचार्य श्री मागीलालजी म० के साथ मेरे गॉव पलाना पधारे। वहॉ पर मेरे पिताजी श्री नानालालजी दुगड़ को गुरुदेवने बहुत समझाया। किन्तु गुरुदेव के उपदेश का मेरे पिताजी पर किंचित् भी असर नहीं पड़ा। इस अवसर पर मैंने भी पिताजी को कई तरह से समझाने का प्रयास किया। परन्तु इस मामले में हममें से किसी को

भी सफलता नहीं मिली। पिताजी के हठाग्रह से मेरी वैराग्य भावना और भी प्रबलतम हो गई। मैंने गृहस्थ वेश में भी साधु की वृत्ति पालने का निश्चय किया। मैं गुरुदेव की सेवामें था। उनसे यावज्जीवन ब्रह्मचर्य पालने का व्रत ले लिया। सचित्त पदार्थ का सेवन सदा के लिए छोड़ दिया। साथ ही कई छोटे-बड़े नियम ग्रहण किये। इधर पूज्य गुरुवर्य श्री मांगीलालजी म० सा० श्री मुनि जीवराजजी म० सा० से कूँवारियों आकर मिल गये।

वहाँ से क्रमशः कांकरोली पधारे जो प्रसिद्ध वैष्णव तीर्थ है। वहाँ पर जैन दिवाकरजी म० श्री चौथमलजी म० सा० एवं पूज्य श्री खामीलालजी म० सा० का सम्मिलन हुआ। सब मुनिमंडल आनन्द के साथ एक-दूसरे से मिले। वह अपूर्व अवसर था। स्थानीय श्रावक समाज पर इसका अच्छा असर पड़ा। यहाँ से महाराज श्री कोठारियाँ, नाथद्वारा, खमणोर होकर घाटी पधारे। तदनंतर अषाढ़ शुक्ला दशमी के दिन चातुर्मासार्थ गोगुन्दा में बड़े समारोह के साथ प्रवेश किया।

सं० १९९९ का चौमासा गोगुन्दा —

मेवाड़ के इतिहास में गोगुन्दा की अपनी स्वतंत्र जगह है। बहुत सी ऐतिहासिक घटनाएं इस नगर में घटी हैं। यहाँ के शासक झाला सरदार रहे हैं और "राज" उनकी उपाधि थी। राजधानी सुरंग भी यहाँ रहा था। जैन साहित्य के १७ वीं शताब्दी के ग्रन्थों में इसका नामोल्लेख मिलता है। यह मेवाड़ के प्राचीन स्थानकवासी संप्रदाय के केन्द्रों में रहा है।

अधिक मास होने से तपश्चर्यादि धर्मकार्य विपुल परिमाण

में हुए। व्याख्यान में जनता ने खूब उत्साह के साथ भाग लिया। जीव दया का प्रचार भी अपेक्षाकृत अधिक हुआ। चातुर्मास के पूर्ण होते ही गुरूदेव ने वहाँ से विहार कर दिया।

क्रमश विहार करते हुए गुरूदेव का 'सिन्दू' नामक गॉव में आगमन हुआ। जहाँ पलाणा का भावुक सघ दर्शनार्थ गुरूदेव की सेवामें आ पहुँचा। अच्छा अवसर जान कर मैंने पलाना सघ से मेरी दीक्षा की आज्ञा प्राप्त करवाने के लिए सघ से प्रार्थना की। सघ के साथ मैं पलाना गया और वहाँ पर पिताजी को समझाने का पुन प्रयत्न किया किन्तु परिणाम सतोष जनक न आ सका, कारण कि पिताजी को विरोधियों ने ऐसा बहका रखा था कि इनकार भी न कर सके तो हाँ भी नहीं कर सके।

इस बीच मेरे कुटुम्ब में बड़ी मा सा की अचानक गम्भार बिमारी का मुझे समाचार मिला। साथ ही यह भी समाचार मिला की बडी माँ मुझसे मिलने की उत्कट इच्छा रखती हैं। यद्यपि अब मुझे अपने कुटुम्ब से कुछ भी लगाव नहीं था। किन्तु व्यवहार-धर्म निभाने के लिए मैं बडी माँ से मिलने पलाना पहुँचा। वहाँ बडी मा सा की स्थिति अत्यन्त शोचनीय थी। कुछ मिनिट की ही मेहमान थीं। मैंने उसे खूब धार्मिक आश्वासन दिये। उनकी मृत्यु के बाद मैं उसी क्षण सामायिक करने स्थानक में चला गया। श्मशान यात्रा में एकत्र लोगों पर मेरी इस वैराग्यपूर्ण वृत्ति का अच्छा असर पड़ा। अन्तत नरवीर श्री भवरलालजी सा मगनलालजी सा आदि धर्मप्रेमी महानुभावोंने मुझे इस कार्य में सम्पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया। उनके विश्वास पूर्ण

आश्वासन से मेरा साहस दुगुना हो गया। मैं पुन: गुरुदेव की सेवामें 'सिन्दू' पहुँचा। वहाँ मैंने गुरुदेव के समक्ष अपना निश्चय प्रगट किया कि मैं अब-अधिक समय तक इस शुभ कार्य में विलम्ब नहीं करना चाहता, आपको पताना पधारना होगा। मैं पताना में अपने ही कुटुम्ब के समक्ष गृहस्थ वेशका त्यागकर साधुवेश ग्रहण करूँगा। गुरुदेव मेरी अभ्यर्थना को टाल नहीं सके। यशाचार्य श्री मोतीलालजी म. सा. पताना पधारे।

गुरुदेव के पताना पधारने से संघ में अत्यन्त आनन्द छा गया। अपने नगर का एक नागरिक भावना के उच्च पथ पर प्रस्थित हो रहा है, यह जानकर श्रीमान धर्मनिष्ठ श्री मंवरलालजी मगनलालजी आदि श्रावकों के मन और नयन अनुपम आनन्द का अनुभव कर रहे थे। सं. १९९६ का माघ कृष्णा प्रतिपदा का दिन था। गुरुदेव श्रावकों के बीच संसार की असारता पर गम्भीर विवेचन कर रहे थे। मेरे पिता श्री नानालालजी भी सामायिक में बैठे थे। अपने लक्ष्य तक पहुँचने का मैंने सबसे अच्छा अवसर देखा। उसी क्षण पिताके सामने ही गृहस्थ वेश का त्याग कर साधु वेश पहनलिया। गुरुदेव के समक्ष उपस्थित लोगोंने जब यह दृश्य देखा तो वे अवाक् हो गये मैंने पुन: अपने पिता से आज्ञा देने की प्रार्थना की किन्तु पिताजी मौन थे। समीप खड़े श्रीमान मगनलालजी सा० ने साहस के साथ इस कल्याणकारी मार्ग पर बढ़ने की आज्ञा दे दी। गुरुदेव ने भी मगनलालजी सा० की स्वीकृति पाकर एवं पिता के मौन को सम्मति मानकर आगम विधि के अनुसार गुरुदेव ने दीक्षा का पाठ सुनाकर मुझे प्रव्रजित कर लिया। अब मैं सागारी से अनगारी बन गया। मेरा गृहस्थावस्था का नाम 'पन्नालाल' था। दीक्षा के बाद मेरा नाम हस्ती मुनि रखा गया।

गुरुदेवश्री वहाँसे प्रस्थान कर मावली पधारे। और घासा से विहार कर श्री जोधराजजी म सा मुनि श्री कनैयालालजी म सा आदि पधारे, और मेरी बड़ी दीक्षा मावली के श्री सघ के विशेष आग्रह से वहीं संपन्न हुई। यहाँ भी विघ्न आया और वह यह कि पुलिसथाने में आदेश आया था कि पन्नालाल (मेरा गृहस्थ जीवनका नाम) को उनके पिता के सुपुर्द किया जाय। पर धन्य हैं मावली का श्रीसंघ कि जिसने इस पवित्र कार्य में पूर्ण सहयोग दिया और विघ्न टल गया। वहाँ से मुझे युवाचार्यश्री का शिष्य घोषित किया गया। वहाँ से गुरूदेव विहार कर ऊँठाला आकोला होते हुए सगेसरा पहुँचे। वहाँ अनेक जगह से चातुर्मास की विनति के लिएसंघ आ पहुँचे उनमें सनवाड़ सघ की विनति गुरूदेव ने स्वीकृति फरमा दी।

सं. १६६७ का चौमासा सनवाड –

सनवाड के शासक वीरमदेवोत राणावत कहलाते हैं। सनवाड़ वालों ने महाराणाओं को समय-समय पर युद्ध में सहयोग देकर अपनी बौद्धिक परम्परा कायम कर रखी है। वीरता के साथ इनमें धर्म के प्रति गहरी आस्था रही है। श्री मेवाड केशरी म ओर युवाचार्य श्री माँगीलालजी महाराज सा, भादसोडा चितोड़ निम्बाहेडा, नीमच, सादड़ी, डूँगला आदि ग्राम नगरों मे विचरण करते हुए आषाढ़ शुक्ला दसमी को सनवाड़ पहुचे जहाँ वहाँ के विशाल भक्त समुदाय ने महाराज श्री का अनोखा स्वागत किया। जैन समुदाय के अतिरिक्त अजैनभाई भी वहाँ महाराजश्री के व्याख्यानो से लाभान्वित होते रहे। यहाँ तक कि सनवाड़-महाराज तथा उनके राजकुमार भी प्रभावित हुए और जीवदया का प्रतिपालन किया-करवाया।

सनवाड़ के सफल चातुर्मास के बाद आवली मावली रेलमगरा होते हुए सहाड़ा पधारे जहाँ, मुनिवर श्री जोधराजजी म. सा. के असाता वेदनीय कर्मोदय से प्रातःकाल पक्षाघात हो गया जिसके परिणामस्वरूप अधिक समय तक रुकना पड़ा। बिमारी विकराल थी। भीलवाड़ा में विराजमान पूज्य श्री शीतलदासजी की सम्प्रदाय के महान तपस्वी श्री कजोड़ीलालजी म. सा. तपोवृद्ध श्री तपस्वी भूरालालजी म. सा. धुरन्धर व्याख्यानी जोगालालजी म. सा. ठाणा ५ ज्येष्ठ की प्रचण्ड उष्णता की परवाह किये बिना मुनि श्री जोधराजजी म. सा. की सेवामें पहुँचे। ज्यों-ज्यों समाज मे इनके अस्वस्थता के समाचार फैले त्यों-त्यों सहाड़ा मे जनसमुदाय विशाल पैमाने पर गुरुदर्शनार्थ आने लगा यहाँ तक कि साधु और साध्वी समुदाय के विहार भी सहाड़ा की ओर होने लगे ताकि वे मेवाड़-केशरी के दर्शन कर पावन हो सके। उस समय उपस्थित साधु साध्वियों ने जो गुरुदेवकी सेवा की वह अविस्मरणीय है। इस अवसर पर शिष्यमंडली सहित पूज्य मोतीलालजी म. सा. भी पधारे। यहाँ के लोगों ने यद्यपि तन मन से गुरुदेव की खूब सेवा की फिर भी कुछ प्रतिकूलताओं को ध्यान में रखकर मुनिश्री जोधराजजी म. सा. को विशिष्ट अनुकूल उत्तम डोली द्वारा ले जाना तय किया गया।

कुवारियों जैन समाज में कर्मठ तथा भावी कर्णधार श्रीमान् हीरालालजी सा. और कजोड़ीमलजी के पुत्र श्रीमान् कन्हैयालालजी सा. पिपाड़ा श्रीमान् नाथुलालजी सा. कछारा के अपूर्व सहयोग इन्ही की प्रेरणा से मेवाड़ केशरी को डोली द्वारा कुवारियाँ ले जाया गया। मेवाड़ केशरी के शरीरमें अपार वेदना थी पर धन्य है वह संयम मूर्ति कि उन्होंने कभी मुख से उफ तक नहीं किया बीमारी में भी सच्ची समता का सुपरिचय दिया।

ब्यावर में जब दिवाकरजी म० सा० को इनकी बीमारी की सूचना मिली तो सेवामे एक मुनि को भेजा। ऐसे अवसर पर साध्वीजी, झमकुजी और हगामाजी म ठाना चार की सेवा, भी उल्लेखनीय रही। स्थानीय श्रावकोंने जो आत्मलगन के साथ सेवाकी वह अविस्मरणीय है। मेवाडकेशरी का स्वास्थ्य दिनानु दिन गिरता ही जा रहा था। यहाँ तक कि सम्पूर्ण शरीर में पक्षाघात हो गया। पर आश्चर्य एक बात का था कि सर्वाङ्ग पक्षाघात स प्रभावित होने के बावजूद भी मस्तिष्क सजग और ज्ञानतंतु प्रबल थे। वे अपने जीवन के अन्तिम क्षण तक तप और सयम की साधना मे सावधान थे। मुख पर सयम का तेज चमक रहा था। इतनी शरीर विषयक-यातना पराम्न भी वह आत्मध्यान में अन्तिम क्षण तक निमग्न रहे। अतिम समय में इन्होंने त्याग प्रत्याख्यान कर लिये थे। आश्विन शुक्ला पचमी के दिन मुनिश्रीने समाधिपूर्वक अपना देह छोड़ दिया। मेवाड़ का चमकता हुआ एक सितारा सदा के लिए अस्त हो गया। मुनिश्री के स्वर्गवास के समाचार फैलने पर आस पास की जनता एकत्र हुई और बडे समारोह के साथ इनकी श्मशान यात्रा निकाली गई। लोगो की आँखों में आँसू और हृदय मे वेदना थी। गुरुदेव के तप, त्याग और सयमी जीवनकी सर्वत्र चर्चा थी। चारो ओर से समवेदना सूचक सन्देश आये। जिनमे लींबड़ी विराजित पूज्य घासीलालजी म सा. ने इनकी स्मृति में योधराजाष्टक काव्य लिख कर भेजा जो प्रकाशित है। इस अवसर पर अनेक सन्तों और श्रावकोंने अपनी श्रद्धाजलियाँ प्रगट की। गुरुदेव के स्वर्गवास के अवसर पर शेठ हीरालालजी कु कन्हैयालालजी पिपाड़ा, नाथुलालजी कछारा, एव श्राविका श्रीमती टमूबाई की सेवा अविस्मरणीय रहेगी। जिन्होंने तन, मन धन से सेवा की।

विहार जैन साधुओं का भूषण है। गतिशीलता ही जीवन का आधार है। अब युवाचार्य श्री मांगीलालजी महाराज के कन्धों पर उत्तरदायित्व का बोझ और भी बढ़ गया। श्री संघका नेतृत्व आसान नहीं। मेंढकोंको तोलने के समान कठिन है। अब युवाचार्य श्री मोही काकरोली होते हुए क्रमशः भवाना उदयपुर की ओर प्रस्थित हुए। यहीं पर पूज्य घासीलालजी म सा का इनसे समागम हुआ और शोक निवारणार्थ इन्होंने युवाचार्यजी को पुन नयी चादर से अभिषिक्त किया। और हरखलालजी की दीक्षा जो उदयपुर में सम्पन्न होने जा रही थी उसमें युवाचार्यजी भी सम्मिलित थे। पूज्य घासीलालजी म सा के प्रेम पूरक स्नेह सम्मेलन के बाद युवाचार्य श्री वल्लभनगर पधारे। यहाँ पर अनेक जगह की चातुर्मास विनतियाँ आईंथी उनमें गुरुदेवने नाईनगर के श्रीसंघ को चातुर्मास की स्वीकृति फरमा दी।

स० १९९९, का चातुर्मास नाईनगर –

युवाचार्यजी म सा वल्लभनगर से जब विहारकी तैयारी कर रहे थे इतने में बनेडिया से सन्देश आया कि महासती मगनकुवरजी का स्वास्थ्य अनुकूल नहीं है और शक्ति दिनप्रतिदिन क्षीण होती जा रही है। अतएव महाराज सा० दर्शन देने पधारें यह महासती महाराज श्री की संसार पक्ष में मातेश्वरी थीं। वहाँ जाना उनका कर्तव्य था। गुरुदेव वहाँ पधारे। आवश्यक औषधोपचार के बाद भी स्वास्थ्य में सुधार न हो सका। जब आयुष्य तन्तु ही क्षीण हो चलते हैं तब वाह्यपुद्गल अपना क्या प्रभाव बता सकते हैं ? । माताजी म का संलेखनापूर्वक अवसान हुआ। इसका कितना रंज हुआ होगा यह तो अनुभव का विषय है। अभी–अभी मेवाड़-केसरी का शोक तो भूले ही

नहीं थे और दूसरी चोट माताजी के स्वर्गवास से पडी। पर मन में इतना सन्तोष था कि कम से कम उनका अन्तिम समय तो सुधर गया

आषाढ़ कृष्णा दसमी को मातुश्री के देहोत्सर्ग के बाद एकादशी को विहार कर क्रमश आषाढ सु० चतुर्दशी को नाई पधारे। गुरुदेव के चातुर्मास से लोगों में धार्मिक भावना की नई लहर पैदा हुई। गुरुदेव के उपदेश से यहाँ के लोगोंने सैकड़ों प्राणियों को अभयदान दिये। बकरों की सुरक्षा के लिए बोक-शाला की स्थापना की गई। दया, दान, तपस्या आदि अनेक धार्मिक कार्य हुए। यहाँ का चातुर्मास आज लोगों के मास्तिष्क में अंकित है। इस चातुर्मास के बीच श्रीमान् चान्द-मलजी, शङ्करलालजी आदि श्रावकों की सेवा विशेष उल्लेखनीय रही। चातुर्मास के अन्त में अनेक गाँवों के सघ अपने-अपने क्षेत्रों को पावन करने की विनति लिए उपस्थित हुआ जिनमें, झालावाड़ का सघ भी उपस्थित था।

झालावाड श्री सघ चाहता था कि गुरुदेव हमारे प्रान्त को पावन करे। तदनुसार गुरुदेवने चातुर्मास समाप्ति के बाद झालावाड़ की ओर बिहार कर दिया। क्रमश बाघपुरा गुरुदेव पधारे जहाँ वर्षों से सघ में वैमनस्य चलता था।

यह वैमनस्य केवल गाँव तकही सीमित नही था इसका विष आसपास के गावों तक में व्याप्त हो चुका था किन्तु गुरुदेवने उसे मिटा दिया। श्री सघमें अपूर्व शान्ति से उल्लास छा गया। वहाँसे गुरूदेव का विहार भोमट प्रात में हुवा। वहाँ के क्षेत्र को पावन कर गुरूदेव गोगुदा पधारे। यहाँ अनेक स्थानो से चातुर्मासार्थ विनतियाँ आने लगीं। बाघपुरा के विवेकशील सघ ने गुरुदेव का

चातुर्मास करवाने की अपनी भावना प्रगट की। गुरुदेव ने उसे स्वीकार कर लिया। वहाँ से विहार कर आसपास के अनेक क्षेत्रों को पावन कर चातुर्मासार्थ आमपुरा की ओर विहार कर दिया।

सं २००० का चातुर्मास आमपुरा में –

गुरुदेव का आषाढ़शुक्ला सप्तमी के दिन चातुर्मासार्थ आमपुरा आगमन हुआ। यहाँ शंकरलालजी कोठारी के मकान में गुरुदेवका विराजना हुआ। मन्दिर के उपाश्रय में गुरुदेव का प्रतिदिन व्याख्यान होता था। जैन-अजैन सभी वर्ग उपदेश का लाभ उठाते रहे। ११ १७, ११, ९, ८ आदि अनेक तपस्यायें एवं पौषध उपवास अगणित हुए। भारी नदी की बाढ़ से पीड़ित लोगों को गुरुदेव के उपदेश से स्थानीय लोगों ने बड़ी सहायता की। बाहर के दर्शनार्थी भी बड़ी संख्या में आते थे। चातुर्मास समाप्ति के विहार के दिन का विदाई समारोह अपूर्व रहा। मादड़ीवाले गुमानीलालजी चार माह तक गुरुदेव की सेवामें ही रहे थे। उनके विशेष आग्रह पर गुरुदेवने मादड़ी की तरफ विहार कर दिया।

वहाँ से क्रमशः विहार करते हुए मंदसौर आये। वहाँ के रामजी सा० ने महाराजश्री की सेवा की। विहार कर पीपल्यासे देवास पधारे वहाँ पर मेवाड़ भूपतजी म के पास से निकल कर चान्द मुनिजी आये और महाराजश्री से विनति की कि मुझे अपने पास रखलो। गुरुदेवने वात्सल्यभावसे फरमाया कि इसतरह भ्रमण करने से संयम दूषित होता है अतः अच्छा तो यही है कि आप पुनः मेवाड़ भूपतजी के पास ही चले जाइए। माळवाके संघ का आग्रह था

कि आप तो क्षमा के सागर हैं अत शरणागत की रक्षा तो होनी ही चाहिए। देवास में शास्त्रमर्यादानुसार चान्दमुनि को महाराजश्री ने अपने साथ में शामिल कर लिया।

अभीतक महाराजश्री का विहार क्षेत्र मारवाड और मेवाड तक ही सीमित था। अत उनके मनमें आया कि क्यों नहीं विहार क्षेत्र को विस्तृत किया जाय ? जैन धर्म के प्रचार की उद्भट भावना जिसके दिल में होती है वह सकुचित क्षेत्र में कैसे रह सकता है। सोचा कि झालावाड से अहमदाबाद (गुजरात) समीप ही पडता है अत फरसा जाय। पर वयोवृद्ध मुनिश्री कन्हैयालालजी म का स्वास्थ्य ऐसा नहीं था कि इतना लम्बा विहार कर सकते। अन्त में यह निर्णय हुआ कि मुनिश्री कन्हैयालालजी म सा की सेवामें चान्दमुनि को रखा जाय। तदनुसार मुनिश्री कन्हैयालालजी म सा एव चान्दमुनि ठाना दो मेवाड की तरफ प्रस्थित हुए एव मैंने और युवाचार्यश्रीने अहमदाबाद की ओर विहार कर दिया। अहमदाबाद पहुँचने पर दरियापुरी सप्रदाय के सन्त पूज्यश्री ईश्वरलालजी म सा प मुनिश्री भाईचन्द्रजी म सा और सदानन्दी श्री छोटालालजी म सा आदि सन्त सतियों का मधुर मिलन हुआ। सम्मिलित व्याख्यान हुआ करते थे। जनता मे धर्म ध्यान का उल्लास अपूर्व था। इतने में ही वल्भनगर (मेवाड़) से श्रीसव की ओर से सन्देश आया कि चान्दमुनि, मुनिश्री कन्हैयालालजी म सा को एकाकी छोडकर चला गया है। बडी वेदना हुई। पर उपाय क्या था ? महाराजसा थे तो अहमदाबाद, पर मन वड़े महाराजश्री में लगा हुआ था। अब सौराष्ट्र में जाने का विचार स्थगित कर युवाचार्यश्रीने पुन मेवाड़ की ओर विहार कर दिया। मार्ग में साबरमती, कलोल सिद्धपुर होते

चातुर्मास करवाने की अपनी भावना प्रगट की। गुरुदेव ने उसे स्वीकार कर लिया। वहाँ से विहार कर आसपास के अनेक क्षेत्रों को पावन कर चातुर्मासार्थ बापपुरा की ओर विहार कर दिया।

सं० २००० का चातुर्मास बापपुरा में —

गुरुदेव का आषाढ़शुक्ला सप्तमी के दिन चातुर्मासार्थ बापपुरा आगमन हुआ। वहाँ शंकरलालजी कोठारी के मकान में गुरुदेवका विराजना हुआ। मन्दिर के उपाश्रय में गुरुदेव का प्रतिदिन व्याख्यान होता था। जैन-अजैन सभी वर्ग उपदेश का लाभ उठाते रहे। ३१, १७, ११, ६, ८ आदि अनेक तपश्चर्या एवं पौषध उपवास अगणित हुए। खारी नदी की बाढ़ से पीड़ित लोगों को गुरुदेव के उपदेश से स्थानीय लोगों ने बड़ी सहायता दी। बाहर के दर्शनार्थी भी बड़ी संख्या में आते थे। चातुर्मास समाप्ति के विहार के दिन का विहार समारोह अपूर्व रहा। मादड़ीवाले भूमानीशंकरजी चार मास तक गुरुदेव की सेवामें ही रहे थे। उनके विशेष आग्रह पर गुरुदेवने मादड़ी की तरफ विहार कर दिया।

वहाँ से क्रमशः विहार करते हुए भगोला आये। वहाँ के रावजी सा० ने महाराजश्री की सेवा की। विहार कर घोरावासे देवास पधारे वहाँ पर मेवाड़ भूषणजी म० के पास से निकल कर चान्द मुनिजी आये और महाराजश्री से विनति की, कि मुझे अपने पास रखलो। गुरुदेवने वात्सल्यभावसे फरमाया कि इतस्ततः भ्रमण करने से संयम दूषित होता है अतः अच्छा तो यही है कि आप पुनः मेवाड़ भूषणजी के पास ही चले जाइए। मगलावाड़ संघ का आग्रह था

कि आप तो क्षमा के सागर हैं अत शरणागत की रक्षा तो होनी ही चाहिए। देवास में शास्त्रमर्यादानुसार चान्दमुनि को महाराजश्री ने अपने साथ में शामिल कर लिया।

अभीतक महाराजश्री का विहार क्षेत्र मारवाड और मेवाड तक ही सीमित था। अत उनके मनमें आया कि क्यों नहीं विहार क्षेत्र को विस्तृत किया जाय ? जैन धर्म के प्रचार की उद्भट भावना जिसके दिल में होती है वह सकुचित क्षेत्र में कैसे रह सकता है। सोचा कि झालावाड से अहमदाबाद (गुजरात) समीप ही पडता है अत फरसा जाय। पर वयोवृद्ध मुनिश्री कन्हैयालालजी म. का स्वास्थ्य ऐसा नहीं था कि इतना लम्बा विहार कर सकते। अन्त में यह निर्णय हुआ कि मुनिश्री कन्हैयालालजी म सा की सेवामें चान्दमुनि को रखा जाय। तदनुसार मुनिश्री कन्हैयालालजी म सा एव चान्दमुनि ठाना दो मेवाड़ की तरफ प्रस्थित हुए एव मैंने और युवाचार्यश्री ने अहमदाबाद की ओर विहार कर दिया। अहमदाबाद पहुँचने पर दरियापुरी सप्रदाय के सन्त पूज्यश्री ईश्वरलालजी म सा प मुनिश्री भाईचन्द्रजी म सा और सदानन्दी श्री छोटालालजी म सा आदि सन्त सतियों का मधुर मिलन हुआ। सम्मिलित व्याख्यान हुआ करते थे। जनता में धर्म ध्यान का उल्लास अपूर्व था। इतने में ही वल्लभनगर (मेवाड़) से श्रीसघ की ओर से सन्देश आया कि चान्दमुनि, मुनिश्री कन्हैयालालजी म सा को एकाकी छोडकर चला गया है। बडी वेदना हुई। पर उपाय क्या था ? महाराजसा थे तो अहमदाबाद, पर मन बडे महाराजश्री में लगा हुआ था। अब सौराष्ट्र में जाने का विचार स्थगित कर युवाचार्यश्रीने पुन मेवाड़ की ओर विहार कर दिया। मार्ग में साबरमती, कलोल सिद्धपुर होते

हुए पालनपुर पधारे वहाँ पूज्यश्री घासीलालजी म सा से मिलन हुआ। पालनपुर से आबुरोड, पींडवाड़ा, मालवचौरा होकर सरपाल पहुंचे। वहाँ नांदेशमा असवंतगढ़, गोगुन्दा का श्रावक संघ चातुर्मास की विनती के लिये आया। पर गुरुदेवने फरमाया कि अबतक मैं बड़े महाराजश्री कन्हैयालालजी के दर्शन नहीं कर लू तब तक किसी को भी चातुर्मास की स्वीकृति नहीं दे सकता। वहाँ से गुरुदेव उग्रविहार कर मुनिश्री कन्हैयालालजी म सा की सेवामें वल्लभनगर पहुँच गये। वहाँ नांदेशमा सरपाल गोगुन्दा नाई आदि गावों का संघ चातुर्मास की विनती के लिए आ पहुँचा। विशिष्ट परोपकार को ध्यान में रखकर गुरुदेवने नांदेशमा संघ की विनती को मानली। गुरुदेव के चातुर्मास की स्वीकृति से नांदेशमा संघ को अपार हर्ष हुआ।

सं. २००१ का चौमासा नाई —

वल्लभनगर से गुरुदेव ने नांदेशमा चातुर्मास करने की भावना से विहार कर दिया। डबोक, देबारी भादि क्षेत्रों को पावन करते हुए "नाई" पधारे। गुरुदेव के नाई पदार्पण से लोगों में धार्मिक भावना जुगती हो गई। साथ ही वर्षा भी इतनी हुई की नदी नालों में बाढ़ आ गई थी। सर्वत्र पानी ही पानी दृष्टिगोचर होता था। उस समय गुरुदेवश्री कन्हैयालालजी म सा के पैरों में अचानक ही पीड़ा हो गई। अनेक उपचार करने पर भी पीड़ा बढ़ती ही गई। मजबूर होकर गुरुदेव को यहां चातुर्मास करना पड़ा। नांदेशमा संघ गुरुदेव के आगमन की बड़ी उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहा था किन्तु भवितव्यता ऐसी ही थी। यह अपूर्व लाभ अनायास ही

नाई सघ को मिल गया। गुरूदेव के चातुर्मास से परोपकार के अच्छे अच्छे काम हुए। अनेकोंने जीवहिंसा, मद्य, मास आदि व्यसनों का त्याग किया। तपश्चर्या भी खूब हुई। यहाँ के सघ ने आगत बन्धुओंकी एवं गुरूदेव की जो सेवा की वह सदैव प्रशसा के शब्दों से अंकित रहेगी।

दीपमालिकाके अवसर पर हम तीनों सन्त एक साथ बीमार पड़ गये। यहाँ तक कि उठना बैठना चलना फिरना भी बन्द हो गया था। जब उदयपुर में विराजित दिवाकरजी म सा के सन्तों को इस बात का पता चला तो उसी समय सन्त सेवा में आ गये। सेवार्थ आये सन्तोंने जो अपनी सेवा वृत्ति का परिचय दिया वह अत्यन्त प्रशंसनीय है। कुछ स्वस्थता के बाद सन्त. पुन उदयपुर चले गये। चातुर्मास समाप्ति के बाद भी स्वास्थ्य लाभ के लिए यहाँ कुछ समय तक रुकना पड़ा। वहाँ से पूर्ण स्वास्थ्य लाभ कर गुरूदेव झालावाड-भींमट अनेक छोटेबड़े क्षेत्रों को पावन करते हुए उदयपुर पधारे। वहाँ महावीर मंडल में ठहरे। प्रतिदिन व्याख्यान होता था। वहाँ कुछ दिन विराज कर गुरूदेव वहाँ से विहार कर गुड़ली देबारी आदि क्षेत्रों को फरस कर होली चातुर्मासार्थ खेमली पधारे। यहाँ पर अनेक उपकार के काम हुए।

क्रमश बिहार कर घासा पधारे मेवाडभूषण जी म० से मिलन हुआ, फिर पलाना, सिन्दू, सागोल, बनेडिया देवरिया, गगापुर, पोटला आदि अनेकों ग्रामों को स्पर्शते हुए आषाढ शुक्ला नवमी के दिन गुरूदेव चातुर्मासार्थ कुंवारियाँ पधारे।

वि स २००२ क चौमासा कुंवारियाँ

यहाँ के संघ में पारस्परिक वैमनस्य रहने के बावजूद भी श्रीमान् सेठ हीरालालजी गणेशलालजी सा. पिपाड़ा का सहयोग अपूर्व रहा। आगन्तुक दर्शनार्थियों के भोजनादि की व्यवस्था की। साथ ही इनके मातुश्री ने इस चातुर्मास में बड़ी वीरता का परिचय दिया। चातुर्मास को सफल बनाने का सारा श्रेय इन्हीं को है। यहाँ का चातुर्मास पूर्णकर गुरुदेवने बदनौरा प्रांत की ओर विहार कर दिया।

बदनौरा आसिंद चैनपुरा आदि गावों को स्पर्शते हुए गुरुदेव पड़ासौली पधारे। यहाँ चतुर्मास की विनति के लिए मसुदा का संघ आया। अत्याग्रह करने पर गुरुदेव ने मसूदा क्षेत्र को फरसने के बाद चातुर्मास करने की स्वीकृति दे दी। गुरुदेव का मसुदा पदार्पण हुआ। यहाँ के लोगों की भावना देखकर आगामी चातुर्मास यहीं पर व्यतीत करने का विचार किया।

वि. सं. २००३ का चौमासा मसुदा –

मसुदा प्राचीन काल से ही जैनों का प्रमुख केन्द्र रहा है। मसुदा के संघ में शास्त्रस्वाध्यायके प्रति रुचि रखने वालोंकी कमी नहीं है। पूज्याचार्यश्री जैसे शास्त्रज्ञ मुनियों के चौमासे को सुनकर स्वाध्याय प्रेमियों का हृदय आनन्द और उल्लास से भर गया। मसूदा चौमासार्थ पधारते हुए गुरुदेव अजमेर पधारे यहाँ पं. मुनिश्री कस्तुरचन्दजी म. सा. से मिलन हुआ। सेठ [illegible] की हवेली पर सम्मिलित व्याख्यान होता था। यहाँ से विहारकर ब्यावर पधारे। यहाँ कुन्दनभवन में श्री दिवाकरजी म. सा० की सन्तमण्डली से मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई। अनेक सन्तों का समागम उल्लास प्रद रहा।

ब्यावरसे विहार कर गुरुदेव ने अनेक क्षेत्रों को पावन करते हुए आषाढ शुक्ला दसमी के दिन चातुर्मासार्थ मसुदा क्षेत्रमें प्रवेश किया। यहाँ साम्प्रदायिक वातावरण उमड पड़ा था, पर गुरुदेव के शान्तस्वभाव के कारण आगे उग्र रूप न ले सका। जहाँ शान्ति का सागर उमड़ता है वहाँ द्वेषाग्निका प्रभाव स्वत. शान्त हो जाता है। इधर गोविन्दगढ़ से पूज्य मोतीलालजी म सा. ने कुछ ऐसे चर्चास्पद पत्र भेजे कि अगर उसपर ध्यान दिया जाता तो साम्प्रदायिक वातावरण और भी उग्र बन जाता। किन्तु गुरुदेव अपने विरोधियो के प्रति भी सदा प्रेम की ही भावना रखते थे। अत गुरुदेव के शान्त स्वभाव से प्रभावित वहाँ के विवेकवान श्रावकोंने उन पत्रो पर तनिक भी ध्यान नहीं दिया।

चातुर्मास के बाद रातकोट, बादनवाड़ा, टाटोटी, भिनाय विजयनगर आदि क्षेत्रो को पावन करते हुए गुरुदेव गुलाबपुरा पधारे। यहाँ से विहार का उपक्रम रखा जा रहा था कि चितौडगढ़ से दिवाकरजी म की स्वर्णजयन्ती में सम्मिलित होने का स्नेहांकित आमत्रण पाकर गुरुदेव चितोड़ पधारे। वहाँ उ० प्यारचन्दजी म सा आदि मुनिवरों से मिलकर आनन्दविभोर हो गये। यही पर रेलमगरावाले भाइयों की विनति आगामी चौमासे के लिए स्वीकार की।

स. २००४ का चौमासा रेलमगरा –

चितोड़ से प्रस्थान कर राशमी आरणी पहुँना सौनियाणा, लाखोला, सहाड़ा, पोटला आदि अनेक गाम नगरो में विचरण कर जैनधर्म के मौलिक तत्वों का प्रचार और सयम पालते हुए

आषाढ सुदी को रेलमगरा चौमासा के लिये प्रवेश कर श्रीमान् कमललालजी मेहता की हवेली में विराजे। यद्यपि यहाँ स्थानकवासी समाज के अल्प ही घर हैं परन्तु गुरु महाराज के समन्वयवादी विचार होने से जैनेतर जनता का तथा तेरापन्थी भाइयों का व्याख्यानों में उल्लेखनीय सहयोग रहा। बीच में पर विघ्न संतोषियों ने बखेड़ा खड़ा करने का प्रयत्न भी भरसक किया पर उन्हें अपने कार्य में विफलता का ही मुँह देखना पड़ा। बल्कि जो पुराने झगड़े थे वे भी मिट गये। आगन्तुक अतिथियों का समुचित स्वागत सेठ सा श्री सोमचन्दजी सांगीलालजी सा मेहता द्वारा होता रहा। धर्मध्यान अच्छा हुआ। वर्षावास समाप्त कर गुरुदेवने अन्यत्र विहार कर दिया।

सं २०४ का चौमासा बापपुरा –

बापपुरा का श्रीसंघ महाराजश्री की विद्वत्ता और सरल स्वभाव से भलिभाँति परिचित हो चुका था। अतः चौमासे की विनती करने के लिए अनेकबार महाराजश्री की सेवामें पहुँचा। महाराज श्रीनेधर्म का विशेष लाभ जानकर स्वीकृति देदी। नाई से बापपुरा के बीचका मार्ग बड़ा विकट है। इस मार्ग को पार करना एक बहुत बड़ा साहस का काम था। आठ-आठ मील के घने जंगलों के कारण सूर्य के दर्शन दुर्लभ थे। जंगल तो इस जीवन में बहुतेरे देख चुका हूँ। किन्तु इस विराट प्रकृति रम्य जंगल को देखने का गुरुदेव के साथ मुझे भी अवसर मिला था। ज्यों-ज्यों जंगल के बीच से हम गुजर रहे थे नसों में एक अनिर्वचनीय आनन्द की अगाढाई अनुभूति की उमंग और रोमांस की रोचकता मानोरह रह कर मनको गुदगुदाकर रही थी औररह रह कर हृदय मानो अलौकिक आवावेश से भर उठता। कुछ

क्षण पहले की भूख-प्यास ना जाने कहाँ लापता होचली। सोचने लगा-अहा! यदि यहीं रम जाता। मन एकाएक अतीत के वनजीवन कोमुनिजीवन रंगीनियो मे रमने लग पडा। मानस पटलपर महाकवि कालिदास के अमर शाकुन्तल के पन्ने पलटने लगे। महर्षि कण्व के आश्रम का चित्र इस भूमि पर दृष्टिगोचर होता था।

पहाड़ों के नीचे ऊबड-खाबड़ भूमि, कहीं-कहीं समतलभी थी, और ऊपर गगनचुम्बी विशाल वृक्षो की सघन सुघड छाया। छाया से छिपा हुआ आकाशका अवकाश, जगल की कटाई के कारण कहो-कहो सावकाश भी खुली फैली जगह वृक्षो की चौड़ाई, ऊंचाई और लम्बाई देखकर आखो को आश्चर्य हो रहा था। अनेक प्रकारके वृक्ष, भाँति-भाँति की लताएँ। कहीं कहीं वृक्षो पर फैली घनी लताएँ उनकी अभिन्न शाखा-जैसी दीख रही थीं। पहाड़ी झरनो का कल-कल निनाद मनको हर्षा विभोर कर देता था। पहाड़ो की रचना बड़ी नयनरम्य थी। इस वन में वाघ, शेर, चिते आदि हिंस्र जगली प्राणियों की कमी नहीं है। यहाँ का मुख्य व्यवसाय बाँस हरड़ा आदि का है। इन पहाड़ों में स्थल-स्थल पर आदिवासी भील लोगों की बस्ती है। शहरी वातावरण से शून्य ये आदिवासी अतिथियों का स्वागत बड़े प्रेम से करते हैं। उनके द्वार से कोई अतिथि भूखा नहीं जा सकता। जगह-जगह नाई (गाव) के श्रावकों की दुकाने हैं। साथ में चलने वाले श्रावकोंने महाराजश्री की सेवामें विनति की, कि हमेंभी आहार पानी वहराने का लाभ मिलना चाहिए, पर महाराजश्री ने फरमाया की ऐसा करना जेन आगम के और पूर्वाचार्यों की मर्यादा के विरुद्ध है। जब संयम पालना है तो उसमें सदोषता नहीं आनी चाहिए। मुक्तिमार्ग से विचलित आचरण अनुचित है। चाहे कितना ही परिषह सहन करना पडे मैं अपनी आगम समर्यादित परम्परा नहीं छोड़ सकता।

गुरुदेवने वहाँ के स्थाई दूकानदारों से जो कुछ भी निर्दोष मिला उसे ग्रहण किया । इस प्रकार विकट वन को पार कर आसाढ शुक्ला सप्तमी को वापपुरा पहुँचे । वहाँ चौमासे में कई बड़ा-बड़ी तपस्याएँ हुई । प्रभावनाएँ भी प्रचुर परिमाण में हुई । मलकापुर का संघ तथा आसपास के गाँवों का संघ समय-समय गुरुदेव के दर्शन का लाभ उठाते थे। यहाँ के ठेकेदार (कलाल) गुरुदेव के उपदेश से बड़े प्रभावित हुए । यहाँ तक कि उन्होंने सदाके लिए मांस-मांस त्यागकर शुद्ध धर्मको स्वीकार किया । ठेकेदार लोग उत्साह से व्याख्यान अवश्य करते थे। यहाँ के संघने भी उनकी धार्मिक भावना की कदर की उनके द्वारा बाटी गई प्रभावना स्थानीय श्रावक बड़े प्रेम से ग्रहण करता था । चार माह तक जो आध्यात्मिक रस धारा प्रवाहित की गई उसकी स्मृति आज भी यथावत बनी हुई है। चातुर्मास समाप्त कर गुरुदेवने अन्य क्षेत्रों को धर्म वाणी से पावन करने के निमित्त विहार कर दिया ।

धर्म की शुद्ध परिभाषा के अनुसार धर्म उन सुनिश्चित नियमों की संज्ञा है जिनसे व्यक्ति का जीवन समाज का जीवन और विश्व प्रवृत्ति का कार्य धारण किया जाता था धर्म की मान्यता है कि ये तीनों क्षेत्र अलग-अलग हैं उनमें भेद की दीवारें नहीं हैं और तीनों में परस्पर मेल बिठाया जा सकता है । इस युक्ति की खोज ही धार्मिक साधना है । दूसरे व्यक्ति जिन्हें हम सन्त महात्मा आचार्य कहते हैं संकल्प की दृढ़ता और कर्म की शक्ति से व्यक्ति समाज और विश्व के समन्वय को ढूँढ निकालते हैं । इससे उनके जीवन में प्रकाश का एक दीपक प्रज्वलित हो उठता है । जिससे और बहुतों को मार्ग सूझता है कि कैसे वे भी अपने जीवन में अन्धकार को

हटा कर उस प्रकाश को, उस शान्ति को, उस बड़े आनन्द को और मनुष्यों के साथ अद्रोह और सेवा की भावना में प्रवृत्त होने की युक्ति प्राप्त करे, जिसका नाम वास्तविक जीवन है। तात्त्विक दृष्टि से देखा जाय तो जीवन न बहुत साधन सचय करने के लिए है, न ऊँची पद प्रतिष्ठा पाने के लिए है और न पोथी पुस्तकों की बहुतसी जानकारी बटोरने के लिए है। जीवन तो सदाचार के लिए है। उत्कृष्ट सयम की साधना के लिए है। सदाचार ही तप है। मनुष्य में जैसे ही सदाचार का प्रवेश होता है, उसमें धर्म, ज्ञान, तप, सब कुछ सचित होने लगता है। गुण समूह की प्राप्ति से ही मनुष्य का व्यक्तित्व बनता है। साधारण बुद्धि के मनुष्य धर्म और तप का अर्थ सिद्धि और चमत्कार समझते हैं। सदाचार का चमत्कार तो ठीक ही है। पर वह देवताओं के यहाँ से टपकने वाली वस्तु नहीं है। इस भवन की एक-एक ईट हमें अपने हाथों से चूननी पड़ती है तभी यह भवन रहने योग्य बनता है और उसमें अनेक सद्‌गुणों की शान्तिप्रद वायु बहती है।

आज के इस अशान्त जगत में द्रोह बुद्धि से सोचना और कार्य करना तो आसान है पर उसमें से अद्रोह और शान्ति का मार्ग निकाल लेना ऐसा महान कार्य है जिसका उपकार मानवजाति कभी भूल नहीं सकती। आज हमारा मुनि समुदाय भी अद्रोह बुद्धि से ही समाज का उत्थान कर सकता है, यह सुनिश्चित है। हमारे चरित्रनायकजी इसी सिद्धान्त को मानने वाले और जीवन में उतारने वाले धर्मवीर सन्त थे।

युवाचार्यजी ने सुना कि पूज्य मोतीलालजी म सा के समीप जूनदा गाँव में वहाँ के रहनेवाले भाई श्री मागीलालजी

हिगढ़ मार्गशीर्ष में दीक्षा ग्रहण कर रहे हैं। इनकी आत्मा में गुरु भ्रातृत्वप्रेम जागृत हो उठा। अद्रोह की भावना प्रबलतम हो उठा। उन्होंने सम्प्रदाय संघटन का यह अपूर्व अवसर देखा। वे बिना आमंत्रण के ही कुमठा गाँव में पहुँच गये। इनके आगमन से पू० मोतीलालजी म. सा. के मनमें ईर्ष्या की ज्वाला भड़क उठी। यहाँ तक कि स्थानीय श्रावकों को इन्हें ठहरने के लिए स्थानतक न देनेकी व्यवस्था करदी थी। गुरुदेव गाँव में सब जगह घूमे किन्तु इन्हें ठहरने के लिए कोई स्थान नहीं मिला। फिर भी इस सन्त का मन क्रोध द्वेष के स्पर्श से अछूता रहा। गुरुदेव की शान्तमुद्रा ने गाँव की पटेल जाति को बड़ा प्रभावित कर दिया। वे स्वयं के पंचायती मन्दिर में ले जाने का आग्रह कर रहे थे। इतने में स्थानीय श्वेताम्बरानुयायी श्रीमान मांगीलालजी बाफणा सविनय गुरुदेव से प्रार्थना की और पटेल बन्धुओं से नम्रतापूर्वक समझाकर अपना निजि मकान ठहरने के लिए खोल दिया। गुरुदेव एक महान ध्येय को लेकर आये थे वे समझते थे कि ध्येय जितना महान होगा उसका रास्ता उतना ही लम्बा और बीहड़ होता है। और ध्येय की सफलता मौन में ही है। गुरुदेव विरोधी वातावरण में भी अत्यन्त शान्त थे। उनकी कोई निन्दा भी करता तो उसका प्रत्युत्तर वह मिष्ठतापूर्ण शब्दों से देते थे। सन्त दूसरे के दोषों को छोड़कर गुण को ही खोजते रहते हैं। मलयाचल के चन्दन वृक्षों पर लिपटे हुए सर्पों के विष को न ग्रहणकर वायु चन्दनकी सुगन्धि का ही वहन करती है। गुरुदेव की गुण ग्राहकता से एवं उनके चारित्र की सुगन्ध धीरे धीरे लोगों तक पहुँचने लगी। अन्ततः स्थानीय वातावरण गुरुदेव के अनुकूल हो गया। युवाचार्य की शान्तिप्रियता से पूज्य मोतीलालजी म. सा.

की क्रोधाग्नि धीरे-धीरे शान्त होने लगी। साथ ही गाँववालोंने पूज्य मोतीलालजी म. सा. को साफ शब्दों में कह दिया कि जब तक आप सन्तों का आपस में मेल नहीं हो जाता तब तक आप के दीक्षा कार्य मे हमारा कोई सहयोग नहीं रहेगा। श्रावकों की इस खरी और स्पष्ट बात से पूज्य मोतीलालजी म सा युवाचार्य श्री मांगीलालजी म सा से मिले। अनेक बातों मे चर्चा हुई। अन्तत पूज्य मोतीलालजी म. सा से युवाचार्य श्री का मेल हो गया। वर्षों से जो आपस में मन-मुटाव था गुरुदेव के विशाल हृदयने उसे एक ही क्षण में मिटा दिया। गुरुदेव की अन्तर आत्मा बोल उठी- "क्या भरोसा है जीवन का? प्रभात के तारे की तरह यह क्षण-भगुर है। मनुष्य कितना पागल है जो क्षणिक जीवन के खातिर रागद्वेष के भयकर गर्त में पड़कर अपनी आत्मा को मलीन बनाता है। उनके पीछे लगकर आपा भी भूल जाता है। दोनों सन्तों के प्रेमपूर्ण मिलन से संघ में भी आनन्द छा गया। सन्त-मिलन से दीक्षा-उत्सव में भी अपर्व उत्साह नजर आता था किन्तु गुरुदेव का पावन मन सम्प्रदाय के संकीर्ण वातावरण से अत्यन्त उद्विग्न हो उठा। उन्हे अपना युवाचार्यपद सयमी साधना के लिए बाधक दृष्टिगोचर होने लगा।

सत्ता का त्यागः—

मानव सत्ता का दास है, अधिकार लिप्सा का गुलाम है। गृहस्थ-जीवन में क्या, साधु-जीवन में भी सत्ता-मोह के रोग से छुटकारा नही हो पाता है। ऊँचे से ऊँचे साधक भी सत्ता के प्रश्न पर पहुँच कर लड़खड़ा जाते हैं। जैन धर्म की

एक के बाद एक होने वाली शाखा प्रशाखाओं के मूल में यही सत्ता-लोलुपता और अधिकार लिप्सा रही है। आचार्य आदि पदवियों के लिए कितना कलह और कितनी विडम्बना होता यह किसी से छुपा नहीं है। पूज्य गुरुदेव को युवाचार्य पद के पश्चात जो कटु अनुभव हुए उससे उन्होंने निश्चय किया कि अगर मुझे आत्म साधना करनी है तो पद-अधिकार के प्रपंच से दूर रहना होगा। क्योंकि केवल जनता की मांग है और वह प्रायः अस्वस्थ जनक होती है। गुरुदेवने पद त्याग करने का निश्चय किया। दीक्षा का अवसर था। हजारों का जनसमूह एकत्र था। गुरुदेवने शान्त मुद्रा से यह घोषित किया कि मैं युवाचार्य का पद त्याग रहा हूँ एवं भविष्य में भी केवल मुनि पद के सिवाय मैं किसी भी प्रकार का पद ग्रहण नहीं करूँगा। गुरुदेव की इस प्रकार की अचानक घोषणा से उपस्थित जनता अवाक् हो गई। गुरुदेव के इस महान त्याग से लोग उनकी मुक्त कण्ठ से प्रशंसा करने लगे। धन्य हैं ऐसे सन्त को जो चारित्रधन की रक्षा के लिए इतना बड़ा त्याग करते हैं।

क्रमशः वहाँ से गुरुदेव नाई पधारे। नाई से विहार कर उदयपुर पधारे। यहाँ रामपुरा (मध्यभारत) के श्रद्धालु श्रावक श्री मोतीलालजी सुराणा कार्य वश आये और महाराज श्री के विराट शास्त्रीय ज्ञान को देखकर मन ही मन अभिलाषा करने लगे कि क्या ही अच्छा हो कि इन ज्ञान और क्रियाशील मुनिवरों का वर्षावास हमारे नगर में व्यतीत हो। इससे हमारा ही नहीं न जाने कितने भावों का कल्याण होगा। श्री सुराणाजीने अपनी मनोभावना म० श्री के चरणों में व्यक्त की। सच्ची भावना कभी न कभी सफल होकर ही रहती है।

विशेष लाभ जानकर महाराज श्री ने कहा कि मैं पूज्य मोतीलालजी म. सा. की आज्ञा में हूँ। उनकी आज्ञा मिलने पर ही मैं कुछ कह सकता हूं। क्रमश. रामपुरा का प्रतिनिधि मण्डल पू. महाराज श्री की सेवा में आया और उनसे आज्ञा प्राप्त करवा कर गुरुदेवने आगामी वर्षावास रामपुरा में व्यतीत करने का निश्चय किया।

स २००६ चौमासा रामपुरा —

उदयपुर से प्रस्थान कर मार्ग में विचरते हुए क्रमश निंबाहेडा पहुँचे। वहाँ पर दक्षिण विहारी पूज्यश्री आनन्द ऋषिजी म के पधारने की सूचना मिल गई। गुरुदेव ने उनके सामने जाकर उनका स्वागत किया। यहाँ पर कुछ पक्षपात का वातावरण हो चला था, कतिपय श्रावकों ने महाराजश्री को अलग ठहराने का प्रपच किया था। परमपूज्य श्री आनन्द ऋषिजी म सा के स्नेहने ऐसा न होने दिया, वहाँ आनन्द ऋषिजी म० के साथ कुछ दिन ठहर कर लोगों में धार्मिक भावनाकी जाग्रति की। वहाँसे क्रमश नीमच मनासा और कुकडेश्वर होते हुए आषाढ शुक्ला दसमी के दिन चातुर्मासार्थ रामपुरा में प्रवेश किया। यहाँ के श्रावक बडे विचक्षण हैं। एक प्रकार से यह साधुओं का परीक्षण स्थल है। आचारहीन या शिथिलाचारियों को यहाँ का श्रावकवर्ग तत्काल पलायन कर देता है। शुद्धाचारियों का स्वागत भी उतने ही उत्साह के साथ करने में गौरवान्वित होते हैं। कथा–कहानियों के बजाय आगम सुनने में उनकी रुचि रहती है। द्रव्यानुयोग के अनुगामी भला शिथिलता कैसे बरदाश्त कर सकते हैं।

महाराजश्री के व्याख्यान का ऐसा प्रभाव पड़ा कि न केवल वहाँ की जैन जनता स्वाध्याय में ही प्रगतिमान रही,

अपितु तपश्चर्या से भी पश्चात् पद न रही। आत्मा निमित्तवासी है। जैसा निमित्त मिलता है वैसा ही आचरण स्वाभाविक है।

जीवनप्रेरक सन्त का वियोग :–

भादों की पूर्णिमा की शामको बड़े महाराज मुनिश्री कन्है यालालजी म. सा. ने प्रतिक्रमण प्रत्याख्यान किये। सब साथी मुनियों को भी वैसा ही करवाया। प्रतिक्रमणानन्तर श्रावकों के विशिष्ट आग्रह से चौबीसी और दो प्रभु के स्तवन भी सुनाये। रात्री को लघुनीति के लिए जानेपर अचानक पैर फिसल गया और ऐसे गिरे कि फिर उठ न सके। तत्काल डाक्टर बुलाया गया किन्तु डाक्टर के आने के पूर्व ही उनका आत्मा देह छोड़कर चला गया था। इनके स्वर्गवास से सर्वत्र शोक छा गया। वे अत्यन्त भद्र और सरलप्रकृति के सन्त थे। पुनित संयममार्ग में प्रव्रजित होने के पश्चात् तो आपने अतीव आध्यात्मिक प्रगति की। निरन्तर शास्त्रस्वाध्याय में तल्लीन रहना तपश्चर्या करना वैयावृत्य आदि आपकी विशेषताओं से आपने साधु समुदाय में एक विशिष्ट स्थान पा लिया था। स्वर्गवास के दो दिन पूर्व ही आपको अपनी मृत्यु का आभास मिल चुका था। संयमनिष्ठ एव वर्षों के साथी एवं सच्चे स्थविर मुनि के स्वर्गवास से इनके दिलपर गहरी चोट पहुँची। महाराजश्री का मन इतना उद्विग्न रहने लगा कि चातुर्मास में स्वल्प समय के लिये स्थान परिवर्तन करना पड़ा। यों तो सभी को एकदिन शरीर छोड़ना ही पड़ता है, पर ने दिनों का साथ छूटता है तो मनमें अफसोस होना स्व ाविक है। चातुर्मास समाप्ति के गुरुदेव शारीरिक आवश्यकता वश कुछ दिन गाँव के बाहर रामद्वारे में ठहरे। वहाँ पूर्ण स्वास्थ्यलाभ कर मिगसर

वदी तेरस को विहार कर दिया। कुकडेश्वर, मनासा पधारे। यहाँ पर जैन अजैन जनताने बडी सख्या में महाराज सा० के व्याख्यानों से लाभ उठाया। क्रमश बेगू आये जहाँ मुनिश्री गन्नूलालजी म सा. ठाना ४ व मुनिश्री छोगालालजी म सा ठाना ५ का सहमिलन हुआ। वहाँ से विहार कर महाराजश्री सींगोली बिजौलिया बून्दी होते हुए कोटा पधारे। यहाँ धर्म प्रभावना विशेष रही। दीक्षार्थी देवीलाल के पिता यहाँ आये और अपने लाड़ले को महाराजश्री के चरणों मे सहर्ष सौंप-गये। पिता ने पुत्र की आत्मनिर्मलता को भॉप लिया था। कोटा से भवानीमण्डी जाने पर जैन दिवाकरजी म. सा के दर्शन का लाभ हुआ।

विहार करते हुए क्रमश अवतिका-उज्जैन पधारे। यह मालववासियों का सौभाग्य था कि ऐसे परमज्ञानी और आध्या-त्मिक मुनि का आगमन उनके नगर में हुआ। वहाँ का श्रावक समुदाय विशाल और श्रद्धालु है। व्याख्यान में सर्वाधिक सख्या रहा करती थी।

यहाँ से देवास व इन्दौर पधारे। मुनिश्री सौभाग्यमलजी महाराज सा का भी वहाँ पधारना हुआ। दोनों के सम्मिलित व्याख्यान होते थे। इन्दौर सघने चातुर्मास की विनति की। यहाँ के सघ प्रमुख कन्हैयालालजी सा भण्डारी ने दो बार विनती की कि इस वर्ष का चातुर्मास यहाँ ही फरमाया जावे तो अच्छा है। हमें भी आपकी वाणी का लाभ मिलना चाहिये। महाराजश्री ने फरमाया कि बड़ा शहर होने से पचम समिति का पालन यहाँ कैसे हो सकेगा ? इस बात से मैं मजबूर हूँ। बाद में उज्जैन नयापुराके प्रतिनिधि मण्डल के आने पर उनकी विनति स्वीकार हो गई।

सं २००७ का चौमासा अवन्तिका उज्जैन –

इन्दौर में उज्जैन के चातुर्मास निवास के बाद महाराजश्री ने वहाँ से विहार कर क्रमशः भारतीय इतिहास प्रसिद्ध धारा नगरी पधारे। राजा भोज की धारा किसी समय भारतीय संस्कृति और सभ्यता की प्रतीक थी। संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान अपनी वाग्धारा से सभा को रंजित किया करते थे। देश-विदेश के विद्वानों को गंभीर वाद-विवादों में परास्त करते रहने से सरस्वती का सतत साधना इस नगरी के नागरिकों का व्रत था। भारतीय इतिहास की अनेक महत्त्वपूर्ण घटनाओं का वह केन्द्रस्थान था। स्थानकवासी परम्परा की दृष्टि से भी धारा पूजनीय है। कारण कि पूज्य धर्मदासजी म सा की वह निर्वाणभूमि रही है। वहाँ से नागदा, बदनावर, रतलाम खाचरोद नागदा जंकशन आदि क्षेत्रों को अपनी अमृत वर्षिणी वाणी से पावन कर महाराज श्री आषाढ़ शुक्ला दसमी के दिन उज्जैन पधार गये। व्याख्यानों की धूम मच गई। जैन पाठशाला के विद्यार्थी और अध्यापक श्री सुजानमलजी शेठिया के भी प्रवचन कभी-कभी हुआ करते थे। धर्मध्यान के साथ तपश्चर्या भी खूब ही हुई। श्रावकों ने ज्ञान दान भी दिया जिसके परिणाम स्वरूप विपाक सूत्र,' 'साधु वन्दना,' और 'पद्माधर चरित्र' का प्रकाशन हुआ।

चातुर्मास की समाप्ति के बाद विहार कर गुरुदेव श्री समकसमपुरा होते हुए सरवर पधारे। वहाँ दीक्षार्थी भाई श्री देवीलालजी का दीक्षा मिगसर वदी ६ को संपन्न हुई और दीक्षा नाम पुष्कर मुनि रखा गया। वहाँ से तीर्थरवास मक्सी होते हुए गुरुदेव शाजापुर पधारे। यहाँ पर पुष्करमुनि की

बड़ी दीक्षा आगम विधि के साथ हुई। शाजापुर के संघने इस काम में बड़ा उत्साह बताया। यहाँ पर महाराजश्री के व्याख्यान का उपक्रम रचा जा रहा था। इतने में ही आकाशवाणी से संवाद प्रसारित संदेश सुना कि दिवाकरजी श्री चौथमलजी म. सा का स्वर्गवास हो गया है। सारा हर्ष, विषाद के रूप में बदल गया। मृतक आत्मा की शान्ति के लिए कायोत्सर्ग और श्रद्धांजलियाँ दी गई। वहाँ से सुजालपुर होते हुए सिहोर पहुँचे, जहाँ नन्दलालजी पितलियों के भव्य भवन में ठहरे और इन्ही की ओर से भक्तामर स्तोत्र का प्रकाशन हुआ। वहाँ से भोपाल पधारे वहाँ कुछ दिन ठहर कर शीघ्र ही भेलसा की ओर विहार का कार्यक्रम था, पर भोपाल के श्रद्धालु श्रावकोंकी विनतिको मानदे कर फागुन[होली]का चौमासा वहीं बिता कर क्रमश महावीर जयन्ती "बीना" में आकर मनाई। जहाँ दिगम्बर जैनोंने महाराज श्री के प्रति अच्छी भक्ति का परिचय दिया। इस प्रदेश में दिगम्बर सम्प्रदाय का बाहुल्य है। कही कही स्थानकवासी समाज है। उदाहरणार्थ पछार में महाराज पधारे तो श्रावकों ने कहा कि २० वर्ष बाद स्थानकवासी मुनियो का यहाँ पदार्पण हो रहा है।

शिवपुरी ग्वालियर राज्य का महत्त्वपूर्ण नगर है। इसकी प्राकृतिक छवि प्रेक्षणीय है। यहाँ जैन पाठशाला और उच्च शिक्षणालय भी है। मुनिविद्याविजयजी उनके अधिष्ठाता हैं। वह महाराजश्री से मिलने को स्थान पर आये थे और अपनी संस्था का निरीक्षण भी महाराजश्री से करवाया था। यहाँ से विहार लश्कर की ओर होना तय हुआ। स्मरण रहे कि यहाँ से भयकर जगल प्रारभ हो जाता है। मार्ग में जैन गृहस्थों के घर नहीं आते। यहाँ तक की मार्ग में ठहरने के स्थान भी

मुर्शीबद से ही नसीब होते हैं। ग्वालियर से गुरुदेव धौलपुर आये वहाँ से आगे की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में सड़वा नामक गाँव आता है। वहाँ रेल्वे स्टेशन पर ठहर कर गुरुदेव आहार के लिए गाँव में पहुँचे। कई घर घूमे किन्तु किंचित् भी आहार नहीं मिला। अन्तराय कर्मका उदय जान गुरुदेव अपने निवास स्थान पर लौट रहे थे। मार्ग में एक बड़ी हवेली के बाहर लोगों की बड़ी भीड़ को जमा होते देखा। गुरुदेव जब भीड़ के समीप आये तो लोगों के चेहरे अत्यन्त उदास थे। और घर के अन्दर से रुदन की भी आवाज आती थी। गुरुदेवने मकान भीड़ के दुःख को पहचान लिया और बड़े सांत्वना भरे शब्दों में पूछा—आप लोग बड़े व्यथीत मालूम होते हैं। इस घर में से रुदन की आवाज क्यों आ रही है? इसपर एक भाईने कहा! इस हवेली के मालिक का एकाकी लड़का अत्यन्त बीमार है और यह कुछ घटों का ही मेहमान है। गुरुदेव ने यह सुन उनसे कहा—अगर आप लोग चाहो तो मैं इस घर मे आ सकता हूँ? इसपर उपस्थित एक सज्जन गुरुदेव को साथ ले घर मे गए। गुरुदेव ने उस दुःखी बालक को मंगल पाठ सुनाया। गुरुदेव के मंगल शब्दों को सुन मूर्छित बालक ने आँखे खोली। और उसकी चोख के साथ करवट बदली। चेहरा चमकने लगा। गुरुदेव के मंगल पाठ से बालक को स्वस्थ होता देख उनके माता-पिता बड़े प्रभावित हुए। उन्होंने आहार पानी आदि से गुरुदेव की बड़ी सेवा की। वह हमेशा के लिए सन्तों का उपासक बन गया। जब कभी मुखवास्त्रिका वाले सन्तों को देखता तो उसके हृदय में भक्तिभक्ति का स्त्रोत उमड़ता है। और आहार पानी देकर अपनी असीम भक्ति प्रदर्शित करता है। यह था गुरुदेव के तपोमय चारित्रात्मा का प्रभाव।

वहाँ से विहार कर गुरुदेव आगरा पधारे। जहाँ पूज्य श्री पृथ्वीराज जी म सा एव श्यामलालजी म. सा. के शुभ दर्शन हुए। दोनों मूर्तियों के समागम का प्रभाव अद्भुत रहा। कहना पड़ेगा कि दोनों के प्रभाव का परिणाम है कि आज जैन शासन आगरा में चमक रहा हैं। आगरा संघ और परमस्नेही सन्तों के आग्रह से महाराज श्री दो सप्ताह आग्रा ठहरे। लोहामण्डी स्थानक में दैनिक व्याख्यान का कार्यक्रम चलता रहा। मुनि श्री आमोलखजी ने आग्रा के सुप्रसिद्ध स्थानों का सुविस्तृत परिचय कराया।

यहाँ गुरूदेव के चातुर्मासकी विनती के लिए लष्कर (ग्वा-लियर) का सघ आया। गुरुदेवने वहाँ के सघकी विशेष भक्ति देख आगामी चातुर्मास की विनति मान लो। गुरूदेव ने पूज्य वृद्धस्थविर सन्तों के मुखारविंद से मगलपाठ सुनकर लश्कर की ओर विहार कर दिया। और अषाढ़ शुक्ला ६ को शहर में चातुर्मासार्थ प्रवेश किया।

सं २००८ का चौमासा लष्कर –

महाराजा सिंधियाँ की राजधानी लष्कर इतिहास का विख्यात नगर है। यहाँ का क़िला भारत में अपने ढग का अनोखा है। शताब्दियों का इतिहास सजोये हुए है। यहाँ दिगम्बर भट्टारकों की गद्दी और उनका ज्ञान भंडार अपूर्व है। यद्यपि यहाँ स्थानक वासियों के घर थोड़े ही हैं पर धार्मिक श्रद्धा काफी है। चातुर्मास में खूब ठाट रहा। समीपवर्ती नगर उपनगरों के श्रावकों का आगमन खूब मात्रा में रहा। यहाँ के श्रावकों ने इनका अच्छा सत्कार किया। ज्ञानभक्ति निमित्त कुछ प्रकाशन भी हुए। लष्कर का चातुर्मास पूरा

कर ग्वालियर, मुरार, मुरेना और धौलपुर होते हुए पुनः आगरा पधारे। वहाँ मानपाड़ा के भव्य स्थानक में विराजे। आचार्यवर्य आदि सप्रेम मुनिवरों का सान्निध्य प्राप्तकर प्रसन्न हुए। मुनिवर अमोलकजी का स्नेह तो जीवन के साथ गुँथ गया है।

वहाँ से विहार कर उत्तर प्रदेश के ग्राम नगरों को फरसते हुए हाथरस विराजे। वहाँ समाचार मिला कि कोटा सम्प्रदाय के मुनि गौरीदासजी का स्वर्गवास होगया है। उनके शिष्य मोहन-मुनिजी एवं उनकी शिष्याएँ भी वहीं विराज रहीं थीं। वहाँ महाराज श्री का भाषण सार्वजनिकरूप से 'जीओ और जीने दो' पर हुआ। साथ ही 'वीर चालीसा' और 'जम्बूसेन चरित्र' का प्रकाशन हुआ। आपके हृदय में बलवती आकांक्षा थी कि जम्बूस्वामी की निर्वाणभूमि मथुरा फरसी जाय, यह अवसर भी अच्छा था। पधारे। वहाँ के अन्य प्रसिद्धस्थान भी देखे। दिगम्बर जैन धर्मानुयायोंने महाराजजी का सम्मान किया और कहा कि यहाँ दिगम्बर मुनिराज के केशलुंचन का कार्यक्रम रखा गया है, आपका पधारना आवश्यक है। महाराज सा सरल स्वभावी होने के कारण नियत समय पर वांछित स्थान पर पहुँच गये। दिगम्बरमुनि श्री से वार्तालाप कर बड़े प्रसन्न हुए। लुंचन के समय समन्वय और साधना पर महाराज श्री का बड़ा सारगर्भित भाषण हुआ। एक ही स्थल पर दोनों समाज के मुनियों को प्रेमपूर्वक वार्तालाप करते देख दर्शनार्थी बहुत ही प्रमुदित हुआ। दूर-दूर तक इसकी चर्चा फैली। मथुरा के लिए संभवतः प्रथम ही अवसर था। वहाँ से प्रसिद्ध बिड़लामन्दिर होते हुए गुरुदेव वृन्दावन पधारे। वृन्दावन के प्रसिद्ध स्थलों को देखा। यहाँ केवल स्थानकवासी जैन का एक ही घर है।

वहाँ से पूज्य गुरुवर्य श्री अकबरपुर, छाता, कौशी आदि नगरों को फरसते हुए भारत की राजधानी दिल्ली पहुँचे। चाँदनीचौक में सर्व प्रथम मुनि श्री सुशीलकुमारजी से भेट हुई। व्याख्यान वाचस्पति मुनि श्री मदनलालजी म. सा. के दर्शन और सम्मिलित व्याख्यान हुए। विभिन्न सम्प्रदाय के सन्तों का आपसी समागम देख वहाँ का जैन समाज बहुत ही प्रभावित हुआ। यहीं पर सादड़ी श्रीसघ का एक प्रतिनिधि-मण्डल आया और महाराज श्री को सम्मेलन के अवसर पर सादड़ी पधारने का आग्रह पूर्ण निमत्रण दिया। सदर दिल्ली में विराजित वयोवृद्ध सन्त श्री भागमलजी म. सा. और उनके शिष्य पं मुनि श्री तिलोकचन्दजी महाराज के दर्शन हुए। यहाँ की जनता में धार्मिक भावना की मानों नई लहर आ गई हो। व्याख्यान का हॉल भरा ही रहता था। यद्यपि म० सा० अपने विचार मेवाड़ी बोली में रखते थे पर वहाँ का समाज बड़ी श्रद्धा के साथ उनकी वैराग्य रस पूरित वाणी का श्रवण कर अपने आप को धन्य समझता था। एक सप्ताह अपने मूल्यवान विचारों का प्रचार कर गुरुदेव सब्जी मण्डी पधारे। इनकी महिमा इससे पूर्व ही वहाँ फैल चुकी थी, जनता ने उनके आगमन का अनुपम स्वागत किया। यहाँ के पंजाबी भाई धर्म और उसके उपादानों पर भारी श्रद्धा रखते हैं। दिल्ली के उप नगरों को फरसते हुए गुरूदेव चिराग दिल्ली पधारे। जहाँ पूर्व विराजित पजाब संप्रदाय के सन्त मुनिश्री रामसिहजी म. सा. से मिलना हुआ, महरौली का कुतुबमीनार देखा। वहाँ से गुरूदेव गुडगाँव विराजे। वहाँ सब्जीमण्डी दिल्ली का श्रावकसघ आगामी वर्षावास व्यतीत करने की

विनति करने आया। यहाँ के लोगों की भावना देख सब्जीमण्डी में चातुर्मास करने का गुरुदेव ने विचार किया किन्तु अचानक ही पूज्य मोतीलालजी म. सा. के अस्वास्थ्य का संवाद मिला। फलतः अलवर फरसते हुए गुरुदेव जयपुर पधार गये। यहाँ एक सप्ताह निवास रहा। अनुभव हुआ कि इस क्षेत्र में दृष्टिराग की बहुत ही प्रधानता है। यहाँ गुणमूलक परम्परा का अभाव सा लगा। साधक श्रावकवर्ग के लिए यह अच्छा नहीं है। उनके लिए कोई भी त्यागीमुनि हो वह वन्दनीय है। यहाँ से क्रमशः विहार करते हुए गुरुदेव किशन गढ़ पधारे।'

किशनगढ़ स्थानकवासी परम्परा के इतिहास में अपना स्थान रखता है। यह उत्तम क्षेत्र है। बाईस संप्रदाय के कई महामुनि और आचार्यों का सम्बन्ध किशनगढ़ से बहुत ही निकट का रहा है। कतिपय आचार्य तो यहीं के ही निवासी थे, और कइयों को यह स्वर्गवास भूमि के सौभाग्य से भी मण्डित है। साहित्यिक भावना की दृष्टि से भी किशनगढ़ को भूला नहीं जा सकता। यहाँ स्थानकवासी परंपरा का प्राचीन ज्ञान-भण्डार भी है जिनमें प्रचुर साहित्य भरा पड़ा है। पर व्यवस्था की कमी है। अन्वेषण की पर्याप्त साधन-सामग्री विद्यमान है। यहाँ पर महाराज श्री ने 'विनय' गुण पर जो मार्मिक व्याख्यान दिया उससे जनता बहुत ही प्रभावित हुई और अधिक ठहरने का आग्रह करने लगी। पर आपके पास समय का अभाव था अतः तीन दिन ठहरकर बाद अजमेर ब्यावर आदि क्षेत्रों को फरसते हुए गुरुदेव देवगढ़ पधारे। मार्ग में चौमासे के लिए बहुत विनतियाँ होती रही पर उनपर विचार करने का अवसर

ही न मिल सका। वाघपुरा का संघ तो पीछे ही पड़ गया था, जो उनकी हार्दिक ममता का परिचायक था।

देवगढ से विहार कर आमेट, सरदारगढ, कुंवारिया कॉंकरोली होते हुए नाथद्वारा पधारे। नाथद्वारा गाव से करीब पॉच मील उत्तममुनि गुरुदेव के स्वागतार्थ सामने पधारे। गांव में प्रवेश करते समय स्थानीय श्रावक श्राविका गण एवं तत्र विराजित मुनि सामने आये। गुरुदेव सीधे अपने बड़े गुरू भ्राता मंत्री मुनिश्री मोती लालजी म. सा के दर्शन किये बन्दना, आहार, पानी आदि बारह संभोग सम्मलित रहे यहॉं का सन्त मिलन अपूर्व स्नेह मिलन था। गुरुदेव का संकल्प था कि इस वर्ष का चातुर्मास सम्मिलित ही किया जाय किन्तु मत्री मुनिजी का इस शुभ कार्य में सहकार नहीं मिल सका। वाघपुरा का सघ तो साथ ही में था, इधर आषाढ़ शुक्ल-पक्ष प्रारंभ होही चुका था, विहार का उपक्रम होने लगा। मेवाड के मत्री मुनिश्री मोती लालजी म सा के दो शिष्य गुरुदेव के साथ आने का आग्रह कर रहे थे, पर महाराजश्री ने स्पष्ट कहा कि मंत्री मुनिश्री की आज्ञा हम दोनों को शिरोधार्य हैं। विहार करने पर करोली में श्रमणसघ के प्रधानमत्री मुनिश्री आनन्द ऋषिजी म से भेट हो गई। वहॉसे गरूदेव देलवाड़ा पधारे जहाँ रामपुरा का संघ आ पहुँचा पर समय इतना कम था कि रामपुरा तक पहुँचना सभव न था। अत आगामी चातुर्मास नाई का निश्चित किया।

संवत २००६ का चौमासा नाई —

आषाढ शुक्ला बारस को चातुर्मासार्थ नाई में प्रवेश किया। चातुर्मास का प्रभाव उत्तम रहा। धर्मध्यान की प्रवृत्ति

अच्छी रही। प्रमुख व्यक्ति श्रीमान कपालीलालजी बीसलाजी के सम्पर्क से एवं गुरुदेव के उपदेश से उनेकों प्राणियों को अभयदान मिले। चातुर्मास समाप्ति का विहार होने ही जा रहा था कि इतने में उदयपुर से उपाध्याय श्री का आदेश आया कि 'मैं भी आ रहा हूँ। वहीं ठहरो। दूसरे दिन उपाध्यायश्री ने लच्छीरामजी म० सा० को भाई भेज दिया। क्योंकि दीक्षा पर्याय से और वय की दृष्टि से वह ज्येष्ठ थे। बाद में उपाध्यायजी म० सा० भी पधार गये। उनने महाराजश्री से आग्रह किया कि मुझे सोजत की बैठक में सम्मलित होना है, आप भी साथ चलें। महाराज श्री का विनयभाव उपाध्यायजी की बात को टाल न सका। सोहनमुनिजी को वापस मेवाड़मंत्री के सेवामें भिजवा दिया। गुरुदेवने श्रावकों के अत्याग्रह से मसलाबाद क्षेत्र को फरसते हुए गोगुन्दा, सायरा, रायकपुर होते हुए सादड़ी पधारे। वहाँ दो व्याख्यान हुए। वहाँ से बाली, सांडेराव होते हुए पाली पधारे। यहाँ व्याख्यान वाचस्पति मुनिश्री मदनलालजी म० उपाध्याय प्यारचन्दजी म० सा०, कविवय श्री अमरचन्दजी म० मा० आदि अनेक मुनियों के दर्शन समागम हुए। विहार में कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। पर महाराजश्री तो कठिनाइयों को झेलने के आदी थे। पाली से सोजत आते समय मार्ग में एक बाबाजी का मठ आता है। मठ के चारोंओर घना जंगल है। हिंस्र पशुओं का सदा भय रहता है। सूर्य भी अस्त होने जा रहा था। सर्दी का मोसम था। ठंडी हवा चल रही थी। गुरुदेव आश्रम में पहुँचे। सुना जाता है कि यहाँ का बाबा बड़ा तुनक मिजाजी है। रात्री के समय किसी को भी मठ में नहीं रहन देता और सभी को भगा देता है। लेकिन गुरुदेव की मधुर वाणी और ममतापूर्ण व्यक्तित्व से

मठाधीश बाबा बड़ा प्रभावित हुआ। उसने तुरत ही मकान की दूसरी मंजिल ठहरने के लिए खोल दी। रात्री में बावाजी के साथ बड़ा सुन्दर वार्तालाप रहा। गुरूदेव जैसी पुण्य विभूति का सत्संग पाकर बाबाजी के हृदयमे श्रद्धा उमड़ पड़ी। दूसरे दिन आहार पानी से गुरुदेव का अच्छा सत्कार किया। वहां से विहार कर हम सब सन्त क्रमश सोजत के प्रागण में आ पहुँचे। तत्रस्थ मुनिराजों ने जब बाबाजी का गुरुदेव के प्रति अत्यन्त आदर भाव की घटना सुनी तो आश्चर्य प्रकट किया। क्योंकि उन सन्तों में बाबाजी के कोप-भाजन बने भी कुछ सन्त थे जो रात्रि के समय आश्रम से बाहर ढकेल दिए गए थे। मार्ग में अन्य सन्तों के साथ ज्ञान ध्यान की खूब चर्चा विचारणा होती रही। पारस्परिक स्नेह भी उल्लेखनीय रहा।

उपाचार्य और मत्री मुनियों के सम्मेलन में प्रतिनिधि मुनि ही सम्मिलित हो सकते थे। क्योंकि आपसी विचार विनिमय में उग्र बहस भी हुआ करती थी। कभी-कभी तनाव सीमा पार हो जाता था। समन्वयवादी भावना ही शुन्यवाद में बदल चुकी थी।

पन्द्रह दिन तक यह कार्य चलता रहा। प्रारभ में उपाचार्य श्रीने यह घोषणा की कि दर्शनार्थी, जो बाहर से आये हुए हैं, उनसे कोई भी मुनि सयम के साधक उपकरण ग्रहण न करें। इसका प्रभाव सयम में रत मुनियों पर तो अच्छा पड़ा पर कुछ सन्तोंने इस घोषणा को विशेष महत्त्व नहीं दिया और अपना काम बना ही लिया। इस प्रकार की कार्यवाही देखकर गुरूदेव के दिल पर ठेस पहुँची। साथ ही

सम्मेलन की अव्यवस्थित कार्यवाही को देखकर मन में यह निश्चय किया कि भविष्य में ऐसे सम्मेलनों में मैं कदापि सम्मिलित नहीं होऊँगा। ऐसे प्रपंच से व्यर्थ ही संयम की भाव धारा मलीन होती है।

उपाध्याय श्री के मुखारविन्द से मांगलिक श्रवणकर गुरुदेवने सोजत से विहार कर दिया। मार्ग में प्रधान मंत्री मुनिश्री प्रेमचन्दजी म सा से मिलन हुआ। क्रमशः सोजत रोड, सिरियारी, भीम, आसिंद रायपुर से विहार करते हुए मावली पधारे। कपासन का श्रीसंघ चातुर्मास के लिये आग्रही था, महाराजश्री का एक ही मन्तव्य था कि मेवाड़ में रहा तो आपका क्षेत्र खाली नहीं रहेगा, मालवा की ओर निकल गया तो बात दूसरी है। पर चातुर्मास रामपुरा का ही तय हुआ।

सं० २०१० का चौमासा रामपुरा –

गुरुदेव क्रमशः आकोला भादसोडा होते हुए निम्बा हेड़ा पधारे वहाँ से विहार कर सिंगोली अठाणा, कुकड़ेश्वर की ओर पधारे। रामपुरा का संघ तो गुरु महाराज के गुणों से पूर्व परिचित ही था। त्याग तपश्चर्याएँ इस चातुर्मास काल में खूब हुई। गुरुदेव के उपदेश से विजयादशमी के दिन 'विवेक जैन पाठशाला का सूत्रपात हुआ। श्री चान्दमलजी टाटोटी वाले को मुख्याध्यापक नियुक्त किया। आज भी पाठशाला चल रही है। बालक बालिका ज्ञानोपार्जन कर रहे हैं चातुर्मास के पश्चात् क्रमशः विहार कर मन्दसोर पहुँचे। दशपुर नाम से इस को ख्याति जैन इतिहास में रही है। वहाँ से विहार कर जावरा पधारे जो सांप्रदायिक तनाव में

प्रसिद्ध है । यहाँ से गुरुदेव सैलाना पधारे । गुरुदेव का आगमन सुन आँखों से लाचार मुनि जयवंतऋषिजी जो एकल विहारी थे गुरुदेव के पास आये और प्रार्थना करने लगे कि-मैं आँखों मे लाचार हूँ । अत आप मेरा निर्वाह करें । मुझे अपने सघाड़े में शामिल करलो । गुरुदेव दीर्घदृष्टि थे। उन्हें शामिल करने में अनेक समस्याएँ उपस्थित हो सकती थीं, अत. मानवीय भावना से प्रेरित हो गुरुदेवने वहाँ के सघ को इस शुभ काम के लिए प्रेरित किया। गुरुदेव के प्रयत्न से स्थानीय अस्पतालके डाक्टरको बुलाकर जयन्तऋषिजी को बताया। अन्तत डाक्टर की प्रेरणा मे ओपरेशन किया गया जो सफल रहा । उन्हें पुन आखे मिल गई। गुरुदेवने भी एक सहधर्मी की सेवा कर सन्तोप का अनुभव किया । जयन्तऋषिजीने खूब खूब आभार प्रगट किया। वहाँ से विहार कर फागुन चौमासा धार किया। माण्डवगढ के पुराने खण्डहर देखे जो आज भी प्रेरणा दे रहे हैं ।

अब महाराजश्री मालवा के छोटे वड़े नगरों को धर्मोपदेश देते हुए खान देश केमार्ग पर मेधवा सिरपुर पधारे जहाँ मनसुख मार्गपरऋषिजी म.सा का शुभमिलन हुआ। वहाँ से धुलियाँ शहर पधारे जहाँ स्थविर मुनिश्री भानकऋषिजी विराज रहे थे । इनका व्यवहार प्रतिष्ठावर्धक रहा। मालेगाँव के समीप पहुँचने पर बम्बई का श्री सघ आ लगा। वह चाहता था कि आगामी चौमासा बम्बई चींचपोकली ही हो । इधर से जालना संघ भी इसी लिये उत्सुक था । पर नाशिक जाकर निर्णय लेने का विचार कर विहार कर दिया । वहाँ से चांदवड़ आये । यहाँ नेमिनाथ ब्रह्मचर्याश्रम में विराजे । नाशिक पहुँचने के

बाद गुरुदेवने कुछ आगार रख कर चिंचपोकली का चौमासा मान लिया।

स २०११ का चौमासा चिंचपोकली बम्बई —

बम्बई भारत का हृदय है। यहाँ सात जुलाई के बाद वर्षा आरम्भ हो जाता है। अतः बम्बईवालोंने गुरुदेव से निवेदन किया कि वर्षारंभ से पहले आप पहुँच जाय तो उत्तम है। नाशिक से पाण्डवगफा, घोटी इगतपुरी, तिचली पैठ विराजे। मध्यान्ह के समय तिचली पैठ के श्रावक गुरुदेव की सेवामें आये। इस गांव में कई वर्षो से सामाजिक तनाव था। यहाँ स्थानक बना है किन्तु आपसी क्लेश के कारण इसका सही उपयोग नहीं होने पाता था। गुरुदेव के प्रभावपूर्ण उपदेश से उनका झगड़ा मिट गया। संघ में मेल मिलाप का आनन्द छा गया। यह लाभ कम नहीं था। धर्म के नाम पर इस प्रकार के संघर्ष विपरीत परिणाम ही उत्पन्न करते है। इगतपुरी संघ में जो इस समय संगठन दृष्टिगोचर हो रहा है उसका श्रेय गुरुदेव को ही है। इगतपुरी से बम्बई की ओर विहार कर दिया। मार्ग में कसारा घाट आता है जो भयंकर पहाड़ो और वन से परिवेष्टित है। दिन को भी हिंसक पशु घूमते रहते हैं। लेकिन यहाँ का प्राकृतिक दृश्य बड़ा ही मनमोहक है। वर्षा के समय यहाँ का दृश्य बड़ा लुभावना लगता है। झरणों की कलकल ध्वनि कानों को बड़ी मिठी लगती है। हम मार्ग को पार कर रहे थे इतने में बादल घर गये और वर्षाने अपना जौहर दिखाना प्रारंभ किया। मुनि मर्यादा तो यही है कि बरसते जल में विहार किया जाय

पर मार्ग में आने पर तो बिना इच्छा के भी परिषह सहन करना ही रहा। खड़की, कलमगाव शाहपुर, थाना, होते हुए घाटकोपर पहुँचे। यहाँ काठियावाडी और गुजरातियों का अच्छा जमघट है। धर्मभावना भी उल्लेखनीय है। वहाँ से श्री खुशालभाई खेंगार, धनजीभाई के आग्रह से विलेपारले पहुँचे। वहाँ से विहार कर आषाढ शुक्ला तीज को बडे स्वागत के साथ चिंच पोकली "दामजी लखमसी नामक के स्थानक में पहुँचे। यह स्थानक बम्बई का सबसे पहला स्थानक माना जाता है। इसके निर्माण के बाद ही बम्बई के अन्यान्य स्थानक बने हुए हैं। गुरुदेव के पधारनेसे लोगों में धार्मिक उत्साह नजर आता था। प्रात प्रार्थना, मध्यान्ह में रास-चोपई एव सायकाल में प्रतिक्रमण, इस प्रकार विविध साधना का क्रम चलता रहा। मेवाड़ी भाषा में ही गुरुदेव का सफल व्याख्यान चलता था। गुरुदेव की भाषा में ओज और वाणी से वैराग्य टपकता था। लोग उसे सुनकर मत्रमुग्ध हो जाते थे। लोगों में धार्मिक उत्साह कम नहीं था। माटुंगा मलाड़, पारला, कांदावाड़ी, दादर आदि उपनगरों के सघ समय-समय पर गुरुदेव के दर्शन से लाभान्वित होते थे। कर्मवशात् वहाँ गुरुदेव को कास और ज्वर होकर मियादी बुखार हो गया। श्रीसघ बहुत ही व्याकुल रहा। समुचित चिकित्सा के बाद स्वास्थ्य-लाभ हुआ। कोट सघ के आग्रह से गुरुदेवने एव माटुंगा से मुनिश्री प्रेमचन्दजी म० दोनों मुनिवरों ने पर्युषण पर्व कोट में मनाया सम्मिलित पर्वाराधन से लोग बड़े प्रभावित हुए। आध्यात्मिक साधना में इस पर्व का महत्त्वपूर्ण स्थान है। आत्मशुद्धि का यह अनमोलपर्व जीवन को उज्ज्वल बनाता है। पर्व के बीच एतद् विषयक गुरुदेव के प्रवचन बडे प्रभावशाली रहे। मैं तो चिंचपोकली में ही

रहा । पर्युषण का व्याख्यान भी मैं ही देता रहा । लोगों में आठ दिन का अपूर्व उत्साह दृष्टिगोचर होता था । इस वर्ष तपस्या भी खूब हुई । गुरुदेव कोट म वापिस पधारे । चातुर्मास समाप्ति के अन्तिम दिन दादर संघ के आग्रह से चातुर्मास का विहार कर दादर पधारे । क्रमशः बम्बई के अनेक स्थान फरसते हुए मलाड, बोरावली पधारे, जहाँ पं मुनिश्री शोभमलजी म सा का मिलन हुआ । बहुत दिन तक साथ रहे । यहाँ कान्दावाड़ी श्री संघ मुनी सुशीलकुमारजी म सा की ओर से आकर विनति करने लगा कि यहाँ दीक्षा संपन्न हो रही है अतः आपको पधारना होगा । धर्मलाभ जानकर स्वीकृत प्रदान की गई । गुरुदेव विहार कर विलेपारले पधारे । यहाँ स्थविरमुनिश्री छोटालालजी म सा पं मुनिश्री सुरीलकुमारजी म सा ठाना ३ मंत्रीमुनिश्री शोभमलजी म सा कुल ग्यारह ठाने से प्यार, दादर होते हुए कान्दावाड़ी पधारे । माघ शुक्ला छठ को एक भाई ने पं मुनिश्री सुशील कुमारजी से दीक्षा ग्रहण की । दीक्षा के समय का वातावरण बड़ा उल्लास जनक था । सन्तों का आपसी मिलन और प्रेमपूर्ण वार्तालाप प्रमोदोत्पादक रहा ।

जो मनुष्य कठिनाइयों म हताश हो जाता है और आपत्ति के सामने सिर झुका देता है, उससे कुछ भी नहीं हो सकता । परन्तु जो मनुष्य विजय प्राप्त करनेका संकल्प कर लेता है वह कभी असफल नहीं होता । गुरुदेव हर कठिनाइयों का बड़े धैर्य के साथ सामना करते थे । उनमें धैर्य का गुण अपूर्व था । माघशुक्ला सप्तमी का दिन था । गुरुदेव कार्यवश चिराबाजार से गुजर रहे थे अचानक [illegible] पीछे से ट्राम की ओर से धक्का

लगा। ट्राम के धक्के से गुरूदेव एक तरफ गिर पड़े। इतनी जोरों की चोट लगी कि वे उसी स्थान पर मूर्छित हो गये। एक माहेश्वरी शेठ की दृष्टि गुरूदेव पर पडी। वह उसी क्षण भाग कर आया और उठाकर पेढी पर ले गया। शेठ ने डाक्टर बुलाया और प्रारम्भिक मरहम पट्टी के बाद उन्हे अस्पताल में ले जाने का तय किया। श्रीमानने अपनी मोटर मँगवाकर ज्यों ही महाराजश्री को उठाने लगे कि उनकी आँख खुली। वह सारी परिस्थिति भॉप गये। इधर गहरी पीडा थी, उधर संयम की रक्षा सन्तों का देह तो संयम की रक्षा के लिये ही होता है। आपने देह की पीड़ा को उपेक्षित करते हुए शेठ से कहा- मैं जैन मुनि हूँ। वाहन का कभी प्रयोग नहीं करता। मैं पैदल ही अपने स्थान पर चला जाऊँगा। शेठ ने बहुत समझाया, किन्तु गुरूदेव अपना रजोहरण लेकर चल पड़े। जहाँ चोट लगी थी उस जगह करीब आठ इच का लम्बा घाव हो गया था। इधर सन्त गुरूदेव के आगमन की प्रतिक्ष । कर ही रहे थे। अचानक रक्त से सने गुरूदेव को आता देख हम सब मुनि स्तब्ध हो गये। गुरूदेव कांदावाड़ी स्थानक में पधारे। पीड़ा व चलने के श्रम स वहाँ मूर्छित हो गये। उसी क्षण डाक्टर बुलाया गया। सम्यक उपचार के बाद दूसरे दिन चेतना लौट आई। इस अवसर पर प मुनिश्री सुशीलकुमारजी म सा एव सौभाग्यमलजी म सा ने अपनी सहृदयता का एव सेवाभाव का अपूर्व परिचय दिया। श्री सघ ने भी अच्छी सेवा की। गुरूदेव के शरीर में चोट से इतनी वेदना थी पर उनके मुख से कभी सीत्कार भी नहीं निकलता थी। शरीर में वेदना और मुख में हसी दृष्टिगोचर होती थी। धन्य है उस पुनित आत्मा को, सकट को, आपत्ति को, वीरता पूर्वक सहते

है। महाराज श्री को चिकित्सक ने परामर्श दिया कि आपको विश्राम की आवश्यकता है। पर जैन मुनि का जीवनक्रम ही ऐसा बना है कि आराम की गुंजाइश कहाँ।

वहाँ से विहार कर गुरुदेव घाटकोपर पधारे। दैहिक दौर्बल्य के कारण फाल्गुन चौमासा वहीं व्यतीत करना पड़ा। इस रुग्णावस्था में संघ ने खूब प्रेरणा ली और अपनेको तपश्चर्या में लीन रखा। संघ की हार्दिक भावना थी कि ऐसे संयमी, त्यागी और विद्वानमुनि का वर्षावास हमारे घाटकोपरमें ही व्यतीत हो तो उत्तम है। पर संसार में सभी वांछित कार्य पार नहीं पड़ते। ज्यों ही कुछ स्वास्थ्य मन्दस्थिर हुआ कि महाराजश्री ने विहारकर भायखला में रुपचन्द मणिलाल भाई के आवास में निवास किया। भाई तन से वृद्ध होते हुए भी मन से तरुण है। दैनिक शास्त्र-स्वाध्याय इनके जीवन का अंग रहा है। पूरा परिवार श्रद्धालु और सन्तों का उपासक है। वहाँ विले पारले का संघ आया और चौमासे के लिए विनति करने लगा। सुत्तागम के सम्पादक मुनिश्री फूलचन्दजी म. सा. का भी आगमन हुआ। सुत्तागम विषयक चर्चाएँ होती रहीं। यह स्वाभाविक बात है कि जब दो समान विद्वान एकत्र होते हैं तो ज्ञानविज्ञान विषयक महत्त्वपूर्ण सिद्धान्तों पर विचार विमर्श होता ही रहता है।

वहाँ से महाराजश्री थाना पधारे, और जैनमन्दिर के निकटवर्ती एक कमरे में विराजगये। कहा जाता है कि यहाँ प्राचीन काल में श्रीपाल और मैनासुन्दरी का आगमन हुआ था। जिसकी स्मृति स्वरूप आज भी यहाँ एक विशाल और भव्य

मन्दिर बना हुआ है। इसके प्रेरक थे खरतरगच्छ के आचार्यश्री जिनऋद्धि सूरीश्वर महाराज सा । थाना में जितने भी जैन बसते हैं वे सबके सब प्रवासी हैं।

यहाँ से प्रस्थानकर प्राकृतिक सौंदर्य का निरीक्षण करते हुए मुमणा कल्याण खपौली कामसेठ आदि क्षेत्रों को पावन करते हुए गुरुदेव चिंचवड़ पहुँचे। वहाँ कर्नाटक केशरी तपस्वी श्री गणेशीलालजी म सा के दर्शन हुए। तपस्वी श्री गणेशी-लालजी म सा उच्चकोटि के साधु थे उनके उच्च आचार और विचार जैनसंस्कृति के प्रतीक थे। आत्मभावना करते हुए भी उन्होंने अपने जीवन को मानवमात्र के उदय और कल्याण के लिए लगा दिया। ये खादी के समर्थ प्रचारक थे। समाज में छाई हुई अन्धश्रद्धा मिथ्यारूप अन्धकार को मिटाने में वे सूर्य के समान थे। इन्होंने महाराष्ट्र एवं कर्नाटक प्रान्त में बड़े पैमाने पर जन-जागरण का काम किया। इनका जीवन संयम-त्याग तप प्रधान था। हमलोग चिंचवड़ में अन्यत्र ठहरे। आहार पानी के पश्चात गुरुदेव तपस्वीश्री के दर्शन के लिए पहुँचे। प्रारंभिक वार्तालाप से दोनों का अच्छा स्नेह रहा। गुरुदेव पर तपस्वीजी की विशेष कृपा दृष्टिगोचर होती थी। व्याख्यान आदि सम्मिलित होते थे। तपस्वी के त्यागमय प्रभाव से गुरुदेव बड़े प्रभावित हुए। गुरुदेव कुछ दिन ठहरने के बाद आगे प्रस्थान करना चाहते थे। आज्ञा मांगने पर तपस्वीराजने फरमाया कि इतनी क्या शीघ्रता है, अभी तो आये ही हो, कुछ दिन तो विरमो, संघ आश्चर्यचकित था कि आज तपस्वीजी की इनपर कैसे कृपा हो गई कारण कि सर्व साधारण की धारणा थी कि ये कम ही बोलते हैं। और

वाणी का प्रवाह बहता तो दुर्वासा की स्मृति हो आती है। लेकिन तपस्वीजी का गुरुदेव के प्रति अत्यन्त स्नेह था। तपस्वीजी के स्नेह वश गुरुदेव वहीं ठहर गये। इस अवसर पर महावीर जयन्ती भी बड़े धूम धाम से मनाई गई। ५००० के करीब जन समूह बाहर से इस अवसर का लाभ उठाने आया था। हजारों उपवास, सैकड़ों अठाइयों एवं तेले आदि की तपस्या का, अपूर्व ठाठ रहा।

चित्तवड़ से तीन मील समीप एक देव मंदिर है। वहाँ प्रतिवर्ष जलूस-यात्रा भरती है जिसमें देव के नाम पर हजारों पशुओं की कत्ल होती थी। जब गुरुदेव ने यह समाचार सुना तो उनका हृदय इस नृशंस धार्मिक परंपरा पर काँप उठा। उन्होंने सोचा कि इस धर्म के नाम पर होने वाली बलि को रोका जाय। इस बलि को रोकने में तपस्वीजी गणेशीलाल जी म सा. सबसे बड़े प्रेरक थे। गुरुदेव के उपदेश एवं तपस्वीजी के तप-प्रभाव से वहाँ के लोगों का हृदय बदल गया और उन्होंने सदा के लिए हिंसा न करने की प्रतिज्ञा ग्रहण की। हजारों पशुओं को सदा के लिए अभयदान मिल गया। यह था गुरुदेव की वाणी का चमत्कार। चित्तवड़ में तपस्वी जी के साथ गुरुदेव का व्याख्यान होता था। प्रतिदिन करीब ७-८ हजार लोग जिसमें हिन्दू-मुस्लिम जैन आदि सभी कौम के लोग व्याख्यान सुनते थे। यह भी जीवन का एक अपूर्व अवसर था। तपस्वीजी के अत्याग्रह से गुरुदेव करीब दस बारह दिन रुके

जैनमुनि के कन्धों पर प्रवचन का दायित्व कम नहीं होता। १०-१५ मिनिट तो तपस्वीजी प्रवचन फरमाते थे। शेष

समय व्याख्यान देने का मुझे अवसर मिलता था। व्याख्यान में मुख्यतः इन विषयों का शास्त्रीय शैली से प्रतिपादन हुआ करता था। कुरूढियों का निवारण, देश, समाज और धर्म की वर्तमान दशा आत्मकल्याण किन मार्गों से? जीवन में आध्यात्मिक दर्शन का स्थान, अहिंसा और विश्वशांती, जीवन दर्शन · एक पहलू आदि आदि—

सं० २०१२ का चौमासा बम्बई मलाड़:—

महावीर जयन्ती के पावन पर्व पर ही मलाड़वासी सघ वर्षावास के लिये विनति करने आ गया था। आगार रखते हुए महाराजश्रीने चातुर्मास की स्वीकृति फरमादी थी। चौमासा दूर था अत महाराजश्रीने सोचा था कि क्यो न निकटवर्ती क्षेत्र भी फरस लूँ? तदनुसार पूना पधारे। वहाँ, कर्नाटक केशरी श्री गणेशीलालजी म सा का भी पधारना हुआ। वहाँ आपकी प्रेरणा से ग्यारह-ग्यारह बहनों और भाइयों मे पृथक् २ सामूहिकरूप से एक माह तक शान्ति जाप अखण्ड रूपसे चला। साथ ही २१, १५, १३, १०, सैकड़ों अठाइयाँ, चार हजार तेले, एवं दस हजार उपवास आदि तपस्याएँ हुईं। ग्रीष्मकाल को देखते हुए यह तप कम न था। एक माह तक तपस्वीराज की सेवा का अवसर मिला जो भुलाया नही जा सकता। तदनन्तर तपस्वीजी का विहार मालिया की ओर महाराजश्री का पूर्व निश्चयानुसार बम्बई की ओर मार्ग में लोनावला में पूज्य धर्मदासजी म सा की सम्प्रदाय के प रत्न मुनिश्री धनचन्द्रजी म सा एव मुनिश्री भैरोंलालजी म सा ठाना तीन का समागम हुआ। साथ-साथ ही विहार कर पनवेल पहुँचे। वृष्टिने अपना उग्र रूप बताना प्रारभ कर

दिया था, अतः शीघ्रता से विहार कर आषाढ़ शुक्ला इसमी को मलाड (बम्बई) में गुजराती जैन उपाश्रय में विराज गये।

बम्बई में कई स्थानक हैं। पर्व के दिनों में सब भरे रहते हैं। सर्वत्र मुनियों के चौमासे संभव नहीं। पर्व के दिनों में बोरीवली का संघ आया कि किसी मुनि को भेजें। इस बात पर मुझे भेजना तय किया कि व्याख्यान देकर वापस यहाँ आ जायें। मलाड संघ के प्रमुख श्री कानजी पदु हीरजी धमरसी रतीलालभाई प्रमुलाल डूंगरसी, आदि श्री संघ का धर्म स्नेह अविस्मरणीय रहेगा।

दीपावली से ही बम्बई के उपनगरों की विनतियाँ प्रारंभ हो गई कि हमारा क्षेत्र फरसिये। पर महाराजश्री का मन को समान अभाव था कि मुझे राजस्थान पहुँचना है अतः यह संभव नहीं।

मलाड चातुर्मास के बाद गुरुदेव गुजरात फरसना चाहते थे। इसी योजनानुसार क्रमशः बोरीवली वसई विहार करते हुए पधारे। वहाँ मेवाड़ के व्यवसायियों का आना है। वहाँ से उनकी कामना थी कि कब गुरुवर हमारे व्यवसाय स्थान को अपनी चरणधूलि से पावन करें। यह अवसर उनके लिए सर्वथा उपयुक्त था। जिनकी चिर पोषित भावना साकार हो उनका मन-मयूर उन्मत्त हो तो क्या आश्चर्य? वहाँ से विरार आदि ग्रामों की जनता को जिनवाणी का अमृतपान कराते हुए गुरुदेव दहाणू पधारे। सौभाग्य से मुनि लाभचन्द जी

म. सा. एवं चौथमलजी म सा का यहाँ चातुर्मास था। यहाँ लाभचन्द्रजी म. सा. कुछ समय से बीमार थे। समुचित औषधोपचार से स्वास्थ्य लाभ कर हम सब साथ ही में विहार कर सूरत पधारे।

सूरत बन्दरगाह का गुजरात के इतिहास में अनुपम स्थान है। सर्व प्रथम अंग्रेजोंने अपनी कोठी यही स्थापित की। मुगल कालीन इसकी छटा अनुपम थी। यद्यपि यहाँ मूर्तिपूजकों का प्राधान्य है, पर सत्रहवीं अठारहवीं शताब्दी में स्थानकवासी संप्रदाय का महत् केन्द्र था। उस समय कानजी ऋषि के काल में स्थानकवासी समाज में जो विसंवाद फैला था, उसका समाधान तेजसिंह को, वोरा विरजी द्वारा पट्ट पर स्थापित किये जाने पर ही हो सका था। इसके बाद का भी उज्ज्वल इतिहास विद्यमान हैं जो स्थानकवासियों की पुरानी पट्टावलियों में आलेखित है। यद्यपि हमारा ध्यान इस विषय पर आज तक नहीं गया है, यह समाज के लिए दुर्भाग्य की बात है। स्थानकवासी परम्परा का एक विश्वसनीय एवं गवेषणात्मक इतिहास की अत्यन्त आवश्यकता है। विद्वान् मुनिगण इस विषय पर काम करें ऐसा मेरा उनसे सविनय अनुरोध है।

जैनसंस्कृति के इस पुनीत केन्द्र में जैनपुस्तकालय आगम मन्दिर, प्राचीन ग्रन्थ भण्डार, आदि अनेक प्रेक्षणीय सांस्कृतिक साधनास्थान विद्यमान है।

सूरत से विहार कर अंकलेश्वर, जहाँ आज विशाल तैल-कूप निकल रहे हैं वहाँ होते हुए इतिहास-प्रसिद्ध नगर भृगु-कच्छ-भडौंच पहुँचे। मार्ग में मूर्तिपूजक भाइयों के ही अधिक घर आये, पर विवेकवान होनेसे आहार पानी का

परीषह सहन नहीं करना पड़ा। नर्मदा के कूल पर बसे भड़ोच का जैनसांस्कृतिक इतिहास सूरत से भी अधिक प्राचीन और गौरव पूर्ण रहा है। नर्मदा का गम्भीर जल प्रवाह भौतिक दृष्टि से एक ओर जहाँ जाय पदार्थों द्वारा तन का पोषण करता है वहाँ दूसरी ओर धार्मिक उपादानों द्वारा संस्कृति की प्रेरणा भी देता है। इसलिए भड़ौच संस्कृति, प्रकृति और कला का अनुपम केन्द्र है। भृगुऋषि का यह तपश्चर्या स्थान रहा है। इसीलिए इसका नाम उन्हीं के नाम से सम्बन्धित है। बौद्ध साहित्य में भी इसकी महिमा गाई गई है। जैन साहित्य में इस स्थान को "अश्वावबोध" तीर्थ भी कहा गया है। यहाँ से गुरुदेव का विहार बड़ौदा हुआ, जो प्राचीन साहित्य और शिलोत्कीर्ण लेखों में 'वटपद्र' नाम से अभिषिक्त है। यहाँ से विहार कर गुरुदेव अहमदाबाद पधारे। जहाँ पूज्यश्री ईश्वरलालजी म. सा. और पूनमचन्द्रजी म. के समागम का सुअवसर मिला। स्थानीय सौराष्ट्र संघ के आग्रह से अगला चौमासा वहीं बिताया। यहाँ व्यवसायार्थ आये हुये मेवाड़ और मारवाड़निवासियों को गुरुदेव के आगमन का समाचार मिला तो वे बड़े हर्षित हुए और बड़ी संख्या में आ आकर दर्शन का लाभ लेने लगे। स्थानीय गुजराती भाईयोंने भी व्याख्यान आदि का अच्छा लाभ लिया। धर्मध्यान अवसरानुकूल अच्छा हुआ।

राजनगर अहमदाबाद से प्रस्थान कर गुरुदेव के ईडर की ओर चरण बढ़े। इस मार्ग में दिगम्बरानुयायियों की संख्या अधिक है आहार पानी अधिक गवेषणा और प्रयत्न से मिल जाता है। धर्मसाधना के साथ यदि थोड़ा विवेक भी काम में ले तो अच्छा है। यहाँ से विहार का परीषह सहन

करते हुए क्रमश झालावाड पहुँच गये। महाराजश्री का यह विहार लम्बा और कष्टपूर्ण रहा। परन्तु मार्ग में अनुभव किया गया कि चाहे कितने ही कष्ट पडे, पर महाराजश्री के मन पर तनिक भी उनका असर न पड सका। उनके जीवन में उसी समय सौम्य साकार दृष्टि गोचर हुआ। अनुकूल परिस्थितियों में तो सयमकी साधना सभो करते है, पर प्रतिकूल परिस्थितियों में मन को अनुकूल या वशवर्ती बनाये रखना साधक के लिये ही प भव है। सयम खाण्डा की धार माना जाता है सुना जाता है। पर कितने ऐसे सयमी जो समय पर सहिष्णुता का परिचय देकर सच्चे वीरानुयायियों की सूची मे अपना नाम लिखवाते हैं।

"सवत २०१३ का चोमासा वाघपुरा –"

अनेक ग्राम नगरों को पावन करते हुए उदयपुर होकर महाराजश्री वल्लभ नगर पधारे। जहाँ सती जी श्री शृंगार कुँवरजी रुग्णावस्था में थी। उनको दर्शन देना आवश्यक था तथा धन्नकुँवरजी म आकोला में थी उन्हे भी दर्शन देना आनिवार्य था, फलत वहाँ भी पधारे।

आकोला स घ के अग्रणियों में किसी साधारण बात को लेकर अप्रशस्त विस वाद चल रहा था, जिस मुनिवर को अपने क्षेत्र पर अटूट अभिमान था उन्होंने भी इस विसवाद को मिटाने के लिए जी तोड परिश्रम किया किन्तु मजबूत फूट की दीवार को वे भेद न सके। महाराज श्री के पास समया-भाव था। अन्यथा क्या कारण था कि विवाद न मिटता। क्रमश विहार कर महाराजश्री देलवाडा पधारे और मेवाड़म'-त्रीजी का आदेश लेकर वाघपुरा आये, जहाँ उनका चौमासा पूर्ण निश्चित था।

चातुर्मासानन्तर थामपुरा में एक भाई की दीक्षा मृगसर वदि पंचमी को हुई। दीक्षित मुनिका नाम कन्हैयालालजी रक्खा गया और वे आपके शिष्य बने। क्रमशः अनेक क्षेत्र फरसते हुए देवास पधारने पर महासतीजी श्री फेफकुंवरजी श्री रतन कुंवरजी और श्री लहरकुंवरजी म. सा. ठाना तीन मेवाड़ म गुरुदेव के दर्शनार्थ आई। पुनः महाराजश्री की सेवा में महासतियोंजी थामपुरा पधारे। वहाँ से कई क्षेत्रों को पावन करते हुए गुरुदेव देलवाड़ा मन्त्री मुनिश्री मोतीलालजी म. सा. की सेवामें पहुंचे। सब मुनियों ने इनके आगमन पर हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त की। और यह निर्णय दिया गया कि व्याख्यान का कार्य हस्तीमुनि को-अर्थात् मुझको सोंपा जाय। क्योंकि आपने गुरु महाराज के साथ देश देशान्तर में भ्रमण करके अपने ज्ञान को निखारा है अनुभव प्राप्त किया है उसका लाभ स्थानीय जनता को भी मिलना चाहिये। तदनुसार व्याख्यान देने का मुझे आदेश मिला। मैंने गुरुवर के आदेश को शिरोधार्य कर व्याख्यान देना प्रारंभ कर दिया। मेरे व्याख्यान पर जन समुदाय मुग्ध था और इसकी सुवास महलों तक पहुंचा और वहाँ के निजस्हीज और ब्रकासु राज साहब श्री महेन्द्र सिंह जी ने भी व्याख्यान में भाग लिया और अपने निजी कार्यकर्ता द्वारा कहलवाया कि महलों में ऐसे मुनिवर का पादार्पण होना चाहिये। तदनुसार ऐसाही हुआ।

यों तो महावीरजयन्ती प्रतिवर्ष आती है और लोग अपने अपने ढंग से मनाकर उसके प्रति अपनी श्रद्धा भेंट करते हैं। पर अबकी बार यहाँ की जनता का उत्साह कुछ और ही था। सबने अपनी अपनी दुकाने बन्द रखकर अधिक समय धर्मध्यान कीर्तन में बिताया। भविष्य में भी सब लोगों

ने महावीर जयन्ती के पुनित अवसर पर दुकान बन्द रखने की भी हमेशा के लिए प्रतिज्ञा ग्रहण की। सब मुनियों ने अपने क्षयोपशम के अनुसार महावीर जयन्ती पर भाषण दिये। मेरे भाषण का सार यह था-

भगवान महावीर एक आध्यात्मिक चेतना के महापुरूष थे। असाधारण शक्तिका स्त्रोत उनके जीवन में बह रहा था। मानव संस्कृति के विकास में महावीर का दान अपनी जगह रखता है। वह लोक चेतना और आध्यात्मिक सम्पदा के प्रगतिमान प्रतीक थे। मानवही क्यों प्राणी मात्र का कल्याण उनका आदर्श था। अहिंसा उनके जीवन में साकार थी। आज जहाँ कहीं अहिंसा और शान्ति का उल्लेख किया जाता है वहाँ सर्व प्रथम बुद्धदेव का ही नाम आता है। महावीर का सूचन कोई विरलाही करता है। इसका कारण यही है कि हमने अभी महावीरको जिस उदात्त रूपसे जनसमक्ष रखना चाहिये नहीं रख सके है। प्रचार हमारे समाज तक ही सीमित रहा है। विद्वज्जगत में जानकारी सीमित ही है। यह हमारी कमजोरी है। हम यदि महावीर की सच्ची सन्तान और हमारे हृदय में शासन के प्रति तनिक भी आस्था है तो हमारा प्राथमिक काम होना चाहिये, महावीर के विचारों को विश्व के कोने कोने में फैलाना हमारा कर्तव्य होना चाहिए।

इस भाषण का जनता पर अच्छा प्रभाव दृष्टि गोचर होता था। गुरुदेव भी प्रसन्न हुए।

स० २०१४ का चातुर्मास बनेडिया -

बनेडिया के श्रावकों की वर्षो से इच्छा थी कि गुरुदेव का चातुर्मास हमारे नगर में हो और हम भी उनकी अमृत वाणी का पान कर सके। आत्मकर्तव्य के प्रति जागृत रह-

आये। यहाँ मन्त्री मुनि श्री पुष्कर मुनिजी म० सा० भी पंचायती नोहरे में ठहरे हुए थे। सभी भव्य समुदाय मानन्द रहे। यहाँ से गुरुवर्य, धूर कालियाँ होकर पाली पधारे तो संघ ने अधिक ठहरने का आग्रह किया। पर महाराज का कहना था कि विशेष लाभ हो तो ठहरूँ। अन्यथा और क्षेत्र फरसूँगा।

जैन धर्म तो मिथ्या विश्वासों, अन्ध परम्पराओं और अन्याय अत्याचारों की पृष्ठ भूमि पर जमी हुई रूढ़ियों को काट कर फेंक देने में विश्वास करता है।

यह संकेत गुरुदेव का समाज के अन्ध विश्वास वहम एवं गलत धारणा के कारण पीड़ित एवं त्रस्त एक विधवा कुटुम्ब के उद्धार की ओर था। पाली के एक विराट धन धान्य सम्पन्न ओसवाल परिवार की वृद्धा पर लोगों ने यह आरोप लगा रक्खा था कि यह डाकिनी है। इनके साथ विवाहित बहन बेटियाँ खान पान आदि काम में परहेज रखती हैं अगर वृद्धा के साथ उन्होंने काम कर ले तो उनको भी डाकिनी मान लेते हैं। परिणाम स्वरूप यह बुढ़िया स्वकुटुम्ब व समाजसे बहिष्कृत थी। बहनें उसके यहाँ जाने से डरती थी। विवाह आदि सामाजिक किसी भी सामूहिक कार्य में उसे आमंत्रित नहीं करते थे। अपनी बहु बेटियों को उसके घर जाने से मना करते। गुरुदेव ने जब यह सुना तो समाज के इस अन्ध विश्वास से उनका हृदय कांप उठा। आज के प्रगति शील युग में इस प्रकार की घटना समाज के गौरव को हानि पहुँचाने वाली थी। समझदार को समझाना सरल है किन्तु अज्ञानियों को समझाना बड़ा कष्ट मय होता है। पर गुरुदेव के मन में यह बात घर कर गई कि इस कलंक से इस वृद्ध बुढ़िया को अवश्य मुक्त किया जाय। अपने निश्चयानुसार गुरुदेव ने अपने व्याख्यान का

यही विषय बना लिया। उन्होंने अन्ध विश्वास के कुपरिणाम समझाये। गुरुदेव के प्रभावशाली प्रवचन से लोगों की आंखे खुल गई। उनके अन्धकार मय हृदय में प्रकाश फैल गया। लोगों ने उस वृद्धा को अपना लिया। वृद्ध का कलंक धुल गया। ओसवाल जाती के सभी भाई बहनों ने उनके घर जाकर कच्चा भोजन किया। इस कार्य में प्रमुख श्रावक श्री नेमिचन्दजी आदि का अच्छा सहयोग रहा।

वाटी के समीप कदमार नामक गांव में भी दो परिवार के साथ उपरोक्त व्यवहार किया जाता था। गुरुदेव ने वहाँ पधार कर यही कार्य किया। परिवार को 'डाकिनी' के जबरदस्त कलंक से मुक्त किया। गुरुदेव की वाणी में एक अद्भुत आकर्षण शक्ति थी जो भी एक बार उनके सानिध्य में आया वह सदा के लिए उनका परम भक्त बन गया। उनकी व्यापक दृष्टि में अपना, अपना नहीं और पराया, पराया नहीं। वसुधा उनके लिये एक विशाल कुटुम्ब बन गई थी। उस ज्योति पुंज पर रागद्वेष के झंझावातों का कुछ भी प्रभाव नहीं पडता था। वे हमेशा दूसरों के दुख दर्द को मिटाने में अपना भाग्य मानते थे। सेवा उनके जीवन का परम आदर्श था। सोये हुए समाज, राष्ट्र और जन चेतना को अपने जाज्वल्य-मान, प्रदीप्त एवं ओजपूर्ण व्यक्तित्व, घनगर्जित पौरुषमयी वाणी से झकझोर कर सजग सावधान कर देते थे

यहाँ से गुरुदेव मचींद, सलौदा खमणोर, मोलेला आदि गावों को फरसते हुए कुवारियाँ पधारे, जहाँ पूर्वोल्लिखित 'टमू' बाई की सं० २०१५ के अक्षयतृतीया की दीक्षा थी। सतीजी श्री फेपकुँवरजी ठाना तीन की उपस्थिति में दीक्षा बडी धूम धाम से हुई। टमू बाई बडी सतीजी की शिष्या

मनी। शोषा कार्य से निवृत्त हो गुरुदेव महलों की पीपली पधारे। यहाँ रामपुरा का संघ आगामी चौमासे के लिए आ पहुँचा। दूसरे दिन महाराज श्री मोदी पधार गये। यहाँ राज करेड़ा का भी संघ भी चौमासे की विनती के लिए आ पहुँचा। अस्तु गुरुदेव ने अपनी जन्मभूमि राजकरेड़ा की विनति स्वीकार कर ली।

सं० २०१५ का चौमासा राज करेड़ा –

गुरुदेव चातुर्मासार्थ राज करेड़ा पधार रहे थे। उस समय मार्ग में सरदारगढ़ मर्दोल देवरिया से कोशीथल पधारे, गुरुदेव के उपदेश से यहाँ के व्यापारियों ने वीर जयन्ती के दिन अपना समस्त व्यापार बन्द रखने की प्रतिज्ञा ग्रहण की। यहाँ से क्रमशः विहार करते हुए रायपुर बेमाली पधारे। यहाँ करेड़ा का संघ दर्शनार्थ आ पहुँचा।

आषाढ़ शुक्ला दसमी के दिन आपने बड़े ही समारोह के साथ राज करेड़ा में प्रवेश किया। सब साधारण में अपूर्व उत्साह छाया हुआ था। गुरुदेव के प्रभावशाली प्रवचन से यहाँ एक पाठ शाला एवं पुस्तकालय प्रारंभ हुआ। गुरुदेव का यह प्रथम चातुर्मास इस नगर में होने की खुशाली में श्रीमान हरखलालजी हीरालालजी डकलियाने संघ को १००० रुपयेको स्थाई निधि में ट की गुरुदेव की सेवाली वाणी से जैन अजैन जनता प्रभावित थी और प्रतिदिन बड़ी संख्या में व्याख्यान सुनने आया करती थी। धर्म ध्यान तपस्या की बाढ़ आगई थी। सब ओर उत्साह ही उत्साह दृष्टि गोचर होता था। अपने नगर के इस महा मानव को पाकर जनता पुलकित हो रही थी। यहाँ अति झगड़े भी गुरुदेव के उपदेश से समाप्त हुए। आम बूढ़ों के मुख से निकल रहा था कि हमारे नगर के बालक ने आत्मक-

ल्याण के साथ साथ लोक कल्याण करके हमारे नगर का नाम रोशन कर दिया। हमारी मिट्टी में खेला हुआ रत्न आज आध्यात्मिक संपदा का अधिपति बन गया।

राजकरेडा के राजा साहब श्री मान् अमरसिंहजी बडे ही सज्जन प्रकृति के व्यक्ति थे। प्रजा की सेवा करना अपना मुख्य कर्तव्य मानते थे। राजसत्ता और करोडों की संपत्ति होने पर भी ये बड़े विनम्र स्वभाव के थे। इन्होंने अपने नगर की भलाई के अनेक काम किये। सज्जनों के साथ जितने ये नम्र थे दुष्ट लोगों के लिए ये उतने ही भयंकर थे। इनकी अपने इलाके पर जबरदस्त धाक थी। मुनिवरों के ये परम भक्त थे। इन्होंने १५००० रूपया खर्च कर अस्पताल भवन बनाया था। ग्रामपंचायत के लोगों ने इसमें कुछ झगड़ा कर रखा था। भवन निर्माण के बाद मालिकी हक्क को लेकर पंचायत वालों मे एवं राजा साहब में लम्बे समय से झगडा चल रहा था। अस्पताल भवन पर राजा साहब का भी ताला था। तो लोगोंने भी अपना ताला उस भवन पर लगा रखा था।

जब गुरुदेव चौमासे के बाद विहार को प्रस्तुत हुए तो राजा साहबने कहा कि कल तो आपको रूकना ही पडेगा। राजहठ भी अजीबमी होती है। राजासाहब ने स्पष्ट ही कहा कि जबतक आप मुझे रुकने का आश्वासन नही देंगे तबतक मैं यहाँ से हिलनेवाला नही हूँ। कही पधारने की कोशिश आप करेंगे तो मैं मार्ग को रोक कर खडा हो जाऊँगा। हां मेरे लायक कोई काम हो तो आज्ञा फरमाई जाय सेवक हाजिर है। गुरुदेव ने गाव के वैमनस्य को मिटाने का एक अच्छा अवसर देखा। उन्होंने कहा कि मैं तो साधु हूँ, मुझे क्या चाहिये। पर हां आप यदि अस्पताल का ताला खोल

द सो अच्छा है । गुरुदेव की आज्ञा को राजा साहब ने शिरो धार्य करली । समीममय अपने कामदार को बुलाकर ताला खुलवा दिया । और अस्पताल का भवन जनता को सौंप दिया । महाराज श्री की औपदेशिक वाणी से वहाँ का पुराना झगड़ा समाप्त हुआ । जनता को अस्पताल की सुविधा हो गई । उसीदिन बड़ी भारी वर्षा हो गई जिसकी वजह से गुरुदेव का रुकना भी स्वाभाविक ही हो गया । गुरुदेव अस्पताल भवन में रुके ।

वहाँ से गुरुदेव विहार कर मामवला, रघुनाथ पुरा, बीज वगड़ देमाली होकर निम्बाहेड़ा पधारे । कालियास से आमेसर से ज्ञान चक्र के साहित्य का प्रकाशन हुआ । बांवला सेवड़ी अंडाली पधारे । महाराज श्री के सदुप देश से जैनधर्म का अच्छा प्रचार हुआ । इस अवसर पर श्रीमान् भूरालालजी बावेल का धर्मोत्साह प्रशंसनीय था । वहाँ से समासगढ शम्भूगढ होते हुए आकड़सादा पधारे ।

वहाँ के धार्मिक परोपकार का ब्यौरा निम्नलिखित है :-

जिन्होंने अटल भक्ति श्रद्धा से गुरुदेव के शरण में अमयदान निमित्त गोवत्स (मीढा) भेंट किया । उसमें मुख्य गुजर वासियों का । नाम इस प्रकार है-

(१) गुजर	कालुजी धूलाजी	सात ७
(२) „	मयाजी भेमाजी	नौ-९
(३) „	भेमाजी नन्दाजी	पांच-५
(४) „	रैमाजी कालूजी	दो-२
(५)	प्रतापजी सवलाजी	एक-१

(६) ,, देवाजी भोजाजी एक-१
(७) ,, बगनाजी एक-१
(८) ,, हरदेवजी-मोडा (फागना) आठ-८
(९) ,, लक्ष्मणजी सैलाजी पांच-५

इनके सिवाय अन्य भाईयोंने भी अभयदान दिये। इन सबके कानोंमें मुरकिया (कुडक) पहना दी गई। अर्थात उन्हें अपने टोलेमें ही रख लिये गये। इस उपलक्ष में शम्भूगढ निवासी श्री मान् फौजमल जी सा ने २॥ सेर गुड की प्रभावना दी थी।

वहाँ से विहारकर गुरूदेव जैनगर आये जहाँ दीपचन्दजी सा. रांका ने सपत्निक ब्रह्मचर्य व्रत लिया। एव रगनाजनी नन्दलालजी ने सघको एक दीवाल घडी भेट की।

कई क्षेत्रोंको फरसते हुए पडासौली पधारे। यहाँ मेवाड केशरी मुनिश्री जोधराजजी म० सा० ने श्रावकों पर अच्छे धार्मिक सस्कार डाल रखे थे। यहाँका सघ विवेकवान है। शिथिलाचारियोंका यहाँ प्रवेश ही असभव है। गुरुदेवसे पूर्व परिचित होनेसे होलिका दहन तक यहाँ विराजनेका सघ ने आग्रह किया। यहा तीनों समय प्रवचन हुआ करते थे। जैनेतर भाई भी व्याख्यान का लाभ उठाते थे।

यहाँ बहुत वर्षोंसे दो दल थे। इन्हे सुलझानेके लिये कई गावोंके पचोंने प्रयत्न किया था। जैनाचार्यादि, मुनियों, एव महासतीजीने भी इसे समझानेकी चेष्ठा की परन्तु सफलता नही मिल सकी। सघर्ष बढता ही जाता था। गुरुदेवने अपने स्वल्प प्रयत्न से सघर्षको मेट दिया यहाँ के लोग गुरुदेवको साक्षात् देवतुल्य मानते हैं। जिस प्रकार भक्त सकट के समय ईश्वरको याद करता है उसी प्रकार यहाँ के भक्तगण व्याधिसे

आचार विषयक शैथिल्य और द्रौमाचार विषयक चर्चा की। और भविष्य में स भोग आदि की क्या नीति होनी चाहिए जानना चाहा, महाराज श्री ने फरमाया कि मैं अपने साथी श्रमण मुनिवरों से विचार विनिमय कर आपको पत्र द्वारा अपना मनोभाव सूचित कर दूंगा। पर हाँ इतना तो मैं भी मानता हूँ कि शिथिलाचारियों के साथ किसी भी प्रकार का न तो सम्बन्ध रखा जाय और न्हों उन्हें प्रोत्साहन दिया जाय। इससे समाज में मुनि सघ की प्रतिष्ठा स देहास्पद हो जाती है। जैनमुनि भारत की ही नहीं अपितु विश्व की आदर्शमयी स स्था है अत इसका स्तर गिरना नहीं चाहिये। वहाँ एक मास विराज कर गुरुदेव सन्नाड होकर अमेठिया पधारे। इस क्षेत्रपर गुरुदेव का अनन्त उपकार है। गुरुदेव ने इस भू भाग को आदर्श संस्कारों से संस्कारित किया है।

वहाँ से कुचारियों पधारे। वहां पूज्य विराजित मुनि श्री भारमलजी म सा० व मुनि श्री अम्बालालजी म सा स्नेह साथ मे मिले। वहाँ इस समय बारह ठाणो से विराज रहे थे। मटेमर मे हुई शिथिलाचार निवारण विषयक वार्तालाप स मुनियों को परिचित कराया। सबकी सम्मति यही रही कि कुछ भी हो अपने को एक बात का ध्यान रखना है कि महा परिश्रम से श्रमणसंघ में जो एकता स्थापित हुई है उस पर आंच नहीं आनी चाहिये। यदी आपसी वैमनस्य बढ़ गया तो स्थानकवासी मुनि समाजने एकता के सूत्रमें बध कर जो आदर्श स्थापित किया है वह खण्डित हो जायगा। सगठन बिखरने मे तो समय नहीं लगता, पर एकीकरण मे कितना श्रम और शक्ति व्यय होती है उसका अनुमान अनुभवी ही लगा सकता है। यही विचार उपाध्यायश्री के पास भेजे।

१ उस समय श्रमण श्रमणाचार में थे।

कुवारियाँ से आमेट तक सभी मुनिराज साथ ही रहे। गुरुमहाराज देवगढ पधारे। वृष्टि आरंभ हो गई थी। वगड से टाटगढ आये जहाँ तेरापन्थियों की संख्या अधिक है। पर महाराजश्री पर सबकी समान श्रद्धा है। यहाँ पर मै सूचित करदूँ कि टाटगढ पहाडी की चोटी पर बसा ऐतिहासिक कस्बा है। राजस्थान के इतिहास के गवेषक कर्नल टोड नाम से वसा हुआ है। इसका प्राकृतिक सौंदर्य प्रेक्षणीय है। इस पहाडी की तलहटी में ही भीम बसा हुआ है। आषाढ शुक्ला दसमी को चातुर्मासार्थ प्रवेश किया। चौमासे में महाराजश्री ने दिन में दो वार व्याख्यान के अतिरिक्त रात्रि का समय प्रतिक्रमण के वाद प्रश्नोत्तरी का रखा था। ताकि सबको धार्मिक ज्ञान की प्राप्ति हो। महासती श्री अभयकुंवरजी ठाना तीनका अच्छा सहयोग रहा। श्री सेवाभावी चन्दनमलजी कुन्दनमलजी, जवाहरलालजी मौजीरामजी, सोहनलालजी और गोकुलचन्दजी आदि की सन्त सेवा सराहनीय रही। पुलिस सर्किल इन्सपेक्टर श्री भोपालसिंहजी भी समय-समय पर ज्ञानलाभ से लाभान्वित होते रहते थे।

वर्षावास को समाप्ति के बाद विहार कर लुमानी पहुँचने पर गुरुवर श्री को एक पत्र मिला कि हस्तीमुनि को ठाना २ के साथ रायपुर भेजो। मैं एक साथी मुनि के साथ वहाँ पहुँचा। वहाँ मुनि श्री भागमलजी म० सा० ठाना . से विराज रहे थे। मुनिवरा के समक्ष उपाचार्य श्री के पत्र सम्बन्धी वार्तालाप हुई। उनका विचार ले कर मैं अपने साथी मुनि के साथ पुन गुरुदेव की सेवामें पहुँच गया। क्रमशः विहार कर गुरुदेव राणावास आये जहाँ छात्रों को प्रबोधित किया

परित्राण पानेके लिए अत्यन्त श्रद्धासे गुरुदेवका स्मरण करते हैं। यहाँ के संघर्षको मिटानेका गुरुदेवने जो गुरुतर काम किया है उनके उपकारके भारसे आज भी यहाँका समाज नत मस्तक है। गुरुदेवने केवल यहाँका संघर्ष समाप्त ही नहीं किन्तु यहाँ के समाजमें व्याप्त अनेक कुरीतियोंका निवारण किया। जैसे कन्या विक्रय नहीं करना वरके के लिए मांग न करना, मोसर में सम्मिलित नहीं होना आदि आदि।

आचार्य पड़ासोली में भी समाज आपसी फूट के कारण अत्यन्त विकल था। किन्तु गुरुदेवने उस भी समाप्त कर दिया। वहाँ से चैनपुरा भगवानगढ़, कालाहेड़ा होकर गुरुदेव भीम पधारे। यहाँ महावीर जयन्तीका पवित्र पर्व मनाया गया। भीमका संघ तो पर प्रारंभ से ही श्रद्धा रखता आया है। चातुर्मासके लिये विनति हुई। उत्तर में गुरुदेवने अवसर देखकर पर निर्णय करनेका फरमाया। वहाँ 'कानपत्रि' के उपरि विराजित स्थविर महासतीजी श्री अभयकुवरजीका भी यही आग्रह था कि चौमासा यहाँ पर ही हो। भीम से पाल पहुँचे। भीमसंघका प्रयत्न सफल हुआ।

स० २०१६ का चौमासा भीम (मेवाड़)

पालसे प्रस्थानकर हुसानी, मतारिया, करेड़ा चान्दरास आदि ग्रामनगरोंको फरसते हुए वैशाख शुक्लामें भड़सीपुरा पधारे। यहाँ तेरा पन्थी भाईओंने भी गुरुदेवके प्रति अपनी श्रद्धाका परिचय दिया। किसी इककसे महाराज श्री के कानमें भनक पड़ा कि यहाँ के महाजनों में आपसी दो दल हैं। कारण यह है कि एक ओसवाल भाईका बहुत वर्षों से समाजने बहिष्कार कर रखा है। अब समस्या इतनी उलझी हुई

है कि तेरा पन्थी समाज के मुनियोंने अनेक वार प्रयत्न किया पर विफल ही रहे। सघका झगडा नहीं मिटा सके। मुनियोने अनशन भी किया। वणिक समाज पर इसका क्या प्रभाव पड़ता। महाराजश्री के मन में आया कि मामला है तो विकट पर पुरुषार्थ करने में क्या हानि है। महाराजश्रीने विहारका उपक्रम बनाया, सघ रोकना चाहता था। गुरु महाराजने फरमाया कि मेरे रहनेसे क्या कोई विशेष लाभकी सभावना है? अन्यथा रहना व्यर्थ है। समोदल पसीज गये और महाराजश्रीसे कहने लगे कि आपका निर्णय हमें मान्य है। गुरुदेव के निर्णय पर पारस्परिक क्षमा याचना द्वारा वैनश्य विनष्ट नहो गया। और एकत्वकी भावना साकार हो उठी। क्षमाका सागर जहाँ प्रवाहित हो वहाँ सौजन्य स्वाभाविक ही प्रस्थापित हो जाता है। यदि मुनि समाज तटस्थवृत्तिसे काम ले तो समाजकी बहुतसी समस्या तो यों ही सुलझ जाती है। गुरुदेवने यहाँ की अनेक कुरुढ़ियोंको दूर किया। क्रमश बागौर, पूर होते हुए महाराजश्री भीलबाड़ा पधारे। जहाँ पूर्व विराजित मुनिश्री भुरालालजी म सा के दर्शन हुए। स्वर्गीय छोगालालजी म. सा के स्वर्गवास का उन्हे अत्यन्त दुख हो रहा था। गुरुदेव ने आश्वासन भरे शब्दों से इनका शोक निवारण किया। एक सप्ताह सम्मिलित रहें। और साध्वाचार के अनुसार आपस का व्यवहार रहा। यहाँ से हमीरगढ़ नैवरिया, पहुँना आरणी होकर गलूड़ पहँचे। वहाँ इन्द्रमुनिजी एव मगनमुनीजी से भेंट हुई। वहाँ से भूपाल सागर सनवाड वल्लभ नगर जहा रुग्णा साध्वीजी को दर्शन देकर भटेवर उपाचार्य श्री जी की सेवामे पहुँचे। सायकाल प्रतिक्रमणानन्तर श्री नानालालजी म सा ने श्रमण सघ के मुनियों मे प्रविष्ट

परित्राण पानेके लिए अत्यन्त श्रद्धासे गुरुदेवका स्मरण करते हैं। यहाँ के संघषको मिटानेका गुरुदेवने जो गुरुतर काम किया है उनके उपकारके भारसे आज भी यहाँका समाज नत मस्तक है। गुरुदेवने केवल यहाँका संघर्ष समाप्त ही नहि किन्तु यहाँ के समाजमें व्याप्त अनेक कुरुढियोंका निवारण किया। जैसे कन्या विक्रय नहीं करना दहेज के लिए मांग न करना, मोसर में सम्मिलित नहीं होना आदि आदि।

आचार्यश्री पन्नालालजी में भी समाज आपसी फूट के कारण अत्यन्त विकल था। किन्तु गुरुदेवने उसे भी समाप्त कर दिया। वहाँ से चैनपुरा अजितगढ़, कालादेह होकर गुरुदेव भीम पधारे। यहाँ महावीर जयन्तीका पवित्र पर्व मनाया गया। भीमका संघ इन पर प्रारंभ से ही श्रद्धा रखता आता है। चातुर्मासके लिये विनति हुई। उत्तर में गुरुदेवने अवसर दर्शित पर निर्णय करनेका फरमाया। वहाँ 'वाग्पति' के रूपसे विराजित स्थविर महासतीजी श्री कमलकुंवरजीका भी यही आग्रह था कि चौमासा यहाँ पर ही हो। भीम से टाल पधुँचे। भीमसंघका प्रयत्न सफल हुआ।

स० २०१६ का चौमासा भीम (मेरवाडा)

टालसे प्रस्थानकर कुसानी, मवारिया करेडा चाम्दरास आदि ग्रामनगरोंको फरसते हुए देवगढ़ क्षुब्धमें मदारीपुरा पधारे। यहाँ तेरा पन्थी भाईओंने भी गुरुदेवके प्रति अपनी श्रद्धाका परिचय दिया। किसी कारणसे महाराज श्री के सामने मालूम पड़ा कि यहाँ के महाजनों में आपसी दो दल हैं। कारण यह है कि एक ओसवाल भाईका बहुत वर्षों से समाजने बहिष्कार कर रखा है। अतः समस्या इतनी उलझी हुई

है कि तेरा पन्थी समाज के मुनियोंने अनेक बार प्रयत्न किया पर विफल ही रहे। संघका झगडा नहीं मिटा सके। मुनियोने अनशन भी किया। वणिक समाज पर इसका क्या प्रभाव पड़ता। महाराजश्री के मन में आया कि मामला है तो विकट पर पुरुषार्थ करने में क्या हानि है। महाराजश्रीने विहारका उपक्रम बनाया, संघ रोकना चाहता था। गुरु महाराजने फरमाया कि मेरे रहनेसे क्या कोई विशेष लाभकी संभावना है? अन्यथा रहना व्यर्थ है। समोदल पर्साज गये और महाराजश्रीसे कहने लगे कि आपका निर्णय हमें मान्य है। गुरुदेव के निर्णय पर पारस्परिक क्षमा याचना द्वारा वैमनस्य विनष्ट नहो गया। और एकत्वकी भावना साकार हो उठी। क्षमाका सागर जहाँ प्रवाहित हो वहाँ सौजन्य स्वाभाविक ही प्रस्थापित हो जाता है। यदि मुनि समाज तटस्थवृत्तिसे काम ले तो समाजकी बहुतसी समस्या तो यों ही सुलझ जाती है। गुरुदेवने यहाँ की अनेक कुरुढ़ियोंको दूर किया। क्रमश बागौर, पूर होते हुए महाराजश्री भीलवाड़ा पधारे। जहाँ पूर्व विराजित मुनिश्री भुरालालजी म. सा के दर्शन हुए। स्वर्गीय छोगालालजी म. सा के स्वर्गवास का उन्हे अत्यन्त दुःख हो रहा था। गुरुदेव ने आश्वासन भरे शब्दों से इनका शोक निवारण किया। एक सप्ताह सम्मिलित रहे। और साध्वाचार के अनुसार आपस का व्यवहार रहा। यहाँ से हमीरगढ़ नैवरिया, पहुँना आरणी होकर गलूंड़ पहुँचे। वहाँ इन्द्रमुनिजी एवं मगनमुनीजी से भेंट हुई। वहाँ से भूपाल सागर सनवाड वल्लभ नगर जहा रूग्णा साध्वीजी को दर्शन देकर भटेवर उपाचार्य श्री जी की सेवामे पहुँचे। सायंकाल प्रतिक्रमणानन्तर श्री नानालालजी म सा ने श्रमण संघ के मुनियों में प्रविष्ट

कुवारियों से आमेट तक सभी मुनिराज साथ ही रहे। गुरुमहाराज देवगढ़ पधारे। वृष्टि आरंभ हो गई थी। देवगढ से टाटगढ आये जहाँ तेरापन्थियों की संख्या अधिक है। पर महाराजश्री पर सबकी समान श्रद्धा है। यहाँ पर मैं सूचित करदूँ कि टाटगढ पहाडी की चोटी पर बसा ऐतिहासिक कस्बा है। राजस्थान के इतिहास के गवेषक कर्नल टोड नाम से बसा हुआ है। इसका प्राकृतिक सौंदर्य प्रेक्षणीय है। इस पहाडी की तलहटी में ही भीम बसा हुआ है। आषाढ शुक्ला दसमी को चातुर्मासार्थ प्रवेश किया। चौमासे में महाराजश्री ने दिन में दो बार व्याख्यान के अतिरिक्त रात्रि का समय प्रतिक्रमण के बाद प्रश्नोत्तरी का रखा था। ताकि सबको धार्मिक ज्ञान की प्राप्ति हो। महासती श्री अभयकुंवरजी ठाना तीनका अच्छा सहयोग रहा। श्री सेवाभावी चन्दनमलजी कुन्दनमलजी, जवाहरलालजी मौजीरामजी, सोहनलालजी और गोकुलचन्दजी आदि की सन्त सेवा सराहनीय रही। पुलिस सर्किल इन्सपेक्टर श्री भोपालसिंहजी भी समय-समय पर ज्ञानलाभ से लाभान्वित होते रहते थे।

वर्षावास की समाप्ति के बाद विहार कर लुमानी पहुँचने पर गुरुवर श्री को एक पत्र मिला कि हस्तीमुनि को ठाना २ के साथ रायपुर भेजो। मैं एक साथी मुनि के साथ वहाँ पहुँचा। वहाँ मुनि श्री भागमलजी म० सा० ठाना.. से विराज रहे थे। मुनिवरों के समक्ष उपाचार्य श्री के पत्र सम्बन्धी वार्तालाप हुई। उनका विचार ले कर मैं अपने साथी मुनि के साथ पुन गुरुदेव की सेवामें पहुँच गया। क्रमशः विहार कर गुरुदेव राणावास आये जहाँ छात्रों को प्रबोधित किया

आचार विषयक शैथिल्य और हीनाचार विषयक चर्चा की। और भविष्य में संभोग आदि की क्या नीति होनी चाहिए ? जानना चाहा, महाराज श्री ने फरमाया कि मैं अपने साथी व अन्य मुनिवरों से विचार विनिमय कर आपको पत्र द्वारा अपना मनोभाव सूचित कर दूंगा। पर हां इतना तो मैं भी मानता हूँ कि शिथिलाचारियों के साथ किसी भी प्रकार का न तो सम्बन्ध रखा जाय और नहीं उन्हें प्रोत्साहन दिया जाय। इससे समाज में मुनि संघ की प्रतिष्ठा संदेहात्मक हो जाती है। जैनमुनि भारत की ही नहीं अपितु विश्व की आदर्शमयी संस्था है अतः इसका स्तर गिरना नहीं चाहिये। वहाँ एक रात्रि विराज कर गुरुदेव सानन्द होकर बनेडिया पधारे। इस क्षेत्रपर गुरुदेव का अनन्य उपकार है। गुरुदेव ने इस भू भाग को आदर्श संस्कारों से संस्कारित किया है।

वहाँ से कुवारियाँ पधारे। यहां पूज्य विरागवित मुनि श्री भारमलजी म सा० व मुनि श्री अम्बालालजी म सा स्नेह भाव से मिले। यहाँ इस समय बारह ठाणों से विराज रहे थे। मंडेवर मे हुई शिथिलाचार निवारण विषयक वार्तालाप से मुनियों को परिचित कराया। सबकी सम्मति यही रही कि कुछ भी हो अपने को एक बात का ध्यान रखना है कि महा परिश्रम से श्रमणी संघ में जो एकता स्थापित हुई है उस पर आंच नहीं आनी चाहिये। यदी आपसी वैमनस्य फैल गया तो स्थानकवासी मुनि समाजने एकता के सूत्रमें बंध कर जो आदर्श स्थापित किया है वह सतिग्ध हो जायगा। संगठन बिखरने में तो समय नहीं लगता, पर एकीकरण में कितना श्रम और शक्ति व्यय होती है उसका अनुमान अनुभवी ही लगा सकता है। यही विचार उपाध्यायश्री के पास भेजे।

१ उस समय श्रमण श्रमणाचार में थे।

कुवारियॉ से आमेट तक सभी मुनिराज साथ ही रहे। गुरुमहाराज देवगढ़ पधारे। वृष्टि आरंभ हो गई थी। वगड से टाटगढ आये जहॉ तेरापन्थियों की सख्या अधिक है। पर महाराजश्री पर सबकी समान श्रद्धा है। यहॉ पर मैं सूचित करदूँ कि टाटगढ पहाडी की चोटी पर बसा ऐतिहासिक कस्बा है। राजस्थान के इतिहास के गवेषक कर्नल टोड नाम से वसा हुआ है। इसका प्राकृतिक सौंदर्य प्रेक्षणीय है। इस पहाडी की तलहटी मे ही भीम बसा हुआ है। आषाढ शुक्ला दसमी को चातुर्मासार्थ प्रवेश किया। चौमासे में महाराजश्री ने दिन में दो बार व्याख्यान के अतिरिक्त रात्रि का समय प्रतिक्रमण के वाद प्रश्नोत्तरी का रखा था। ताकि सबको धार्मिक ज्ञान की प्राप्ति हो। महासती श्री अभयकुंवरजी ठाना तीनका अच्छा सहयोग रहा। श्री सेवाभावी चन्दनमलजी कुन्दनमलजी, जवाहरलालजी मौजीरामजी, सोहनलालजी और गोकुलचन्दजी आदि की सन्त सेवा सराहनीय रही। पुलिस सर्किल इन्सपेक्टर श्री भोपालसिंहजी भी समय-समय पर ज्ञानलाभ से लाभान्वित होते रहते थे।

वर्षावास को समाप्ति के वाद विहार कर लुमानी पहुँचने पर गुरुवर श्री को एक पत्र मिला कि हस्तीमुनि को ठाना २ के साथ रायपुर भेजो। मैं एक साथी मुनि के साथ वहाँ पहुँचा। वहॉ मुनि श्री भाग्मलजी म० सा० ठाना . से विराज रहे थे। मुनिवरों के समक्ष उपाचार्य श्री के पत्र सम्वन्धी वार्तालाप हुई। उनका विचार ले कर मैं अपने साथी मुनि के साथ पुन गुरुदेव की सेवामें पहुँच गया। क्रमश. विहार कर गुरुदेव राणावास आये जहाँ छात्रों को प्रवोधित किया

आचार विषयक शैथिल्य और हीनाचार विषयक चर्चा की। और भविष्य में सम्भोग आदि की क्या नीति होना चाहिए? जानना चाहा, महाराज श्री ने फरमाया कि मैं अपने साथी श्रमण मुनिवरों से विचार विनिमय कर आपको पत्र द्वारा अपना मनोभाव सूचित कर दूंगा। पर हाँ इतना तो मैं भी मानता हूँ कि शिथिलाचारियों के साथ किसी भी प्रकार का न तो सम्बन्ध रखा जाय और नहीं उन्हें प्रोत्साहन दिया जाय। इससे समाज में मुनि संघ की प्रतिष्ठा संदेहात्मक हो जाती है। जैनमुनि भारत की ही नहीं अपितु विश्व की आदर्शमयी संस्था है अतः इसका स्तर गिरना नहीं चाहिये। यहाँ एक रात्रि विराज कर गुरुदेव सनवाड़ होकर कनोडिया पधारे। इस क्षेत्रपर गुरुदेव का अनहद उपकार है। गुरुदेव ने इस भू भाग को आदर्श संस्कारों से संस्कारित किया है।

यहाँ से कुंवारियों पधारे। वहाँ पूज्य विद्याभिलाषी मुनि श्री भारमलजी म सा० प मुनि श्री कन्हैयालालजी म सा स्नेह भाव से मिले। यहाँ इस समय बारह ठाणों से विराज रहे थे। भटेवर में हुई शिथिलाचार निवारण विषयक वार्तालाप से मुनियों को परिचित कराया। सबकी सम्मति यही रही कि कुछ भी हो अपने को एक बात का ख्याल रखना है कि महा परिश्रम से श्रमणसंघ में जो एकता स्थापित हुई है उस पर आंच नहीं आनी चाहिये। यदि आपसी वैमनस्य पैदा हुआ तो स्थानकवासी मुनि समाजने एकता के सूत्रमें बंध कर जो आदर्श स्थापित किया है वह संदिग्ध हो जायगा। संगठन बिखरने में तो समय नहीं लगता, पर एकीकरण में कितना श्रम और शक्ति व्यय होती है उसका अनुमान अनुभवी ही लगा सकता है। यही विचार उपाध्यायश्री के पास भेजे।

१ उस समय श्रमण श्रमणाचार में थे।

कुवारियाँ से आमेट तक सभी मुनिराज साथ ही रहे। गुरुमहाराज देवगढ पधारे। वृष्टि आरंभ हो गई थी। वगढ से टाटगढ आये जहाँ तेरापन्थियों की सख्या अधिक है। पर महाराजश्री पर सबकी समान श्रद्धा है। यहाँ पर मैं सूचित करदूं कि टाटगढ पहाडी की चोटी पर बसा ऐतिहासिक कस्बा है। राजस्थान के इतिहास के गवेषक कर्नल टोड नाम से बसा हुआ है। इसका प्राकृतिक सौंदर्य प्रेक्षणीय है। इस पहाडी की तलहटी में ही भीम बसा हुआ है। आषाढ शुक्ला दसमी को चातुर्मासार्थ प्रवेश किया। चौमासे में महाराजश्री ने दिन में दो बार व्याख्यान के अतिरिक्त रात्रि का समय प्रतिक्रमण के बाद प्रश्नोत्तरी का रखा था। ताकि सबको धार्मिक ज्ञान की प्राप्ति हो। महासती श्री अभयकुंवरजी ठाना तीनका अच्छा सहयोग रहा। श्री सेवाभावी चन्दनमलजी कुन्दनमलजी, जवाहरलालजी मौजीरामजी, सोहनलालजी और गोकुलचन्दजी आदि की सन्त सेवा सराहनीय रही। पुलिस सर्किल इन्सपेक्टर श्री भोपालसिंहजी भी समय-समय पर ज्ञानलाभ से लाभान्वित होते रहते थे।

वर्षावास की समाप्ति के बाद विहार कर लुमानी पहुँचने पर गुरुवर श्री को एक पत्र मिला कि हस्तीमुनि को ठाना २ के साथ रायपुर भेजो। मैं एक साथी मुनि के साथ वहाँ पहुँचा। वहाँ मुनि श्री भागमलजी म० सा० ठाना .. से विराज रहे थे। मुनिवरों के समक्ष उपाचार्य श्री के पद सम्बन्धी वार्तालाप हुई। उनका विचार ले कर मैं अपने साथी मुनि के साथ पुन गुरुदेव की सवामें पहुँच गया। क्रमशः विहार कर गुरुदेव राणावास आये जहाँ छात्रों को प्रबोधित किया

पार्श्वनाथ जयन्ति भारि समारोह के साथ मनाकर क्रमशः सारण बराकया, पधारे। यहाँ भी दो वस थे। गुरुदेव के उपदेश से समाप्त हो गये। वहाँ से विहार कर गुरुदेव वम सेवा होकर पली कुकवा सुरजपुरा आदि क्षेत्रों को फरसते हुए होली चौमासा ब्यावर किया। ब्यावर जैनों का अच्छा केन्द्र है। पर यहाँ आपसी साम्प्रदायिक वातावरण मलीन बना रहता है। इसका दायित्व किसपर है ? यह तो लिखना व्यर्थ है पर हाँ यदि मुनि समाज संघटन के प्रति इमानदार हो जाय तो ऐसे क्षेत्र सुधर सकते हैं। मैं जिस लक्ष्य को लेकर सरलता गया था उसमें मुझे पूर्ण सफलता मिली। हिंसा रुकवाई। सैकड़ों जीवों को अभयदान मिला। दयाधर्म का अच्छा प्रचार हुआ। महाराज का शामगढ़ होकर केकड़ी पधारे। चौमासे की भावना जनता ने की पर मकान के अभाव के कारण विचार स्थगित करना पड़ा। वहाँ से नासिवा आदि गाँवों में होकर विजय नगर आये वहाँ प्रान्त-मुनि श्री पन्नालालजी म० सा० से मिलन हुआ श्रमण संघ विषयक अनेक चर्चाएँ हुई। महावीर जयन्ती यहाँ की मनाई। व्याख्यान साथ में होता था। आहार पानी प्रथक् करते थे। संघ का सेवा और मंत्री मुनिवर का स्नेह अद्वितीय रहा। वहाँ से गुलाबपुरा पधारने पर मरुधर केशरी मंत्री मुनि श्री मिश्रीलालजी म सा से मिलन हुआ। मंत्री मुनिवर से श्रमण संघ विषयक चर्चाएँ कीं। वहाँ से रूपाहेली होते हुए कवलियावास पधारे वहाँ मेवाड़ी मुनिश्री चौथमलजी म सा० से मिलना हुआ।

गुरुदेव सरेडी रायला मांडल भोपालगंज भीलवाड़ा पहुँचने पर कमलपुर का प्रतिनिधि मण्डल चौमासे के लिए

आया और आगार रख कर स्वीकृति प्रदान की ।

स २०१७ का चौमासा कानपुर

महाराजश्री के कनकपुर वालों को चातुर्मास की स्वीकृति देने के बाद उनके पैरों में अचानक ही कुलन चलनी शुरू होगई । सेठ अर्जुनलालजी के प्रयत्न से चिकित्सा की समुचित व्यवस्था की गई । बाद में वहाँ से विहार कर सुवाणा, बन-खेडा, सवाईपुर, बिगोद, वेंगू, साभरिया, लाडपुरा, मांडलगढ किले पर आये । दो दिन विश्राम किया । किसी समय यह दुर्ग रमणीय होने के साथ-साथ जन कोलाहल से भी गूंजता था । पर आज वहाँ निस्तब्धता छाई है । इतिहास के अनेक उतार चढाव इसने देखे हैं । उसके कण कण में उसका अतीत प्रति-बिम्बित होता है । वहाँ की ध्वनि, वीरों की कहानियाँ, आज भी सुना रही है । पुन बिगोद पहुँच ने पर महासतीजी जसकुँवरजी को दर्शन दिये । नन्दराय जाने पर आर्यसमाजी बन्धुओं ने अनेक तात्विक प्रश्न किये जिनका समुचित उत्तर पाकर मुनिवर की सराहन करने लगे। कोटडी बनेडा लाबिया आदि होते हुए अषाढ शुक्ला दसम को कनकपुर चातुर्मास के लिए पधारे नियमित व्याख्यान होते थे । जनता अच्छी सख्या में व्याख्यान सुनने आया करती थी । तपश्चर्या भी समयानुकूल अच्छी हुई । गुरुदेव के प्रभावशाली एव उदात्त प्रवचनों को सुन स्थानीय श्रावकसघ के विचार भी उदात्त बने । यहाँ कि विशेषता यह रही की अजैन लोगों ने भी गुरुदेव द्वारा प्रदर्शित मार्ग पर चलने का प्रयत्न किया था । दया, पौषध सामायिक व्रत पचक्खान आदि भी करते थे । गुजर मेघजी रोजाना सामायिक और आनुपूर्वी गिनता था । सब दृष्टि से यह चौमासा सफल रहा ।

विहार के बाद गागेदा पधारने पर पुन: मेवाड़ी मुनि पधार गये। सान्वा आसिया, चेजड़ी आदि होकर पाली पधारे। वहाँ दर्शनार्थ फेककुंवरजी म सा ठाना ४ से पधारी दैहिक अस्वस्थता वश मुझे वहां रुकना पड़ा। महाराज श्री बगनौर पधारे। वहाँ से सेनपुरा काला देह अजितगढ़ से भीम आकर मुनि श्री मारमलजी म के साथ दस दिन रहे। वहाँ से वापस आने पर मसीयाजी श्री सज्जन कुंवरजी ठाना चार से पधारी। क्रमशः करेड़ा रायपुर, देवरियाँ, मजौल, बेसाना, सांवला, पोटला पतौरियाँ कोठली पधारे। यहाँ माहेश्वरी समाज के अधिक घर हैं। उनकी अच्छी श्रद्धा है। गुरुदेव के आगमन पर वहाँ के लोगोंने जाहिर व्याख्यान करवाया। व्याख्यान सुनने के लिए सारा गाँव उमड़ पड़ा। वैष्णव मन्दिर के प्रांगन में गुरुदेव का प्रवचन का विषय था। सभी मानवता एव कुरिवाजों के बूरे परिणाम व्याख्यान सुन कर लोग बड़े प्रभावित हुए। साथ ही सबने मिलकर यह प्रतिज्ञा की कि हम लोग अमावस्या को बैल के कन्धे पर जूडी नहीं रखेंगे और किसी भी पशु को काँजी हाऊस में नहीं मारेंगे। वहाँ से सनवाड़ फतह नगर ऊँठाला पधारे। यहाँ आपसी संघ में जो विसंवाद था। वह समाप्त हो गया। वहाँ से लैरोदा पधारे। और महाराज श्री की सेवा में देवरियाँ ऊँठाला पसाना का संघ चौमास की विनति करने लगा। संवत्सर के समाप्त पर गुरुदेव ने यह निर्णय दिया कि बम्बोरा पहुँच कर आप लोगों का निर्णयात्मक जवाब पत्र द्वारा सूचित करूँगा। गुरुदेव बम्बोरा पहुँचे। वहाँ पुन: उपयुक्त संघ के चौमासे सम्बन्धी पत्र आने शुरू हुए। यहाँ के प्रमुख श्रावक द्वारा पाँच आगार रखते हुए आगामी चातुमास की स्वीकृति देवरियाँ के लिए

फरमादी। इस बात की सूचना अन्य संघ को पत्र द्वारा कर दी गई।

पांच आगारों में से एक आगार का उल्लेख करना आवश्यक है। वह इस प्रकार था मुनि हस्तिमलजी की माता अगर चातुर्मास करने की आग्रह करे तो पलाना चोमासा किया जायगा। कारण २२ वर्ष से यह कभी गुरुदेव के दर्शन के लिये नही आई थी। ईस का मूल कारण मैंने उनकी इच्छा के विरूद्ध सयम ग्रहण किया था इसी की सख्त नाराजी उसे थी। गुरूदेव माताजी को सानुकुल बनाना चाहते थे।

महाराज श्री सिहाड पधारे, कुथवास के लिए रवाना हुए। मार्ग बडा ही उबड खाबड है। ग्रीष्म का प्रकोप, और रास्ता भी ककरीला, डरावना, भयावना और मार्ग में अनेक पगडडीयों का निशान होने से गुरुदेव जगल में भटक गये श्रावकों को पता लगने पर बहुत ही चिंतित हुऐ। और खोज में निकल पडे। जेष्ठ की धूप में कही धोवन पानी का भी जोग नहीं बैठा। गला सूखता जा रहा था। भटकते भटकते शाम को छ बजे गुरुदेव कुथवास के स्थानक में पधारे। पैरों में वेदना से फफोले उठ गये थे। पर पुरानी मेंहदी के लेप से शान्ति मील गई। खैरैदा आने पर चिकित्सा की गई। इसी समय फेफकुंवरजी महासतीजी का आगमन हुआ। उनके अनुभव से महाराज के पैर की सूजन आवले का सेवन से दूर हो गई। यहाँ से आराम होने पर शनै २ पलाना कला आये। मेरी माता ने जब मुझे देखा तो उनका मातृवात्सल्य जाग उठा। उन्होंने अश्रुपूर्ण धारा में कहा कि २२ वर्ष हो गये मेरे लाडले को सयम लिये, पर एक भी चौमासा यहाँ

फरमाने का आदेश नहीं दिया। अब मेरी बलवती इच्छा है कि अब के बार आप वर्षावास यहीं व्यतीत कर भव्य जीवों को प्रतिबोध दीजिये। आपका उपकार हम कदापि नहीं भूलेंगे महाराज श्री ने कहा कि यद्यपि मैंने यहाँ का आगार तो रख लिया है पर भाव की दृष्टि से अन्यत्र भी बंधा हूँ। अतः यह चौमासा पलाना करने का ही तय हुआ।

✱ ७ १८ का चौमासा पलाना कलाँ

पलाना की जनता आज खूब ही उल्लास का अनुभव कर रही है क्यों कि महाराजश्री ने फरमाया कि वर्षावास यहीं व्यतीत होगा। शेषकाल अधिक होने से धर्म ध्यान-प्रचारार्थ अन्यत्र विहार कर दिया। यहाँ से क्रमशः विहार करते नसाना पधारे। यहाँ केवल पामेचा परिवार ही बाईस सम्प्रदाय के अनुयायी हैं। शेष तेरापन्थी हैं। बीरवाल आदि के संस्थापक परमतपस्वी श्री राम रमलजी म० ठाणा २ से पधार गये। तीव्र वृष्टि के कारण वो दिन काल क्षेप करना पड़ा। कोठारिया में मावजामा के श्री संघ के विशिष्ट आग्रह से वहाँ जाना अनिवार्य हो गया। यहाँ सामाजिक कार्य और शामिल अछिगतप्रथा के प्रकरण को लेकर झमेला खड़ा हो गया नवयुवक तो इस प्रकार की प्रवृत्ति का अनुमोदक है पर वय प्राप्त जातम इस कार्य को संदेहात्मक दृष्टि से देखते हैं। समाज में इस प्रसंग को लेकर दो दल होगये थे। आश्चर्य है कि इस मंगल कार्य से समाज को अनादर क्यों?

आषाढ शुक्ला चतुर्दशी के रोज चातुर्मासार्थ पलाना में प्रवेश किया। जनता में अद्भुत उत्साह की लहर दौड़ गई थी। संघ एवं गांव के सरपंच मोहनलालजी सा० अपने नगर का

अहो भाग्य समझ रहे थे कि ऐसे महान् विद्वान् और संयमी मुनियों का चौमासा हमारे नगर में होने जा रहा है। सभी वर्ग के लोग आत्मीयता का अनुभव कर रहे थे।

व्याख्यान का क्रम इस प्रकार रखा गया था कि प्रथम तो गुरुमहाराज सूत्र फरमाते थे। बाद में मैं प्रद्युम्न चरित्र का विवेचन करता था। धर्मध्यान बीज के चन्द्रमा की तरह बढता ही जाता था। पर्यूषण पर्व के दिनों में लोगोंने व्यापार बन्द रखा। आठ दिन तक अखण्ड शान्ति जाप चलता रहा यहाँ भी कतिपय वीरवाल परिवार है। जिन्होंने अठाई और पंचरंगी की तपश्चर्या के अलावा सामायक दयाव्रत करते थे। पलाना के श्री संघ ने आगन्तुकों का ऐसा स्वागत किया कि लोग अनुभव करने लगे कि मेवाड भी आतिथ्य करना जानता है। इस अवसर पर डबोक जैन कन्या पाठ शाला की छात्राओं को लेकर आनन्दीलालजी मेहता भी उपस्थित हुए। छात्राओं ने महावीर और चन्दनबाला का नाटक का अभिनय बडी सफलता के साथ किया। श्रीमान नानालालजी सा मे सुपुत्र जमराजजी फतहलालजी ने बडे २ पतासे की प्रभावना की अटा-लीनिवासी श्रीमान् धनराजजी सा की धर्म पत्नी नजरबाई ने ग्लासे की प्रभावना की और नाथद्वारा के अग्रण्य बन्धुओं ने नमो-कार मंत्र की तसवीरो की वीरवाल संघ में प्रभावना की।

मिगसर वदि प्रतिपदा को प्रस्थान करने की वेला आ पहुँची। संयम के पालक चातुर्मास के बाद बिना विशिष्ट कारण के कैसे ठहर सकते है? सभी के मुख पर विशाद की रेखाएँ उभरी हुई थीं। कारुणिक दृश्य उपस्थित था। तुल-सीदास ने ठीक ही कहा है –

मिलत एक दारुण दुःख देहीं, बिछुरत एक प्राण हर लेहीं॥

महाराज श्री ने कचहरी में मांगलिक सुनाया और नगर निवासियों से विनम्रभाव से क्षमा याचना की। जनता गद्गद् हो गई। सिन्धु, भादोल, गड़वाड़ा और थामला के संघ विनतियाँ कर रहा था। पर महाराजश्री के लिए सभी को एक साथ संतुष्ट कर सकना संभव नहीं था। पर एक क्षेत्र का भाग पकड़ा जा सकता है। क्रमशः मसोल, गड़वाड़ा पधारे। यहाँ संघ के प्रमुख श्रीमान् मांगीलालजी सा० तलेसरा जनता के प्राण हैं। निरसहाय के सहायक हैं। भद्रा शील की प्रतिमूर्ति हैं। गुरुदेव के परम भक्त हैं। इनके आग्रह पर कुछ दिन वहाँ विराज कर क्रमशः मांवली, सेमली, होकर आप उदयपुर पधारे। वहाँ उदयपुर का महावीर मण्डल का एक प्रतिनिधि मण्डल महाराज की सेवामें पहुँचा। यहाँ यह बिना किसी संकोच के लिखना ऐसा आवश्यक जान पड़ता है कि उन दिनों उदयपुरका धार्मिक वातावरण अत्यन्त क्षुब्ध था। बात यहाँ तक बढ़ी हुई थी कि एक ही समाज में दो पृथक् पृथक् व्याख्यान होते थे। प्राचीन इतिहास इसबात का साक्षी रहा है कि जहाँ महामुनि का विराजना होता है वहाँ परिपूर्ण शान्ति का सागर लहराता है। पर आज उदयपुर इस बात का अपवाद था। मन में बड़ी वेदना हो रही थी कि यह सबकुछ क्या हो रहा है? कहाँ गई जैनों की वह अहिंसक भावना जिसके आधार पर वह आजतक जीवित है और वह स्याद्वाद का आदर्श कहाँ विलुप्त हो गया? जिसने विरोधियों में समानता स्थापित कर जैनधर्म और दर्शन का प्रकाश भारत में फैलाया। जैनों को दोनों तत्त्व विरासत में मिले हैं। पर आज उनका विनिमय नहीं हो पा रहा है।

जैनी आपस में लड़ें और वह भी धर्म के नाम पर। लज्जा जनक बात है।

उदयपुरका महावीर मण्डल एक प्रगतिशील संस्था है। जैन समाज का वह सफल प्रतिनिधित्व वर्षोंसे करता जा रहा है। परन्तु गत कई वर्षों मे धर्म स्थानरिक्त पड़ा था। कार्यकर्ता बहुत ही चिन्तित थे। इधर सामाजिक विक्षोभका एक कारण यह भी हो चला था कि उपाचार्यश्रीने कुछ कारणोंको लेकर श्रमणसघ से अपना सम्बन्ध विच्छेद कर दिया था। उनका स्वास्थ्य प्रकृतिस्थ न रहनेके कारण शहर बाहरके बगले में विराजते थे। आग्रह से गुरुदेव सुखसाता पूछनेके निमित्त उपाचार्यश्रीके दर्शनार्थ पधारे। उपाचार्यश्रीने तो समुचित वात्सल्य-स्नेह बताया पर अन्य मुनिगण अपने अहवृत्ति में ही मस्त रहे।

महावीर मण्डल के अग्रगण्य बन्धुओं की विनतिको मान दे कर महाराजश्री उदयपुर शहरमें पधारे। प्रतिदिन व्याख्यान होता रहा। इतने मे दुखद संवाद मिला कि आचार्य श्री आत्मारामजी म. सा स्वर्गस्थ हो गये। सघ में विशादकी लहर दौड़ गई। शोक प्रगट करने के निमित्त एक विशाल सभा भरी। कार्योत्सर्ग कर श्रद्धाजली प्रकट करते हुए गुरुदेवने फरमाया कि-श्रमण सघ के आचार्य आत्मारामजी म सा के स्वर्गवाससे समाजको बड़ी भारी क्षति पहुची है। वे श्रमणसघ के उन्नायकों मे से एक थे। जिन शासन के प्रकाश पुज थे। उनका शास्त्रीय ज्ञान अगाध था ये अपने समय के सस्कृत, प्राकृत, हिन्दी भाषा के प्रखर पंडित होनेके साथ साथ एक उच्च कोटिके ग्रन्थकार थे। अध्यात्म-साधना गगनके एक ऐसे ही जाज्वल्यमान सूर्य थे। जो तप-त्याग ज्ञानकी दिव्यप्रभा लेकर जैन जगतमें अवतीर्ण हुए और अपने प्रकाश पुज से जैन

समाजको चमत्कृत और प्रकाशित करते रहे। एक नव चेतन नवस्फूर्ति एवं नव प्रेरणाका पांच जन्य जन हृदय में फूकते रहे। उनके सद्गुणों की चमत्कृति से अद्यावधि जैन जगत चमत्कृत है और युग युग तक रहेगा यह निस्संदेह है। गुरुदेव को यहाँ मियादि ज्वर हो गया था जो यहीं उपचार से ठीक हो गया। अब महाराजश्री शीघ्र विहार करना चाहते थे। इधर विश्व पर अष्ट महाग्रह मंडरा रहा था। उसकी शान्ति के लिए सर्वत्र जप तप हो रहा था। उदयपुर संघने भी ग्रह शान्ति के लिए हजारों आयम्बिल एवं जाप करने लगे। ऐसे अवसर पर गुरुदेवका मार्गदर्शन भी आवश्यक था अतः माननीय श्री सूमर लालजी सिरोहिया दयालीलालजी हिंगड़ श्री अम्बालालजी सा. आदि शहर के अग्रगण्य श्रावकोंके अत्यन्त आग्रह से गुरुदेवको कुछ समय तक यहाँ रुकना पड़ा। यहाँ से विहार कर नाई पधारे। यह गुरुदेवका पूर्व परिचित क्षेत्र है। यहाँ पधारने पर गुरुदेव के शरीर में अत्यन्त दुर्बलता लगने लगी। श्रीमान चान्दमलजी महता एवं शंकरलालजी कोठारी के सत्प्रयत्न से औषधी के सेवन से गुरुदेवने स्वास्थ्य लाभ किया। यहाँ से मारवाड़ जानेका विचार था किन्तु स्वास्थ्य अनुकूल न होनेसे वहाँका विचार बदलकर सुखाना ग्राम पधारे। यहाँ से गरसी बसेली करोली से भटेवर पधारे। आगामी चौमासाथ मावलीका संघ गुरुदेवकी सेवामें उपस्थित हुआ। व्याख्यान श्रवण के बाद संघ अपने पूर्व विचारों का स्मरण कर पश्चाताप कर रहा था। गुरुदेव श्री की सरल प्रकृति एवं क्षमा किया की उच्चताको देखकर व गत घटना की क्षमा मांगने लगा। और यह कबूल किया कि पक्षपात-सर्वनाशका द्वार है। गुरुदेवने भी अपने विशाल हृदयका परिचय देते हुए उन्हें क्षमा कर दी एवं आगार के साथ उनकी विनति मान ली।

सं० २०१६ का चौमासा भादसौडा -

आगन्तुक संघ गुरु महाराजकी जय जयकार कर प्रस्थान कर गया। विहार कर महाराज श्री वल्लभनगर पधारे। जहाँ उनके घुटकों मे पीडा उत्पन्न हो गई थी। समाज मे भी धार्मिक उदासीनता छाई हुइ थी। एलोपेथी दवा से महाराज श्री को अरुचि थी अत केवल सरसों के तैलका ही मर्दन किया। यहाँ के औदासिन्य पूर्ण वातावरणसे विहार करना तय किया, पर संघके आग्रह और झमेला मिटानेकी भावना से स्वल्पविहार के बाद वापिस पधार गये और महावीर जयन्ती सोत्साह मनाई। सबने यह लिखित निर्णय किया कि महावीर जयन्ती के दिन दुकानका कारोबार बन्द रखकर केवल धर्म ध्यान में ही दिन बितायेंगे। ऐसाही हुआ। इस अवसर पर विद्वानों के भाषणका अच्छा प्रभाव दृष्टिगोचर होता था।

घुटने की पीडा शान्त नही हो रही थी पर महाराज श्री का आत्मबल ऐसा था कि उनने इस कष्ट की तनिक भी पर्वाह नहीं की। संयमाराधना में तत्पर रहे। ऐसे अवसरों को वे कसौटी मानते थे।

वल्लभनगर से रूडेडा. इटाली, सगेसरा, आकोला पधारे। अत्यन्त उष्णता के कारण मेरे शरीर में पीडा हो गई। अर्श का प्रकोप बढ गया। सनवाड पधारे। १५ दिन के उपचार के बाद शान्ति मिलि। उपाध्याय हस्तीमलजी म सा आदि ठाना ओं से पधारे। सम्मलित ठहरे और वन्दन व्यवहार यथावत् रहा। यहाँ से उपाध्यायजी म० सा० उदयपुर की ओर पधारे। गुरुवर्य के फतेह नगर पधारने पर मुनिश्री अम्बालालजी म० ठाना ४ से मिले। मुनि श्री भारमलजी म०

की छूट मे अनेक प्रकार की शिथिलाचार की प्रवृत्ति बढ सकती है। गुरुदेव ने श्रमणसघ की इस घोषणा का कडा विरोध किया। इस घोषणा का 'विरोध' में सभी जैन सामयिक पत्रों में प्रगट करने के लिए भेजा किन्तु श्री रतनलालजी डोशी ने ही अपने पत्र 'सम्यग् दर्शन' में प्रगट किया। गुरुदेव ने अपनी घोषणा में कहा-जब तक श्रमण सघ इस घोषणा को वापस नहीं लेगा तब तक मेरा श्रमणसघ से सबन्ध विच्छेद रहेगा, और मैं अपने सप्रदाय गत नियमो का पालन करता रहूँगा गुरुदेव पवित्र सघठन के हामी थे। इस घोषणा का सानुकूल और प्रतिकूल दोनों तरह का असर दृष्टि गोचर हो रहा था।

भादसौडा से प्रथम विहार कर मण्डपिया पहुँचे। संघ में आपसी मनमुटाव था। गुरुदेव के उपदेश से समाप्त हो गया और धर्मस्थान भी बना। यहाँ से चिकारडा, मौरवण, मगलवाड होते हुए सगसेरा पहुँचे। वहाँ भादसौडा का संघ दर्शनार्थ आ पहुँचा। पुन सकारण भादसौडा, पधारना हुआ। यहाँ पधारने पर मुनि पुखराजजी की पायर्डी बोर्ड की परीक्षा शुरू हो गई। पूर्ण होते ही विहार का विचार किया गया पर अचानक महाराज श्री का स्वास्थ्य बिगड गया। साधारण उपचार के बाद स्वास्थ्य सुधर गया। बाद में विहार कर रामथली होते हुए सुरपुर पधारे। यहाँ महाराज श्री के सदुपदेश से स्वर्गीय श्री गहरीलालजी की धर्मपत्नी ने अपना विशाल मकान समाज को धार्मिक कार्य सम्पादनार्थ भेट कर दिया था। गुरुदेव के हथियाना पधारने के पूर्व राशमी का चौमासा पूर्ण कर महासतीजी 'फेफकुंवरजी ठाना तीन' दर्शनार्थ पधारीं। यहाँ पार्श्वजयन्ती मनाकर पाण्डोली पहुँचे। यहाँ लोगोंने बड़े उत्साह के साथ गुरूदेव का प्रवचन सुना। गुरू-

देव के उपदेश से देवशी भाट ने १०० रुपयोंका परोपकारार्थ काम में दान दिया। स्थानीय लोगों ने कांजी हाउस में पशु को बन्द न करने का प्रतिज्ञा ग्रहण की।

यहाँ से विहार कर सीवादेश पधारे। यहाँ कपासन का सघ दर्शनार्थ आ पहुँचा। अत्याग्रह से कपासन पधारे। खूब धमध्यान हुआ। लोगोंने चौमासे की भी विनती की किन्तु समय अधिक होने से गुरुदेवने स्वीकृति नहीं दी। यहाँ सम्प्रदाय मिशा की सयपुर पूज्य श्री गणेशीलालजी म० सा० का स्वर्गवास हो गया। व्याख्यान बन्द रखा गया। उनकी आत्मशान्ति के लिए चार लोगस्स का कार्योत्सर्ग किया। बाजार बन्द रहे। शोक सभा हुई। जिसमें पूज्य गणेशीलालजी मा० सा० के प्रति श्रद्धांजलि व्यक्त करते हुए गुरुदेव ने फरमाया कि-पूज्य गणेशीलालजी म सा स्थानक वासी समाज के एक तेजस्वी पुरुष थे। शान्तात्मा थे। भूले भटकों को सत्पथ पर लाते एवं प्रदर्शक व निर्देशक थे। उनकी साधना में पावनता व वाणी में अमृत था। उनके स्वर्गवास से जैन समाज को महान क्षति पहुँची है। शोकांजलि के बाद गरीबों को भोजन, व वस्त्र वितरित किये गये। दो सप्ताह तक यहाँ विराजने के बाद क्रमशः रूप पधारे। धम ध्यान अच्छा हुआ। गुरुदेव के उपदेश से धम ध्यान के निमित्त स्थानक के लिए ६००० का चन्दा हुआ। यहाँ से विहार के बाद गुरुदेव मट वाड़ा खूब पहुँचे। आगामी वर्षावास के लिए पदराली ग गरार राजकरेडा का सघ विनति के लिये आया। महाराज श्री ने फरमाया कि महावीर जयन्ती के अवसर परमें स्वीकृति द गा।

मटवाड़ा में देवी के स्थान पर घोर हिंसा होतीथी। सब इस हिंसा से त्रस्त हो चुकी था। गुरुदेव के समक्ष पलट विषयक

चर्चा की। इस पर गुरुदेव ने फरमाया कि यहाँ मेवाडी मुनि श्री चौथमलजी म० सा० का चौमासा हो जाय तो यह हिंसा बंद हो सकती है। ऐसा ही हुआ। चौथमलजी म० सा० के चातुर्मास से हिंसा बन्द हो गई। क्रमश विहार कर बोरदा, गंगरार, मण्डपिया से हमीरगढ पधारे। वहाँ पंजाबी मुनि श्री सत्येन्द्रजी ठाना चार से भेंट हुई। अपरिचित होने पर भी उनका स्नेह अच्छा रहा। श्रमणसंघ के नियमों पर बातचीत होते होते ध्वनि वर्धक यंत्र की भी चर्चा चल पड़ी। वे भी इस विधान को संयम घातक मानते थे।

यहाँ से आमली, नैवरिया पहुँचे, होली चौमासा बूढ का किया। धर्मध्यान अच्छा हुआ। राशमी संघ के आग्रह से गुरुदेव वहाँ पधारे। वहाँ तेरापंथ संप्रदाय के आचार्य तुलसी भी अपनी शिष्य मण्डली के साथ पधारे थे। जैन मन्दिर के विशाल मैदान में हमारे प्रवचन होते थे। सभी जैन अजैन भाई बडी संख्या में व्याख्यान का लाभ उठाते थे।

गुरूदेव यहाँ से विहार कर पहुना सोनी याना, लाखोला होते हुए रामनवमी के दिन पोटला पधारे। घुटनों ने जवाब दे दिया था। कुछ लोगों ने गुड आवला पोने की सलाह दी। यह एक स्वाभाविक सत्य है कि जब किसी पर मुसीबत आती है तो बिना मांगे सलाह देने वाले काफी मिल जाते हैं।

महावीर जयन्ती तक महाराज श्री पोटला ही विराजे। गंगरार, कपासन, अजमेर, राजाजी का करेडा, आदि नगरों में यह संवाद पहुँचा तो विनतियाँ आने लगीं। पोटला की महावीर जयन्ती शानदार रही। बाहर के लोग काफी संख्या मे उपस्थित थे। अंतत प्रकृति की स्थिति को ध्यान में रखकर

स्वजन्म भूमि में आगामी चौमासा तय किया।

स २ २० का अन्तिम चौमासा राज करेडा–

पोटला से विहार कर दिया संघ ने पुनः महाराजश्री से प्रार्थना की कि यहाँ से धर्म में झमेला खड़ा हो गया था जिसे समझा-बुझा कर समाप्त करवाया। विरोधियों ने प्रपंच तो खूब किये, पर उनकी एक न चली। वहाँ से बीदावास कुरज, होते हुए महेला की पीपली पधारे। यहाँ एक विशाल ज्ञानभण्डार है। संस्कृत प्राकृत हिन्दी आदि भाषाओंका अच्छा साहित्य इसमें संग्रहित है। हस्तलिखित साहित्य भी इसमें है। इसके संचालक कन्हैयालालजी सा० है। इस ग्रन्थालय के प्रेरक थे मेवाड़ी मुनिश्री चौथमलजी म सा। इनके रचित करीब पचीस ग्रन्थों का यहाँ से प्रकाशन हुआ है। यह संस्था स्वावलम्बी है अपने निजी रूप से ग्रन्थ का प्रकाशन करती है। यहाँ के प्रकाशित पुस्तकों का साधु साध्वियों ने अच्छा लाभ उठाया है।

यहाँ से मोही पधारते समय मार्ग में मुनि श्री लालचन्दजी म सा ठाना २ का समागम हुआ। गुरुदेव के स्नेह से आकर्षित हो वे भी पुन मोही गुरुदेव के साथ पधारे। बड़ा स्नेहपूर्ण मिलन रहा। वहाँ सात संतों का अच्छा समागम रहा अक्षय तृतीया के दिन प्रभु आदिनाथ का पारणा व तप पर बड़ा प्रभावशाली प्रवचन हुआ। यहाँ से घोड़च्या होते हुए राजनगर पधारे। वहाँ तेरापन्थी भाई, भी मुनिश्री से चर्चा के लिये आये थे। गुरुदेव के पैरों में यहाँ सूजन आई परन्तु कांकरोली पधारने पर वेदना कम हुई। मार्ग में विहार करते हुए कुंवारियाँ पधारे। यहाँ औषधोपचार के बाद भी स्थिति जैसी की वैसी रही। यहाँ से विहार कर क्रमश

"गलवा" होते हुए काचरी पधारे, एक ही, रात्रि ठहरकर सुबह विहारकर गांव के बाहर निकले कि इतने में दूर से आवाज आई गुरुदेव की जय हो। यह आवाज कहाँ से और किधर से, मोटर से बाराती लोग, (देवरिया से लग्न कर पलाना जा रही थी) उसमें कई गामों के श्रावक थे। मुख्य पलाना संघ था, बारातिओं के आग्रह से पुन. ग्राम में पधारे। आगन्तुक बन्धुओंने व्याख्यान श्रवण किया, पश्चात् स्थानीय संघ का प्रेम बराती नहीं टाल सके-भोजन बारातियों ने वहीं पर किया। गुरूदेव की सेवा कर मांगलिक सुन, जय-ध्वनि करते हुए चले गये।

दूसरे रोज सभी मुनिवर 'जोर' की जनता को प्रभु-वाणी का अमृतापान करा कर "गोगला" वहाँ भक्तिवान सोहनलालजी सा के आग्रह को नहीं टाल सके। ग्राम की आम जनता पर धर्म की गहरी छाप लगी। वहाँ से "खांखला" धर्मस्थानक में ठहरे "यहाँ की जैन जैनेतर जनता जिनवाणी श्रवण की उत्कण्ठा रखती। व्याख्यान में जनता भी बहुत संख्या में आती थी। आत्मोत्थान के अनेक त्याग प्रत्याख्यान हुवे पोटला श्री संघ दर्शनार्थ आये और पुन पोटला पधारने के अत्याग्रह से गुरुदेव पोटला पधारे॥ सहाडा क्षेत्र फरसने का आश्वासन संघ को दे रखा था। गुरुदेव का स्वास्थ्य दिनानुदिन गिरता जा रहा था। पर ज्ञान ध्यान में प्रवृत्ति बढ़ रही थी। शास्त्र स्वाध्याय में रत रहा करते थे। कभी-कभी ज्वर भी आजाता था। औषधि पर से अरुचि हो गई थी।

विचार किया करते थे कि औषधियों के भरोसे शरीर को कबतक रखा जा सकता है। ज्वर में लंघन ही पथ्य होता

स्वागम भूमि में आगामी चौमासा तय किया ।

सं. २०२० का अन्तिम चौमासा राख करेडा–

पोटला से विहार कर दिया संघ ने पुनः महाराजश्री से प्रार्थना की कि यहाँ से धर्म में भमेला खड़ा हो गया था जिसे समझा-बुझा कर समाप्त करवाया। विरोधियों ने प्रपञ्च तो खूब किये, पर उनकी एक न चली। यहाँ से श्रीसाभाग फुलज, होते हुए मोहेड़ा की पीपली पधारे। यहाँ एक विशाल ज्ञानभण्डार है संस्कृत प्राकृत हिन्दी आदि भाषाओं का अच्छा साहित्य इसमें संग्रहित है। हस्तलिखित साहित्य भी इसमें है। इसके संचालक कन्हैयालालजी सा० है। इस भण्डार के प्रेरक थे मेवाड़ी मुनिश्री चौथमलजी म. सा.। इनके रचित करीब पचीस ग्रन्थ का यहाँ से प्रकाशन हुआ है। यह संस्था स्वावलम्बी है अतः निजी रूप से ग्रन्थ का प्रकाशन करती है। यहाँ के प्रकाशित पुस्तकों का साधु साध्वियों ने अच्छा लाभ उठाया है।

यहाँ से मोही पधारते समय मार्ग में मुनि श्री लालचन्दजी म. सा. ठाना ३ का समागम हुआ। गुरुदेव के स्नेह से आमन्त्रित हो वे भी पुनः मोही गुरुदेव के साथ पधारे। बड़ा स्नेहपूर्ण मिलन रहा। यहाँ सात संतों का अच्छा समागम रहा अक्षय तृतीया के दिन प्रभु आदिनाथ का पारणा व तप पर बड़ा प्रभावशाली प्रवचन हुआ। यहाँ से कोठ्या होते हुए राजनगर पधारे। यहाँ तेरापन्थी भाई, भी मुनिश्री से चर्चा के लिये आये थे। गुरुदेव के पैरों में यहाँ सूजन आई परन्तु कांकरोली पधारने पर वेदना कम हुई। मार्ग में विहार करते हुए कुंआरियाँ पधारे। यहाँ औषधोपचार के बाद भी स्थिति जैसी की तैसी रही। यहाँ से विहार कर क्रमशः

"गलवा" होते हुए कावरी पधारे, एक ही, रात्रि ठहरकर सुबह विहारकर गाव के बाहर निकले कि इतने में दूर से आवाज आई गुरुदेव की जय हो। यह आवाज कहाँ से और किधर से, मोटर से बाराती लोग, (देवरिया से लग्न कर पलाना जा रही थी) उसमें कई गामों के श्रावक थे। मुख्य पलाना संघ था, बारातिओं के आग्रह से पुन ग्राम में पधारे। आगन्तुक बन्धुओंने व्याख्यान श्रवण किया, पश्चात् स्थानीय संघ का प्रेम बराती नहीं टाल सके-भोजन बारातियों ने वहीं पर किया। गुरुदेव की सेवा कर मांगलिक सुन, जय-ध्वनि करते हुए चले गये।

दूसरे रोज सभी मुनिवर 'जोर' की जनता को प्रभु-वाणी का अमृतापान करा कर "गोगला" वहाँ भक्तिवान सोहनलालजी सा. के आग्रह को नहीं टाल सके। ग्राम की आम जनता पर धर्म की गहरी छाप लगी। वहाँ से "खांखला" धर्मस्थानक में ठहरे "यहाँ की जैन जैनेतर जनता जिनवाणी श्रवण की उत्कण्ठा रखती। व्याख्यान में जनता भी बहुत संख्या में आती थी। आत्मोत्थान के अनेक त्याग प्रत्याख्यान हुवे पोटला श्री संघ दर्शनार्थ आये और पुन पोटला पधारने के अत्याग्रह से गुरुदेव पोटला पधारे॥ सहाडा क्षेत्र फरसने का आश्वासन संघ को दे रखा था। गुरुदेव का स्वास्थ्य दिनानुदिन गिरता जा रहा था। पर ज्ञान ध्यान में प्रवृत्ति बढ रही थी। शास्त्र स्वाध्याय में रत रहा करते थे। कभी-कभी ज्वर भी आजाता था। औषधि पर से अरुचि हो गई थी।

विचार किया करते थे कि औषधियों के भरोसे शरीर को कबतक रखा जा सकता है। ज्वर में लंघन ही पथ्य होता

स्वजन्म भूमि में आगामी चौमासा तय किया।

स० १९२० का अन्तिम चौमासा राज करेडा-

पोटला से विहार कर दिया संघ ने पुनः महाराजश्री से प्रार्थना की कि यहाँ से धर्म झमेला खड़ा हो गया था जिसे समझा-बुझा कर समाप्त करवाया। विद्रोहियों ने प्रपञ्च तो खूब किये, पर उनकी एक न चली। वहाँ से सीतावास कुरज, होते हुए मेड़ता की पीपली पधारे। यहाँ एक विशाल ज्ञानभण्डार है। संस्कृत प्राकृत हिन्दी आदि भाषाओंका अच्छा साहित्य इसमें संग्रहित है। हस्तलिखित साहित्य भी इसमें है। इसके संचालक कनैयालालजी सा० हैं। इस ग्रन्थालय के प्रेरक थे सेवाभावी मुनिश्री चौथमलजी म० सा०। इनके रचित करीब पचीस ग्रन्थों का यहां से प्रकाशन हुआ है। यह संस्था स्वावलम्बी है अपने निजी लाभ से ग्रन्थ का प्रकाशन करती है। यहाँ के प्रकाशित पुस्तकों का साधु साध्वियों ने अच्छा लाभ उठाया है।

यहाँ से मोही पधारते समय मार्ग में मुनि श्री लालचन्दजी म० सा० ठाना २ का समागम हुआ। गुरुदेव के स्नेह से आकर्षित हो वे भी पुनः मोही गुरुदेव के साथ पधारे। बड़ा स्नेहपूर्ण मिलन रहा। यहाँ सात संतों का अच्छा जमघट रहा अक्षय तृतीया के दिन प्रभु आदिनाथ का पारणा व तप पर बड़ा प्रभावशाली प्रवचन हुआ। यहाँ से भोइन्दा होते हुए राजनगर पधारे। जहाँ तेरहपन्थी भाई, भी मुनिश्री से चर्चा के लिये आए थे। गुरुदेव के पैरों में यहाँ सूजन आई पश्चात् कांकरोली पधारने पर वेदना कम हुई। मार्ग में विहार करते हुए कुवारियाँ पधारे। यहाँ औषधोपचार के बाद भी स्थिति वैसी की वैसी रही। यहाँ से विहार कर क्रमशः

"गलबा" होते हुए कावरी पधारे, एक ही, रात्रि ठहरकर सुबह विहारकर गाव के बाहर निकले कि इतने में दूर से आवाज आई गुरुदेव की जय हो। यह आवाज कहाँ से और किधर से, मोटर से बाराती लोग, (देवरिया से लग्न कर पलाना जा रही थी) उसमें केई गामों के श्रावक थे। मुख्य पलाना सघ था, बारातिओं के आग्रह से पुन ग्राम में पधारे। आगन्तुक बन्धुओंने व्याख्यान श्रवण किया, पश्चात् स्थानीय सघ का प्रेम बराती नहीं टाल सके-भोजन बारातियों ने वहीं पर किया। गुरुदेव की सेवा कर मांगलिक सुन, जय-ध्वनि करते हुए चले गये।

दूसरे रोज सभी मुनिवर 'जोर' की जनता को प्रभु-वाणी का अमृतापान करा कर "गोगला" वहाँ भक्तिवान सोहनलालजी सा के आग्रह को नही टाल सके। ग्राम की आम जनता पर धर्म की गहरी छाप लगी। वहाँ से "खांखला" धर्मस्थानक में ठहरे "यहाँ की जैन जैनेतर जनता जिनवाणी श्रवण की उत्कण्ठा रखती। व्याख्यान में जनता भी बहुत सख्या मे आती थी। आत्मोत्थान के अनेक त्याग प्रत्याख्यान हुवे पोटला श्री सघ दर्शनार्थ आये और पुन पोटला पधारने के अत्याग्रह से गुरुदेव पोटला पधारे॥ सहाड़ा क्षेत्र फरसने का आश्वासन संघ को दे रखा था। गुरुदेव का स्वास्थ्य दिनानुदिन गिरता जा रहा था। पर ज्ञान ध्यान में प्रवृत्ति बढ़ रही थी। शास्त्र स्वाध्याय में रत रहा करते थे। कभी-कभी ज्वर भी आजाता था। औषधि पर से अरुचि हो गई थी।

विचार किया करते थे कि औषधियों के भरोसे शरीर को कबतक रखा जा सकता है। ज्वर में लंघन ही पथ्य होता

स्वजन्म भूमि में आगामी चौमासा तय किया।

सं २०२० का अन्तिम चौमासा राजकरेडा—

पोटला से विहार कर दिया संघ ने पुनः महाराजश्री से प्रार्थना की कि यहाँ संघ में झमेला खड़ा हो गया था जिसे समझा-बुझा कर समाप्त करवाया। विद्रोहियों ने प्रपंच तो खूब किये, पर उनकी एक न चली। वहाँ से कीतावास फुरबा, होते हुए महेशा की पीपली पधारे। यहाँ एक विशाल ज्ञानभंडार है। संस्कृत प्राकृत हिन्दी आदि भाषाओंका अच्छा साहित्य इसमें संग्रहित है। हस्तलिखित साहित्य भी इसमें है। इसके संचालक कन्हैयालालजी सा० है। इस ग्रन्थालय के प्रेरक थे सेवाभी मुनिश्री चौथमलजी म सा। इनके रचित करीब पचीस ग्रन्थों का यहाँ से प्रकाशन हुआ है। यह संस्था स्वावलम्बी है अपने निजी खर्च से ग्रन्थ का प्रकाशन करती है। यहाँ के प्रकाशित पुस्तकों का साधु साध्वियों ने अच्छा लाभ उठाया है।

यहाँ से मोही पधारते समय मार्ग में मुनि श्री लालचन्दजी म सा ठाना ३ का समागम हुआ। गुरुदेव के स्नेह से आकर्षित हो वे भी पुनः मोही गुरुदेव के साथ पधारे। बड़ा स्नेहपूर्ण मिलन रहा। वहाँ सात संतो का अच्छा जमघट रहा अक्षय तृतीया के दिन प्रभु आदिनाथ का पारणा व तप पर बड़ा प्रभावशाली प्रवचन हुआ। यहाँ से चोखला होते हुए राजनगर पधारे। जहाँ तेरहपन्थी भाई, जो मुनिश्री से चर्चा के लिये आये थे। गुरुदेव के पैरों में यहाँ सूजन आई पश्चात् कांकरोली पधारने पर वेदना कम हुई। मार्ग में विहार करते हुए कुवारियाँ पधारे। यहाँ औषधोपचार के बाद भी स्थिति जैसी की तैसी रही। यहाँ से विहार कर क्रमशः

"गलवा" होते हुए कावरी पधारे, एक ही, रात्रि ठहरकर सुबह विहारकर गाव के बाहर निकले कि इतने में दूर से आवाज आई गुरुदेव की जय हो। यह आवाज कहाँ से और किधर से, मोटर से वाराती लोग, (देवरिया से लग्न कर पलाना जा रही थी) उसमें केई गामों के श्रावक थे। मुख्य पलाना संघ था, वारातिओं के आग्रह से पुन ग्राम में पधारे। आगन्तुक बन्धुओंने व्याख्यान श्रवण किया, पश्चात् स्थानीय संघ का प्रेम बराती नहीं टाल सके-भोजन बारातियों ने वहीं पर किया। गुरुदेव की सेवा कर मांगलिक सुन, जय-ध्वनि करते हुए चले गये।

दूसरे रोज सभी मुनिवर 'जोर' की जनता को प्रभु-वाणी का अमृतापान करा कर "गोगला" वहाँ भक्तिवान सोहनलालजी सा. के आग्रह को नही टाल सके। ग्राम की आम जनता पर धर्म की गहरी छाप लगी। वहाँ से "खांखला" धर्मस्थानक में ठहरे "यहाँ की जैन जैनेतर जनता जिनवाणी श्रवण की उत्कण्ठा रखती। व्याख्यान में जनता भी बहुत संख्या में आती थी। आत्मोत्थान के अनेक त्याग प्रत्याख्यान हुवे पोटला श्री संघ दर्शनार्थ आये और पुन पोटला पधारने के अत्याग्रह से गुरुदेव पोटला पधारे॥ सहाडा क्षेत्र फरसने का आश्वासन संघ को दे रखा था। गुरुदेव का स्वास्थ्य दिनानुदिन गिरता जा रहा था। पर ज्ञान ध्यान में प्रवृत्ति बढ़ रही थी। शास्त्र स्वाध्याय में रत रहा करते थे। कभी-कभी ज्वर भी आजाता था। औषधि पर से अरुचि हो गई थी।

विचार किया करते थे कि औषधियों के भरोसे शरीर को कबतक रखा जा सकता है। ज्वर में लंघन ही पथ्य होता

स्वजन्म भूमि में आगामी चौमासा तय किया ।

स १० का अन्तिम चौमासा राज करेडा–

पोटला म विहार कर दिया संघ ने पुन' महाराजजी से प्रार्थना का कि यहां स घर्म झमेला खड़ा हो गया था जिसे समझा-बुझा कर समाप्त करवाया । विद्रोहियों ने प्रपंच तो खूब किये, पर उनकी एक न चली । वहाँ स कोशीवास कूरज, होते हुए मदेला की पीपली पधारे । यहाँ एक विशाल ज्ञानभण्डार है। स स्कृत प्राकृत हिन्दी आदि भाषाओंका अच्छा साहित्य इसमें स ग्रहित है । हस्तलिखित साहित्य भी इसमें है । इसके स चालक कनैयालालजी सा० है । इस ग्रन्थालय के प्रेरक थे मेवाड़ी मुनिश्री चौथमलजी म सा । इनके रचित करीब पचीस ग्रन्थों का यहां से प्रकाशन हुआ है । यह स स्था स्वावलम्बी है अपने निजी व्यय से ग्रन्थ का प्रकाशन करती है । यहाँ के प्रकाशित पुस्तकों का साधु साध्वियों ने अच्छा लाभ उठाया है।

यहाँ से मोही पधारते समय मार्ग में मुनि श्री लालचन्दजी म सा ठाना २ का समागम हुआ । गुरुदेव के स्नेह से आकर्षित हो वे भी पुन मोही गुरुदेव के साथ पधारे। बड़ा स्नेहपूर्ण मिलन रहा । यहाँ सात संतो का अच्छा जमघट रहा अक्षय तृतीया के दिन प्रभु आदिनाथ का पारणा व तप पर बड़ा प्रभावशाली प्रवचन हुआ । यहाँ से जोहन्दा होते हुए राजनगर पधारे । यहाँ तेरहपन्थी भाई, भी मुनिश्री स चर्चा के लिये आये थे। गुरुदेव के पैरों में यहाँ सूजन आई पश्चात् कांकरोली पधारने पर वेदना कम हुई । मार्ग में विहार करते हुए ५ वारियों पधारे। यहां औषधोपचार के बाद भी स्थिति वैसी की वैसी रही । यहाँ से विहार कर क्रमश

"गलवा" होते हुए कावरी पधारे, एक ही, रात्रि ठहरकर सुबह विहारकर गाव के बाहर निकले कि इतने में दूर से आवाज आई गुरुदेव की जय हो। यह आवाज कहाँ से ओर किधर से, मोटर से बाराती लोग, (देवरिया से लग्न कर पलाना जा रही थी) उसमें कई गामों के श्रावक थे। मुख्य पलाना सघ था, बारातिओं के आग्रह से पुन ग्राम में पधारे। आगन्तुक वन्धुओंने व्याख्यान श्रवण किया, पश्चात् स्थानीय सघ का प्रेम बराती नहीं टाल सके-भोजन बारातियों ने वहीं पर किया। गुरुदेव की सेवा कर मागलिक सुन, जय-ध्वनि करते हुए चले गये।

दूसरे रोज सभी मुनिवर 'जोर' की जनता को प्रभु-वाणी का अमृतापान करा कर "गोगला" वहाँ भक्तिवान सोहनलालजी सा. के आग्रह को नही टाल सके। ग्राम की आम जनता पर धर्म की गहरी छाप लगी। वहाँ से "खांखला" धर्मस्थानक में ठहरे "यहाँ की जैन जैनेतर जनता जिनवाणी श्रवण की उत्कण्ठा रखती। व्याख्यान में जनता भी बहुत सख्या में आती थी। आत्मोत्थान के अनेक त्याग प्रत्याख्यान हुवे पोटला श्री सघ दर्शनार्थ आये और पुन पोटला पधारने के अत्याग्रह से गुरुदेव पोटला पधारे॥ सहाडा क्षेत्र फरसने का आश्वासन सघ को दे रखा था। गुरुदेव का स्वास्थ्य दिनानुदिन गिरता जा रहा था। पर ज्ञान ध्यान में प्रवृत्ति बढ़ रही थी। शास्त्र स्वाध्याय में रत रहा करते थे। कभी-कभी ज्वर भी आजाता था। औषधि पर से अरुचि हो गई थी।

विचार किया करते थे कि औषधियों के भरोसे शरीर को कबतक रखा जा सकता है। ज्वर में लंघन ही पथ्य होता

स्वगम्य भूमि में आगामी चौमासा तय किया ।

सं० २० का अंतिम चौमासा राजकरेड़ा–

पोटला से विहार कर किया संघ ने पुन: महाराजश्री से प्रार्थना की कि यहाँ मन्दिर का झमेला खड़ा हो गया था जिसे समझा बुझा कर समाप्त करवाया । विद्रोहियों ने प्रपंच तो खूब किये पर उनकी एक न चली । वहाँ से कीतावास कूरज, होते हुए मेवा की पीपली पधारे । यहाँ एक विशाल ज्ञानभण्डार है । संस्कृत प्राकृत हिन्दी आदि भाषाओंका अच्छा साहित्य इसमें संग्रहित है । हस्तलिखित साहित्य भी इसमें है । इसके संचालक कनैयालालजी सा० हैं । इस ग्रन्थालय के प्रेरक थे मेवाड़ी मुनिश्री चौथमलजी म० सा० । इनके रचित करीब पचीस ग्रन्थों का यहां से प्रकाशन हुआ है । यह संस्था स्वावलम्बी है अपने निजी खर्च से ग्रन्थ का प्रकाशन करती है । यहाँ के प्रकाशित पुस्तकों का साधु साध्वियों ने अच्छा लाभ उठाया है ।

यहाँ से मोही पधारते समय मार्ग में मुनि श्री लालचन्दजी म० सा० ठाना २ का समागम हुआ । गुरुदेव के स्नेह से आकर्षित हो वे भी पुन: मोही गुरुदेव के साथ पधारे । बड़ा स्नेहपूर्ण मिलन रहा । यहाँ साथ संतों का अच्छा जमघट रहा अक्षय तृतीया के दिन प्रभु आदिनाथ का पारणा व तप पर बड़ा प्रभावशाली प्रवचन हुआ । यहाँ से कोशीथल होते हुए राजनगर पधारे । जहाँ तेरहपन्थी भाई, जो मुनिश्री से चर्चा के लिये आये थे। गुरुदेव के पैरों में यहाँ सूजन आई पश्चात् कांकरोली पधारने पर वेदना कम हुई । मार्ग में विहार करते हुए कुंवारियाँ पधारे । यहाँ औषधोपचार के बाद भी स्थिति वैसी की वैसी रही । यहाँ से विहार कर क्रमशः

"गलबा" होते हुए काबरी पधारे, एक ही, रात्रि ठहरकर सुबह विहारकर गाव के बाहर निकले कि इतने में दूर से आवाज आई गुरुदेव की जय हो। यह आवाज कहाँ से और किधर से, मोटर से बाराती लोग, (देवरिया से लग्न कर पलाना जा रही थी) उसमें कई गामों के श्रावक थे। मुख्य पलाना संघ था, बारातिओं के आग्रह से पुन ग्राम में पधारे। आगन्तुक बन्धुओंने व्याख्यान श्रवण किया, पश्चात् स्थानीय संघ का प्रेम बराती नहीं टाल सके-भोजन बारातियों ने वहीं पर किया। गुरुदेव की सेवा कर मांगलिक सुन, जय-ध्वनि करते हुए चले गये।

दूसरे रोज सभी मुनिवर 'जोर' की जनता को प्रभु-वाणी का अमृतापान करा कर "गोगला" वहाँ भक्तिवान सोहनलालजी सा. के आग्रह को नही टाल सके। ग्राम की आम जनता पर धर्म की गहरी छाप लगी। वहाँ से "खाखला" धर्मस्थानक में ठहरे "यहाँ की जैन जैनेतर जनता जिनवाणी श्रवण की उत्कण्ठा रखती। व्याख्यान में जनता भी बहुत संख्या में आती थी। आत्मोत्थान के अनेक त्याग प्रत्याख्यान हुवे पोटला श्री संघ दर्शनार्थ आये और पुन पोटला पधारने के अत्याग्रह से गुरुदेव पोटला पधारे॥ सहाडा क्षेत्र फरसने का आश्वासन संघ को दे रखा था। गुरुदेव का स्वास्थ्य दिनानुदिन गिरता जा रहा था। पर ज्ञान ध्यान में प्रवृत्ति वढ़ रही थी। शास्त्र स्वाध्याय में रत रहा करते थे। कभी-कभी ज्वर भी आजाता था। औषधि पर से अरुचि हो गई थी।

विचार किया करते थे कि औषधियों के भरोसे शरीर को कबतक रखा जा सकता है। ज्वर में लंघन ही पथ्य होता

है। आप कितनी बार उपवास-आयंबिल तप किया करते, । ज्येष्ठ शुक्ला दूसरी एकादशी सोमवार को सहाड़ा विहार कर श्री 'हरकलालजी के नौहरे में विराजे। दुपहर को प्रवचन दिया। बारस मंगलवार को स्वयं गोचरी पधारे। आहार नहीं किया। इस पर हमारे अत्यन्त आग्रह से साम काल में मात्र आहार के दो ग्रास ग्रहण कर कहा-अब मैं आहार नहीं करूँगा। इसप्रकार तीन बार कह गये, किन्तु हमलोग अल्पमती मुनिकी आन्तरिक भावना को नहीं समझ सके कि गुरुवर्य का यही अन्तिम आहार होगा।

स्वयं मौनस्थ हो स्वाध्याय में तल्लीन हो गये। ११ बुधवार को आहार के लिए जब हम मुनियोंने आग्रह किया तो-उत्तर में फरमाया मुझे चौविहार उपवास है। स्वाध्याय के बाद ग्राम में वृद्ध और कारणिक श्रावक श्राविकाओं को मांगलिक सुनाने को गये। सभी को शान्ति से रहने का आदेश दिया और साथ २ क्षमा याचना भी करते रहे। शेष समय स्वाध्याय में व्यतीत किया। शामको प्रतिक्रमण के बाद गुरुदेवने मुझे व्याख्यान सुनाने का आदेश दिया, मैं व्याख्यान दे न श्रावकों के बीच चला गया। कुछ व्यक्ति महाराज श्री की सेवा में थे। उन सब को धर्मोपदेश देते रहे। आत्मा का साथी एक धर्म है शुद्ध धर्म ही आत्मा को मोक्ष में लेजाने वाला है। अल्प समय में, किसी के साथ किसी भी प्रकार से द्वेष-द्रोह और कटुवाणी का व्यवहार नहीं करना। दस बजे के बाद सभी भाई अपने अपने घर गये रात्रो में आनन्द से शयन किया। रात्री को डेढ़ बजे गुरुदेव ने मन्द स्वर से मुझे आवाजदी। मैं समीप ही सोया हुआ था-फौरन जागकर गुरुदेव की सेवा में खड़ा हुआ और देखा तो महाराज श्री को प्रस्वेद (पसीना) हो रहा। बाजू बदल कर वे शीतल स्थान पर बस

कर आगये । आराम किया । रात्री के तीन बजे के समय मुझसे दशवैकालिक सूत्र के प्रारंभ के चार अध्याय और भक्तामर स्तोत्र सुना । रायमी प्रतिक्रमण कर स्वयं ने प्रत्याख्यान किया और अन्य मुनियों को भी करवाया और क्षमा याचना की । आवाज में मंदता-चहरे पर चमक, महाराज श्री की व्याधि बढती जा रही थी, पर आत्म-संयम इतना था कि एक ही वाक्य मुख से निकलता था । "शान्ति" ३ ॥

किन्तु वेदनीय कर्म का प्रभाव बढ रहा था । सूर्योदय होते होते वेदना ने गंभीर रूप धारण किया, बाइयों भाइयों का ताता बढने लगा । सबको दया पालने का आदेश देते रहे ।

गुरुमहाराज श्री से मैंने पूछा कि किसी को बुलाना मिलना चाहते हैं ? जबाब मिला नहीं । हाँ मुनि अम्बालालजी को कहला दो कि मिलले । स्थानिय संघने आदमी को तुरंत कपासन रवाना किया । इधर देह में कंपन शुरू हुआ । पर मुखसे शान्ती-शान्ती-३ शब्द निकलता ही रहा । स्थानिय कम्पांडर ने गुरुवर की स्थिति को देखकर कहा यहाँ बड़ा डाक्टर की आवश्यकता है । श्रावक संघ बहुत व्याकुल हो रहा था । वह भीलवाड़ा डाक्टर को लिवाने जा रहा था, पर महाराज श्री ने मंदस्वर से फरमायाकि "मतलावो" साथही में कहा कि दो मुनिवर आरहे हैं । यह सुनकर हम सब विचार में पड़ गये कि-अभी आसपास कोई मुनिवर का आगमन नही जाना कहा से आवेगे ? फिर मुझसे कहने लगे पौरषी आ गई, छोटे मुनियों को आदेश दिया कि गौचरी लावो । मैंने पूछा आज आपके उपवास का पारणा है । आप के लिये कुछ आज्ञा हो वही लादूं नही ३ मुनि गौचरी से आये हीथे कि झट गुरुदेवने फरमाया कि सड़क पर दो मुनि आगये । इतने

में दोनों मुनि पधार गये। सामान्य सुख साता पूछने के बाद गुरुदेव ने फरमाया कि आहार पानी से शीघ्र निपटलो। हम सब मुनिवर आहार पानी करके गुरुदेव की सेवा में उपस्थित हो गये।

गुरुदेवने पूछा-क्या आप लोगों का आहार पानी हो गया? मैंने कहा-हां! गुरुदेवने कहा-"अब मेरी शारिरीक स्थिति जीवन के अन्तिम क्षण जैसी है। यावज्जीवन संथारा ग्रहण करने की मेरी भावना है। डाक्टर को लाने की जरूरत नहीं मुनिवर आ रहे हैं।" इन वाक्यों से ऐसा मालूम होता था कि गुरुदेव को विशिष्ट ज्ञान हो गया है। वे अपनी वेदना को दबा रहे थे। वे निर्मोही लगते थे। वे सम दम की उत्कृष्ट भावना में तल्लीन हो रहे थे। उन्होंने चार मंगल की शरण में अपनी आत्मा का समर्पण कर दिया था।

गुरुदेव की उत्कृष्ट भावना-एवं उनकी शारीरिक स्थिती को देखकर मान. १० बजकर उपर कुछ मिनिट को प्रगट संथारा पचक्खा दिया। मुख पर तेज चमक रहा था। उस समय वे त्यागमूर्ति उत्थान मार्ग में लग रहे थे। मोह ममता और विषाद का तो चिन्ह भी दृष्टिगोचर नहीं हो रहा था। उनके मुख से निरन्तर "चार शरण" की ध्वनि निकलती थी।

उस महामुनि के संथारे का संवाद चारों ओर शीघ्र ही विद्युतवत् फैल गया। सौभाग्य मुनि ने "पद्मावती" की संझाय सुनाना शुरू किया। साथ ही साथ 'मिच्छामि दुक्कड' बोलते रहे। पीड़ा प्रतिपल बढ़ती ही जा रही थी। पर उनके मुख पर सौम्य भाव ही झलक रहा था। चार शरणों में ध्यान जमा रहा दिन को (१) बज ५२ मिनिट पर आँखें खुली की खुली रह गई।

सभी को छोड़ चले।

संसार से एक महानविभूति उठ गई। जो एक समय धर्मोद्योत के लिए-सदा सतत प्रयत्नशील रहता था। वह सूर्य आज सदा के लिये अस्ताचल की गहन गुहा में प्रविष्ट हो गया। गुरुदेव का वियोग, शिष्य-गण के लिये असह्य हो गया। सहाडा संघ ने आवश्यक साधनों द्वारा सर्वत्र यह संवाद बड़े दुःख के साथ पहुँचाया। शव यात्रा की तैया-रियाँ होने लगी। जिसे जैसा भी वाहन मिला उसे लेकर सब का प्रवाह सहाडा की ओर मुड़ गया। सुन्दर पालखी मुल्य-वान वस्त्रों से सुसज्जित करवाई गई। अहमदाबाद से महाराज श्री के सांसारीक भाई श्री प्यारचन्दजी सा० सचेती भी ऐन समय पर आ पहुँचे। अनेक भजन मण्डलिये, वाद्य आदि के साथ शवयात्रा प्रारंभ हुई। शव पर सैकडो रूपये उछाले गये। मंदगति से नगर के मुख्य २मार्गों पर होती हुई श्मशान में पहुँची। शरीर के वस्त्र लेने के लिये हजारों व्यक्ति टूट पडे। ऐसी थी श्रद्धा उनके प्रति। ठीक बारह बजे चन्दन, श्रीफल, आदि मूल्यवान पदार्थों से महाराज श्री का दाह संस्कार किया गया।

सब की आँखों मे आंसूओं की झड़ियाँ लगी हुई थी। सचमुच सामान्य जन का भी वियोग अखरने लगता है तो फिर परोपकारी के बिछोह से कौन पाषाण हृदय न पसी जेगा? अग्नि की तेजस्विता पूर्ण चिनगारियों ने देह को भस्मीभूत कर दिया।

श्मशान से आकर तहसील कचहरी के सामने शोक सभा का आयोजन किया गया। सर्व प्रथम पुष्कर मुनिने अपनी भावभरी श्रद्धांजली अर्पित की। हृदय विदारक कविता पढ़ी।

श्री सौभाग्य मुनि ने उनका आयन जीवन काव्यद्वारा सुनाया। अन्य वक्ताओं ने भी गुरुदेव के प्रति शोक प्रदर्शित किया। आत्म शान्ति के लिए ध्यान आदि के बाद सभा विसर्जित हो गई।

गुरु स्वीकृति स्थान पर ही चातुर्मास

मेरे सामने समस्या खड़ी हो गई कि चौमासा कहां किया जाय? कारण कि गुरुमहाराज तो इसके एक माह पूर्व ही चल बसे। उनका अधूरा काम पूरा करने का दायित्व मेरे पर आ पड़ा। राजकरेड़ा संघ का आग्रह था कि जब महाराजश्री चौमासा राजकरेड़ा करने का फरमाया था तो आपका प्रथम कर्तव्य है कि यहीं पधार कर हमें कृतार्थ करें। मैंने वही किया। इस अवसर पर सौभाग्यमुनि का एवं मदन मुनि का जो सहयोग मिला वह अविस्मरणीय रहेगा।

* मेवाड़, मारवाड़, मालवा गुजरात, महाराष्ट्र आदि के संघों ने शोक सभाएँ कर महाराज श्री के प्रति अपना भक्ति भाव व्यक्त किया।

जिन महानुभावों ने सन्तों सतियों एवं आचार्यों ने गुरुवियोग में संतप्त मेरे हृदय को सांत्वना भरे सन्देश भेज कर एवं पूज्य गुरुदेव के प्रति श्रद्धा के सुमन प्रेषित कर जो मुझे अनुगृहित किया है उन सब को मैं हृदय से आभार प्रकट करता हूँ।

(१) आत्मदृढता :—

ग्रीष्म की धूप पूरे वेग से तप रही थी। चैत्र का महिना था। हमारे चरित्रनायक मुनिवर श्री मागीलालजी म० सा० एक ग्राम के पुरातन गृह में ठहरे हुए थे। गरमी के कारण जन्तुओं का उपद्रव स्वाभाविक ही रहता है। रात्रि के प्रथम प्रहर में मुनि श्री के पैर की अंगुली पर एक विषैले जन्तुने डस लिया, और पैर सूज गया पर धन्य है वह मुनिवर कि जिसने उफ् तक नही किया, प्रत्युत वह तो और भी आत्मध्यान मे लीन हो गये। प्रातः काल मुनियों ने अंगुली पर रक्त जमा हुआ देखकर पूछा कि यह क्या मामला है। तब कही सारी हकीकत बताई। इस प्रकार की आत्मदृढता ही जीवन को सुवासित कर सकती है।

(२) चोर भी चुपचाप चले गये

लश्कर और आगरा का मार्ग डाकुओं से घिरा रहता है। मार्ग में एकाकि कोई निकल जाय तो खैर नहीं। गुरुदेव लश्कर से आगरा की ओर प्रस्थित हुए। शाम को विहार कर किसी ग्राम जा रहे थे। मार्ग में ही दिन छिपने लगा। सड़क के समीप ही कुछ झोंपड़े दिखलाई पड़े। एक विशाल वृक्ष के निम्न भाग में चबूतरा बना था वहीं पर रात्रि विश्राम के लिये रुक गये। प्रतिक्रमणादि कर शयन किया। चान्दनी रात था। चन्द्रमा अपना स्वच्छ सौंदर्य बिखेर रहा था। सब मुनि निद्रादेवी की गोद में थे। एकाएक उपकरणों पर किसी का हाथ पड़ा। गुरु महाराज की निद्रा खुली। 'ओ३म् शान्ति' कह कर बिना किसी भय के खड़े हो गये। वहाँ देखते हैं तो विशाल काय बलिष्ठ व्यक्ति उपस्थित हैं उनमें से एक ने सहमते हुए पूछा तुम कौन हो ? जवाब में कहा हम जैनमुनि हैं।

चोर-तुम्हारे पास क्या क्या है ?

गुरुदेव-हमारे पास भिक्षा के काष्ट पात्र हैं

चोर-रुपये पैसे कितने हैं। और क्या है ?

गुरुदेव-हमारे पास रुपये कहां ? हम तो मांगकर भोजन खाते हैं। चोरों ने आपस में कहा अच्छा ही हुआ कि लट्ठ नहीं मारा वरना बेचारे बेकार ही मारे जाते। चोरों ने महाराज को नमस्कार कर कहा कि आप अब आनन्द से सोइये। कह कर आगे बढ़ गये।

(३) श्रद्धा का स्रोत

एक श्रीसम्पन्न व्यापारी ने विदेश मे स्वश्रम से पर्याप्त राशि एकत्र कर जन्म भूमि मे भव्य और नव्य भवन बनवाया। सभी प्रकार से सुखी होने के बावजूद भी सन्ताना भाव से दंपति परिवार का जीवन संतुष्ट नहीं था। भला पुत्र की कामना किसे नहीं होती। महात्माओं के प्रसाद से एक पुत्र रत्न का जन्म हुआ। कुछ काल पश्चात ही रुग्ण हो गया। इस बीच गुरुवर श्री मागीलालजी म सा का उस ग्राम में पधारना हुआ, शेठ साहब के नव्यनिर्मित प्रसाद के ऊपर के भाग में विराज गये। प्रात ही नीचे से रुदन के स्वर आने लगे, पूछा क्या बात है? ज्ञात हुआ कि बालक का अवसान हो गया है। गुरूवर नीचे पधारे और बालक का शरीर देखकर कुछ सुनाया, तत्काल बालक नें आँखे खोली, माता पिता तो हर्ष से गद्‌गद्‌ हो उठे। महाराज श्री ने फरमाया कि धर्म पर आस्था रखो। सब ठीक होगा। महाराजश्री की कृपा का ही परिणाम था कि विषाद हर्ष के रूप में बदल गया।

(४) स्नेह-स्रोतस्विनी

यह माना हुआ सत्य है कि एक की सज्जनता दूसरे मे विनम्रता पैदा कर देती है। गुरू महाराज इस प्रकार की कला मे माहिर थे। जहाँ झमेला बढ रहा हो, वहाँ यदि इनके चरण पड जाय तो संघटन अवश्यभावी है। जो व्यक्ति तटस्थवृत्ति से

रहता है उसका स्वाभाविक प्रभाव जन हृदय पर पड़ता ही है। जीवन में अहिंसा की जहाँ प्रतिष्ठा होती है वहाँ वैर विरोध स्वतः नष्ट हो कर स्नेह की सरिता प्रवाहित होने लगती है। महाराज श्री के जीवन में ऐसे एक नहीं अनेक प्रसंग मौजूद हैं। जहाँ वह पधारे और जहाँ समेला रहता उसे तत्काल मिटाने में जुट जाते। साधु का काम भी यही है जहाँ वैरी का साम्राज्य हो उसे सुहृद के रूप में बदल दे। एक प्रसंग यहाँ गुरु महाराज के जीवन का स्मरण हो आता है।

एक समय गुरु महाराज श्री पाँच मील चल कर पधारे उसी गाँव में दो धर्मस्थ बन्धु रहते थे। दोनों में आपसी स्नेह बढ़ चढ़ कर था पर आर्थिक प्रश्न ऐसी वस्तु है कि विरोध उत्पन्न कर देती है। गुरुदेव ने किसी जैनेतर बन्धु से पूछा कि वे दोनों बन्धु कहा गये हैं ? उसने धुवे स्वर में कहा कि उन दोनों में भूमि विषयक संघर्ष चल रहा है। संभव है आज फौजदारी तक मामला पहुँच जाय। क्यों कि काका भतीजा आज लाठियों और घातक शस्त्रों से लैस होकर खेत पर गये हैं। या जाने ही वाले हैं। गुरु महाराज सीधे उनके घर पर ही गये गोचरी के लिये। एक भाई वहाँ मौजूद था। सुनने पर दूसरा भी आ पहुँचा। दोनो गुरुराज के प्रति पूर्ण आस्थावान् थे। दोनों ने आहार की भावना भाई। महाराज श्री ने कहा कि क्या बहराओगे ? दोनों ने कहा जो आप चाहो। सब तैयार है। महाराज श्री ने अवसर देख कर कहा कि मैं तो एक ही बात चाहता हूँ कि आप दोनों को एक ही थाल में भोजन करता देखूं, दोनों विचार में पड़ गये कि गुरु महाराज ने गजब कर दिया। पर क्या किया जाय अब उनका आदेश हो गया तो उस टाला भी कैसे जा सकता है। यहाँ तो दोनों में

फौजदारी की तैयारियॉ हो रही थी और कहा यह स्थिति की दोनों में स्नेह सरिता प्रवाहित होने लगी। जब बात सारे चौखले में फैली तो लोग प्रभावित हुए और गुरु महाराज के प्रभाव की प्रशसा करने लगे। ऐसा था उनका गम्भीर व्यक्तित्व।

(५) संत रत व्यक्तित्व :-

ग्रीष्मऋतु, जेष्ठ का महीना और राजस्थान की धरती, चारों ओर से लू साय साय चल रही है। दिन का दूसरा प्रहर। सत मधुकरी लाने को तैयार हो रहे हैं। आठ सन्त थे। सबके नायक गुरुवर्य ही थे। अत्यन्त उष्णता के कारण सन्तों की मांग थी कि कहीं से तक्र का प्रबध हो। जहॉ विश्राम किया था उस नगर में तक्र का मिलना दुर्लभ था। इसपर गुरुवर श्री स्वय झोली पात्रा लेकर तैयार हुए। वह चाहते थे कि सन्तों की आशा पूर्ण होनी ही चाहिये। गुरूवर चकती धूप में दो मील पर गये जहॉ एक गाव था जिसमें जैनों की काफी संख्या थी। दो विशाल पात्र भरकर तक्र ले आये। संतों ने आश्चर्य व्यक्त किया। यह थी उनकी सन्त सेवा।

(६) पद मोह से मुक्त :-

राजस्थान में स्थानकवासी सप्रदाय अत्यन्त प्रसिद्ध सप्रदाय है। इसमें मेवाड़-सप्रदाय त्याग तपश्चर्या और जिनागमानुकूल सयम पालने में अति विख्यात है। स्वर्गीय जैनाचार्य पू. श्रीएकलिगदासजी म० सा० के पट्ट पर पू (१)मोतीलालजी म०

* (१) सपहेतू मादड़ी (मारवाड़) में पूज्यपद से प्रयरु बने।

सा० के उत्तराधिकारी गुरुवर्य श्री मांगीलालजी म० सा० युवाचार्य पद पर अभिषिक्त थे। साधारण व्यक्ति का पद से भले ही महत्त्व बढ़ता हो, पर जिसका पुरुषार्थ महान् और विकासी परम्परा का प्रतीक होता है उससे पद का वैशिष्ट्य अभिवृद्धि को प्राप्त होता है। महाराजश्री भी पद के अभिषिक्त थे। पर आपने जैनधर्म का महत्त्व बढ़ाने के हेतु पद यानि 'युवाचार्य' का पद-त्याग कर दिया। केवल इतना ही नहीं पर भविष्य के लिये भी निर्णय किया कि मैं कोई पद ग्रहण नहीं करूँगा। जबकि आज हम इसके विपरीत देखते हैं कि मुनिलोग पद प्राप्ति के लिये कितना श्रम करते हैं। भक्तों को मनाते हैं। फिर भी वांछित पद प्राप्त नहीं होता। महाराज श्री का यह "पद" त्याग एक आदर्श कार्य था।

(७) आभूषण वापस रख गया :—

● बागपुरा चातुर्मास के समय कोठारीजी के नोहरे में महाराजश्री विराजते थे। कुछ दूरी पर एक तेली का घर था। दीपावली के दिन तेलनने अपने चांदी के आभूषणों की पेटी संभाली तो सब गायब पाये। यह चोरी कब हुई थी? कहना कठिन था। पति पत्नी का हाल बहुत ही बुरा था। जीवन की कमाई इस प्रकार नष्ट होते देख वे इतने दुःखी हो उठे थे कि खानापीना हराम हो गया था। दृश्य करुणाजनक था। कोई कहता था कि पुलिस में रिपोर्ट करो। किसी को कोई सलाह देता था। मुसीबत वाला आदमी केवल सलाह या सहानुभूति ही नहीं चाहता वह चाहता है सहयोग। सलाह से काम नहीं बनता। सहानुभूति से सन्तोष नहीं मिलता। पर जनप्रवाह को कौन रोक सकता है।

दु खी मनुष्यों को सन्तों की सेवा में ही आसरा मिलता है। तेली दिन भर भटकता रहा, पर समस्या नहीं सुलझते देख कर पूज्य गुरुवर्य श्री के समीप आया और अपनी दुर्दशा का वर्णन किया। महाराजश्रीने कहा भाई! हम तो साधु हैं। किसी ज्योतिषी को पकड़ो, वह कुछ बता सकता है। पर तेली तो श्रद्धा सजोकर आया था, बोला मुझे आपके दर्शन से ही शान्ति मिली है। मेरी सपत्ती भी मिन ही जायगी। श्रद्धा फलती है। महाराज का कहना था कि क्या काम करते हो? खान पान कैसा है? मदिरा मास का सेवन तो नही करते? तेली ने सबकुछ स्वीकार किया। महाराजश्रीने फरमाया कि भाई! अभक्ष्य सेवन करने से धर्म नष्ट होता है, वृत्तियाँ विकृत होती हैं और मानसिक शान्ति समाप्त हो जाती है। अत इसका परित्याग करो और धर्म पर श्रद्धा रखो, सबकुछ ठीक होगा। इसे सौगन्ध करा दिया गया। वह धन्य हो गया। भाग्य सयोग मे वह रात्रि को अपने घर के बाहर द्वार पर क्या देखता है। एक नूतन लाल वस्त्र में पोटली पडी हुई है। पहिले तो वह ग्रामीण सस्कारों के कारण डरा कि यह टोटका मुझपर किसन किया है? काफी लोगों को एकत्र कर लिया। किसी का साहस नही होता था कि पोटली को स्पर्श करे। पर एक नौजवानने हिम्मत कर के उसे उठाया तो भारी प्रतीत हुआ। खोलने पर तेली के भाग खुल गये। इसी में उसके चादी के समस्त आभूषण यथावत् सुरक्षित थे। अपनी रकम पाकर सीधा गुरु महाराज के पास आ पहुँचा और उनके दर्शन के चमत्कार का बखान करने लगा, महाराजश्री मौन, सुनते रहे, क्या कहने, पर तेली तो इस पवित्रात्मा के सपर्क से जैनधर्म और सतों का सदा के लिये सेवक बन गया।

★

साधु सती ने सूरमा ज्ञानी और गजदंत।
पाछा पीछा ना फिरे जो जुग जाय अनंत ॥

नानाजी ! आप कई भोली बाता करो हो ! आप तो बाला वेई गिया हो, संयम ले लिराओ, हूँ आपरी सेवा करूँगा। ठंड तो हर साल आवे है और जावे है पर साधुपणो तो पुण्य जाग सूं ही उदय आवे है।' वयोवृद्ध नानाजी बालमुनि का उत्तर सुनकर अवाक् रह गये।

(९) हां ठंड तो पड़ा ही करती है :-

🕮 यह सर्वथा स्वाभाविक है जैसे आन्तरिक विचार होते हैं वैसे ही तर्क बन जाते हैं। साधना के सघन पथ पर विचरण करनेवाला प्रबुद्ध साधक आनेवाले संकटों की चिन्ता नहीं करता। वह तो लक्ष्य की ओर सतत गतिमान रहता है। उसे संसार की कोई शक्ति आत्मपथ से विचलित नहीं कर सकती। सांसारिक कष्ट को वह कष्ट समझता ही नहीं है। जीवन वही जो कांटों में पले। महाराज श्री के जीवन पर यह पंक्ति सोलह आना चरितार्थ होती है। एक घटना को उपेक्षित नहीं रखा जा सकता है।

आपकी वय लगभग बारह वर्ष की थी। दीक्षा लिये स्वल्प समय ही हुआ था परम पूज्य गुरूमहाराज श्री के साथ बालमुनि मागीलालजी म० विचरण करते हुए ननिहाल के गॉव पोटला पहुंचे। माघ का महीना था। शीत अपनी मूल स्थिति का पूरे वेग से परिचय दे रही थी। हड्डी फोड देनेवाली ठंड से शरीर कांप उठता था। सन्त जीवन ठहरा, परिषह का सहन ही संयमशील जीवन का आभूषण होता है। सन्त एक खपरैल के मकान में ठहरे हुए थे। छिद्रों से छन छन कर शीत की लहर मकान में आ रही थी। इतने में मुनि मागीलालजी म. सा. के नानाजी श्री अमरचन्दजी रात्रि को दर्शनार्थ पधारे। कांप रहे थे। अपने दोयते (मुनि) को वात्सल्यवश कहने लगे कि 'ठंड घणी पडे है, माथा पर हाऊ ओढ लो, परो ठरेगा। पाछो आपने घरे परो चाल, थने आछो राखूंगा, इतना सुनकर बाल मुनि ने अपनी संयम मय वृत्तिका परिचय देते हुए नानाजी को स्पष्ट कहा कि-

(८) याचना परिषह की सीमा

● मध्यप्रदेश पधारते समय महाराजश्री एक समय भोपाल मध्य भारत के निकट एक लघु ग्राम की धर्मशाला में ठहरे थे। वहाँ लगभग सभी घर अजैनों के ही थे। अकस्मात् सोंठ पीसने के लिए एक लोढ़ी (पत्थर) की आवश्यकता पड़ गई। मध्यान्ह का समय था। गुरु महाराज स्वयं एक विशाल और सम्पन्नभवन के द्वार पर पहुँचे, ताकि सरलता से पाषाण मिल जाय, पर वहाँ तो गजब हो गया ज्यों ही महाराजने भव्य भवन में चरण रखे त्यो ही वहाँ बैठी हुई बाई भयभीत होकर चिल्लाने लगी कि "दौड़ो दौड़ो डाकू आ गया" गुरुदेव किंकर्तव्य विमूढ़ वहीं खड़े हो गये। इधर जनता एकत्र हो गई। पाठक अनुमान लगा सकते हैं कि ऐसे अवसरों पर जनता प्रायः विवेक खो बैठती है। पर गुरु महाराज की सौम्यता देखते ही जनता का आवेश शमित हो गया। महाराजने मधुर वाणी में फरमाया कि मैं तो जैन साधु हूँ। सूंठ पीसने के लिये लोढ़ी लेने आया था इतने में बाईने हल्ला मचा दिया। यदि यह लोढ़ी दे तो ठीक है अन्यथा दूसरे घर याचना करेंगे। उपस्थित जनसमुदायने बाई को समझाया कि यह तो जैनमुनि हैं किसी भी प्राणी को कष्ट नहीं देते। बाई बहुत ही लज्जित हुई। और क्षमा याचना करने लगी। और आहार पानी का भाव रखा।

प्रतिकूल परिस्थिति में भी गुरु महाराज मानसिक सन्तुलन बनाये रखते थे।

★

(९) हां ठंड तो पड़ा ही करती है :–

🕮 यह सर्वथा स्वाभाविक है जैसे आन्तरिक विचार होते हैं वैसे ही तर्क बन जाते हैं। साधना के सघन पथ पर विचरण करनेवाला प्रबुद्ध साधक आनेवाले संकटों की चिन्ता नहीं करता। वह तो लक्ष्य की ओर सतत गतिमान रहता है। उसे संसार की कोई शक्ति आत्मपथ से विचलित नहीं कर सकती। सांसारिक कष्ट को वह कष्ट समझता ही नही है। जीवन वही जो काँटों में पले। महाराज श्री के जीवन पर यह पंक्ति सोलह आना चरितार्थ होती है। एक घटना को उपेक्षित नही रखा जा सकता है।

आपकी वय लगभग बारह वर्ष की थी। दीक्षा लिये स्वल्प समय ही हुआ था परम पूज्य गुरुमहाराज श्री के साथ बालमुनि मांगीलालजी म० विचरण करते हुए ननिहाल के गाँव पोटला पहुँचे। माघ का महीना था। शीत अपनी मूल स्थिति का पूरे वेग से परिचय दे रही थी। हड्डी फोड देनेवाली ठंड से शरीर कांप उठता था। सन्त जीवन ठहरा, परिषह का सहन ही संयमशील जीवन का आभूषण होता है। सन्त एक खपरैल के मकान में ठहरे हुए थे। छिद्रों से छन छन कर शीत की लहर मकान में आ रही थी। इतने में मुनि मांगीलालजी म सा के नानाजी श्री अमरचन्दजी रात्रि को दर्शनार्थ पधारे। कांप रहे थे। अपने दोयते (मुनि) को वात्सल्यवश कहने लगे कि 'ठंड घणी पड़े है, माथा पर हाऊ ओढ लो, परो ठरेगा। पाओ आपने घरे परो चाल, थने आछो राखूं गा, इतना सुनकर बाल मुनि ने अपनी संयम मय वृत्तिका परिचय देते हुए नानाजी को स्पष्ट कहा कि–

साधु सती ने शूरमा ज्ञानी और गजदंत ।
एता पाछा ना फिरे जो जुग जाय अनंत ॥

नानाजी ! आप काई ओछी बातां करो हो ? आप अब तो बूढ़ा व्हे गिया हो, संयम ले लिरावो, हूँ आपरी सेवा करूँगा । ठंड तो हर साल आवे है और जावे है पर साधुपणो तो पुण्य जाग सूं ही उदय आवे है । ' वयोवृद्ध नानाजी बालमुनि का उत्तर सुनकर अवाक् रह गये ।

गुरुगुण यशोगान

वि
वि भा ग
ग
दूसरा

अनेक कवियों के उद्‌गार
अगले पृष्ठों पर
॥ पढ़िए ॥

—गुणाचार्यपदालंकृत मुनि श्री मांगीलालाष्टकम्

★
★

रचयिता—पूज्य श्री घासीलालजी महाराज

[भुजङ्गप्रयातम्]

यदीया च दीक्षा सदा जीवरक्षा,
यदीया सुशिक्षा च कल्याणदक्षा ।
सदा वर्तते धर्मरक्तस्तु यस्तं,
भजध्वं भजध्वं मुनिं मांगिलालम् ॥

यदीयो विवेकः कषायस्य हर्ता,
यदीयोपदेशः सदा सौख्यकर्ता ।
नमन् यो जिनेन्द्रं प्रयातो दिवं तं,
भजध्वं भजध्वं मुनिं मांगिलालम् ॥

मुनिश्री मांगीलालजी म. श्रीका यशोगान

[हरिगीतिका]

जीवरक्षा के लिये, जिनकी हुई दीक्षा सदा।
संसारजन कल्याणदक्षा, थी सुशिक्षा सर्वदा॥

थे धर्मतत्पर वे सदा उन धर्मयतनापाल को।
भजलो भविक जन भावसे, युवराज मांगीलाल को॥ १

जिनका विवेक, कषायरिपुदल, नाशकारक था सदा।
उपदेश जिनका सकल जन, सुखशान्तिकारकसर्वदा॥

जिनपद नमत स्वर्गी बने, उन धर्मयतनापाल को।
भजलो भविकजन भावसे युवराजमांगीलाल को॥ २

युवाचार्यसंज्ञं पदं यो न्यधत्त,
न्यधत्त स्वगच्छे हितं य ः सदैव ।
जगद्वन्द्यतां प्राप्तवान् यो मुनिस्तं,
भजध्वं भजध्वं मुनिं माँगिलालम् ३

नमस्कारमन्त्रं पवित्रं लवित्रं,
सदा कर्मवन्धस्य चित्ते दधार ।
स्मरन्वारवारं गतोऽन्तेऽन्तमेनं,
भजध्वं भजध्वं मुनिं माँगिलालम् ॥ ४

सदा भक्तिभावात् भजन्ते स्वभक्ता ः,
सदा नम्रभावान् नमन्त्येव नित्यम् ।
निराधारशिष्यान् त्यजन् यो गतस्तं,
भजध्वं भजध्वं मुनिं माँगिलालम् ॥ ५

युवाचार्य नामक पद जिन्होंने मान से धारण किया।
निजगच्छ के कल्याण हित, जो देह को धारण किया॥
सकल जन के बन्धु थे, उन धर्मयतनापाल को।
भजलो भविक जन भाव से, युवराज मांगीलाल को॥ ३

अतिशय लगे थे सर्वदा जो कर्मबन्धविनाश में।
तादृश नमस्कृतिमन्त्र को जपते हृदयशतपत्र१ में॥
सुमिरन करत स्वर्गी बने, उन धर्मयतनापाल को।
भजलो भविक जन भाव से, युवराज मांगीलाल को॥ ४

भक्त जन भजते जिन्हें अति भक्तिभाव विकास से।
आनन्द मग्न प्रणाम करते नम्रभक्ति सुभाव से॥
तज शिष्यजन को जो गये उन धर्मयतना पाल को।
भजलो भविक जन भावसे, युवराज मांगीलाल को॥ ५

१ कमल

अरे काल ! हत्वाऽभवस्त्वं धिगस्तु,
दयाभावमात्राऽन्वितस्यापि हन्ता ।
मुनिं तं च नीत्वा कृतार्थोऽस्यनार्य,
भजध्वं भजध्वं मुनिं मांगिलालम् ॥

कृपादृष्टिरस्मासु गच्छे यथाऽऽसीत्,
सदा सर्वकल्याणकारिप्रभावा ।
वने धर्मरीतिं वितन्वन् गतस्तं,
भजध्वं भजध्वं मुनिं मांगिलालम् ॥

भवद्दर्शनं मङ्गलं मोदकृत्वम्,
भवेत्स्वप्नमध्ये सदा प्रार्थनीयम् ।
स्तुवन् यो जिनं सम्प्रयातो मुनिस्तं,
भजध्वं भजध्वं मुनिं मांगिलालम् ॥

जिनका हृदय भरपूर था, कारूण्य जल से सर्वदा।
हर कर बना कृत कृत्य तू रे काल धिक्, तुझको सदा॥

मुनिराज समता भाव युत उन धर्मयतनापाल को।
भजलो भविकजन भाव से, युवराजमांगीलाल को॥ ६

सर्वदा कल्याणकारी भावयुत करुणामयी।
जिनगच्छ में अरु हम सबों में, दृष्टि थी समता मयी॥

जो धर्म रीति पढ़ा गये उन धर्मयतनापाल को।
भजलो भविक जन भाव से, युवराज मांगीलाल को॥ ७

आनन्दकन्द अतीव मगन, आपका दर्शन मुने।
हो स्वप्न में मुझको सदा, यह प्रार्थना सुनलो मुने॥

जिनवन्दना करते गये उन धर्मयतनापालको।
भजलो भविकजन भाव से युवराज मांगीलाल को॥ ८

— अनुष्टुप् —

युवाचार्यपदप्राप्त, मांगिलालमहामुने—
रष्टकं घासिमलेन, कृतं भूयाच्च मंगलम् ॥

—दोहा—

मांगीलाल मुनीशका, अष्टक मंगलकार।
पढ़े सुने जो भाव से, वरते मंगलाचार॥

यशोगानः—

तर्ज- कव्वालकी रचयिता—श्री हस्तिमलजी

मुनि मांगीलालजी !

संयम लीनो है पूरण प्रेम से । टेर

संचेती वंश के मांयने सरे, हुआ आप पुण्यवान
गम्भीर मलजी पिता आपके, बहुल गुणों की खान

मेवाड़ देश में "राज करेड़ा" सुनिये ध्यानलगाय
वहां पर जन्म लियागुरुवरन, शोभा कही न जाय

गृह वास तज संयम लीनो, रायपुर ग्राम मुझार
श्री संघ मिलकर उच्छव कीनो, मात 'मगनबाई' लार...३

ज्ञान अमोलख दिया आपको, पूज्य मोटा मुनिराय
एकलिंगदासजी गुरुवर भेट्या, तज मिथ्या, मोह, माय...४

उन्नीसो अष्टोत्तर साल में, लीनो संजमभार
चारों संघ मिल पदवी दीनी, "लावा" शहर मुझार...५

साल निन्याणू 'नाई" नगर में, वरते जयजयकार
"हस्ति मुनि" ने गुरु गुण गाया, दिल में हर्ष अपार...६

——*—*

—:हार्दिक शोक लहर:—

तर्ज आसावरी रचयिता—श्री पुष्करमुनि "ललित"

आज सबका हृदय घबराए
प्यारे गुरुवर स्वर्ग सिधाए—टेर

प्यारी सूरत अमृत वाणी
याद कर रहे हैं सब प्राणी
कहां छिप गए याद सताए..

मांगीलालजी गुरुवर प्यारे
मेरे जीवन के मात्र सहारे
टूटा सहारा कहां पर जाए...

कौन अमृत वचन सुनाए
कौन स्नेह दे द दुलराए
हाय ! आज हृदय दुःख पाए
सब सूना कर गए स्वामी
कौन पूरेगा अब यह खामी
नैनों आंसू भर भर आए

ज्ञान ध्यान जीवन के दाता,
मेरे स्वामी सखा पितु माता ।
मैंने सब कुछ आपको पाए

दिल के दुःख का तो पार नहीं है
आशा कुछ भी न शेष रही है
हमें असमय गुरु बिलखाए

गुणो के दरिया थे अनुग्रह सिंधु
सबके हितकारी सबके बन्धु
हम श्रद्धा के पुष्प चढ़ाए

पावन चरना में वन्दन हमारा
पाए संसार सागर किनारा
"मुनि पुष्कर" बलिहारी आए

वन्दन और क्रन्दन

तर्ज-ढोला ढोल मजीरा —रचयिता —श्री मगनमुनिजी "रसिक"

गुरुवर गीत आप रा गाऊँ रे
चरणां मांही झुक-झुक म्हारो शीष झुकाऊँ रे....

मागीलालजी नाम आपको, सुणतां आनन्द आवे।
गुण का सागर आप कहाया, नर नारी गुण गावे॥ १॥

अमृत वाणी सुन सुन करके, जनता सब हर्षाती।
मनमोहन सूरत देखीने, फूली नहीं समाती॥ २॥

जन्मभूमि श्री "राजकरेडा" चोमासा की धारी।
विनति मानी पोटलां, खुशिया छाई भारी॥ ३॥

गाव सहाड़ा में आप पधारे, सुखशाता मे स्वामी।
स्वर्ग पधार्या आप वहां पर, म्हारा अन्तर्यामी॥ ४॥

मन की मनमें रह गई स्वामी, अब दर्शन कहा पावां।
निराधार म्हा वेग्या गुरुवर, दौड दौड़ कहां जावां॥ ५॥

आप बिना मारो सब सूनो, दिल मैं दुखड़ो छायो।
"रसिक" चरण किकर गुरुवरको, शरण आपके आयो॥ ६॥

आरती

तर्ज - जय जगदीश हरे —रचयिता - भैरुंलाल जैन

ॐ जय जय गुरु ज्ञानी, स्वामी जय जय गुरु ज्ञानी
मागीलालजी गुरुवर, भजलो सब प्राणी॥ टेर॥

कौन अमृत वचन सुनाए
कौन स्नेह दे दे दुलराए
हाय ! आज हृदय दुःख पाए
सब सूना कर गए स्वामी
कौन पूरेगा अब यह खामी
नैनों आंसू भर भर आए

ज्ञान ध्यान जीवन के दाता,
मेरे स्वामी सखा पितु माता ।
मैंने सब कुछ आपको पाए
दिल के दुःख का तो पार नहीं है
आशा कुछ भी न शेष रही है
हमें भवबिच गुरु छिटकाए
गुणों के दरिया थे अनुग्रह सिन्धु
सबके हितकारी सबके बन्धु
हम श्रद्धा के पुष्प चढ़ाए
पावन चरणों में वन्दन हमारा
पाए संसार सागर किनारा
'मुनि पुष्कर" बलिहारी जाए

वन्दन और क्रन्दन

तर्ज-ढोला ढोल मजीरा —रचयिता —श्री मगनमुनिजी "रसिक"

गुरुवर गीत आप रा गाऊँ रे
चरणां मांही झुक-झुक म्हारो शीष झुकाऊँ रे ...

मागीलालजी नाम आपको, सुणतां आनन्द आवे।
गुण का सागर आप कहाया, नर नारी गुण गावे॥ १॥

अमृत वाणी सुन सुन करके, जनता सब हर्षाती।
मनमोहन सूरत देखीने, फूली नहीं समाती ॥ २॥

जन्मभूमि श्री "राजकरेड़ा" चोमासा की धारी।
विनति मानी पोटगां, खुशिया छाई भारी ॥ ३॥

गांव सहाड़ा में आप पधारे, सुखशाता में स्वामी।
स्वर्ग पधार्या आप वहां पर, म्हारा अन्तर्यामी ॥ ४॥

मन की मनमें रह गई स्वामी, अब दर्शन कहा पावां।
निराधार म्हा वेग्या गुरुवर, दौड दौड़ कहां जावां॥ ५॥

आप बिना सारो सघ सूनो, दिल में दुखड़ो छायो।
"रसिक" चरण किंकर गुरुवरको, शरण आपके आयो ॥ ६॥

आरती

तर्ज - जय जगदीश हरे —रचयिता - भैरुंलाल जैन

ॐ जय जय गुरु ज्ञानी, स्वामी जय जय गुरु ज्ञानी
मागीलालजी गुरुवर, भजलो सब प्राणी ॥ टेर ॥

राज करेड़ा जन्मे, भाग्य तेरा पाया-स्वामी।
"गम्भीर" पिता के प्यार, मात मगन भाया —०

सड़सठ साल पोष माह में जन्म आप धारा—स्वामी
कुल दीपक कुल चमका, निज वंश उजियारा —०...

बचपन में सुसंगत करी, लीनों मग धारी-स्वामी
"आचार्य एकलिंग" गुरुने दिक्षा संयम धारी—०...

ग्यारह मासकी उमर मांही छोड़ दिया घरको-स्वामी
ज्ञान ध्यान गुणवन्ता, वन्दन मुनिवर को—०...

विघ्न निवारण मनोरथपूरण धीर वीर प्यारे-स्वामी
तारे कई नर नारी, भव संकट हारे —०

चिन्ता चूरण आशापूरण नाम है गुणकारा—स्वामी
जो नर तुमको ध्यावे, पावे सुख भारी—०...

प्रात उठ नित सुमिरण करता पूगे मन आशा-स्वामी
"भैरुलाल" गुण गावे हो शिवपुर वासा—०...

★

गुरुवर छोड़ गए

तर्ज-छोड़ बाबुल का घर—रचयिताः-श्री मगनमुनिजी "रसिक"

निराधार महान छोड़ हमको सुख मोड़
गुरुवर छोड़ गये ...

मात "मगन' के लाल नगीना तुम्हीं।
पिता गम्भीर' प्यारे सलौना सही ॥
राज करेड़ा के मांय जन्म लीनों थो आय...

उपकारी महा दीन वन्धु गुणी ।
प्रति पालक मत शिरमौड मुनि ॥
लीना सयम भार, लीना गुरुवर धार ...

अल्प उम्र में सयम धार लिया ।
जिन वचनों का पूर्ण पालन किया ॥
घूमे देश विदेश, दिया धर्म सदेश....

त्याग वैराग्य जीवन में पूरा भरा ।
सन्त रत्न गुणाकर "रसिक" खरा ॥
गए स्वर्ग सिधार, झूरे कई नर नार ..

भव्य विभूति खो गई जी ...

तर्ज-हेल्यारा रा बावजी—रचयिता -श्री पुष्करमुनिजी "ललित"

अहो गुरुजी छोड़ चले अब
किसका है आधार जी.

मोहक मूरत याद सताए,
हर घड़ी हर बार जी ..

"पुखा" "पुखा" कौन कहेगा,
बैठू किसके पास जी

मीठी मीठी अमृत वाणी,
देवे कुण विश्वास जी .

ऐसी तो नहीं आशा थी स्वामी
तज होगे इस ठौरको ...
हा ! हा ! रे इस काल क्रूर ने
किया है पातक घोर को ...
क्या थी आशा मुझको गुरुवर
आशा निष्फल हो गई थी....
'पुष्कर' लोचन नीर बहाते
भव्य विभूति खो गईथी ...

★

श्रद्धा—सुमन

तर्ज – कव्वाली रचयिता – श्री मगनमुनिजी "रसिक"

मांगीलालजी गुरुवर प्यारे
सबको छाड़के स्वर्ग सिधारे... टेर
गाम करेड़ा में जन्म जो पाया ॥
नर नारी सभी हुलसाया ॥
मात मगन के आप दुलारे....
पूज्य एकलिंग नाम गुरु भारी ।
गुरु मेरा है बाल ब्रह्मचारी ॥
जिन शासन के आप सितारे....
गांव रायपुर में संयम लीना ।
छोटी वयमें जगत तज दीना ॥
धन्य धन्य नयन के तारे...

गांव नगर में धर्म फैलाया ।
सत्य अहिंसा का पाठ पढाया ॥
भव्य जीवों के कारज सारे.

विचरत आप सहाड़ा मे आया ।
स्वामी एक दम स्वर्ग सिधाया ॥
छोटे मोटे सब आंसू डारे..

कैसा काल कराल कहाया ।
गुरुवरजी को ले के सिधाया ॥
भक्तजन के थे प्राण सहारे.

अहो प्यारे गुरुवर कहा हो ।
झेलो वन्दन आप जहां हो ॥
दर्शन दुर्लभ आज तुम्हारे.

श्रद्धा पुष्प चरण में चढाए
जलसे "रसिक" नयनभर आए ॥
जीवन धन्य बनाके पधारे..

★

पड़ासोली संघ की श्रद्धांजलि

तर्ज-मारवाडी रचयिता -श्री सघ

अब हम किणारी करस्या सेव ।
म्हाने क्यों छोड्या गुरु देव ॥
बिलखे शिष्य और शिष्याए, बिलखे सब नरनार ।
याद सतावे गुरु तुम्हारी, छूटे आसू धार . . .

अनुकम्पा अनहद थी स्वामी, आपके हृदय मुम्भार ।
बन गए क्यों गुरु निर्मोही, छोड़ गये मझधार.... ..

पाते आप सिन्धान्त सुनाते, अमृत सम व्याख्यान ।
जनता सारी हर्षित रहती देते सच्चा ज्ञान...... ....

सहाड़ा ग्राम में आप गुरुवर कीनों स्वर्ग निवास ।
जेठ सुदी गुरुवार चतुर्दशी, कीना हम निराश.. ... .

हस्ति मुनिजी पुष्कर मुनिजी तपस्वी कन्हैयालाल ।
मिनट एक की ढील न करते (अब) कौन करे संभाल .....

कौन सुने किस पास में आवे, किससे करें निज बात ।
दुष्ट अन्यायी काल ने मर लूट लिया सिर नाथ ...

सूरत अधिक सुहावनी स्वामी, ज्यों तारा में चन्द ।
संयम पाली स्वर्ग सिधाया, मात मगन के नन्द ....

पदासोली संघ की इच्छा स्वामी रह गई मन के मांय ।
टूटी नहीं अन्तराय हमारी, वश न कीना लोय..... ..

संघ पदासोली गुरु बिन तरसे, नैणा बरसे नीर ।
बिन चैतार्यों छोड्या म्हाने ... ... का पीर

प्रेममयी श्रद्धांजलि

तर्ज-प्यारी नगरी रचयिता-रतीलाल डीगड़(भरनोता)

गुरुवर गुरुवर रोज पुकारू गुरुवर हमको छोड़ चले ।
हृदय दुःख से भर भर आता, ओ गुरुवर कहाँ छोड़ चले ॥

दर्शन करने जब मैं जाता, दर्शन कर सुख पाता था ।
शब्द शब्द में अमृत झरता, मिष्ट वचन सुन पाता था ॥

सुन सुन करके वाणी गुरु की,
मानो मुरझे कुसुम खिले .

हा! हा!! रे तूँ काल क्रूर ये, क्या अधमता तेने करी ।
हृदय वल्लभ थे गुरुवर जी, जगमग ज्योति तेने हरी ॥

देवीलाल यों गुरु गुण गाता
नयनों से ऑसू मेरे ढले .

तर्ज-सेवो श्री रिष्टनेम— रचियता –कन्हैयालाल बम्ब (पड़ासोली)

ऐसा ज्ञानी गुरु ओ ऐसा ज्ञानी गुरु,
नित उठ के मैं तो ध्यान धरूँ

सचेती कुल गभीर मलजी है तात,
माता मगन का प्यारा अगजात .

नाम आपको श्री मॉगीलाल,
छः काया के आप हैं प्रतिपाल

पच महाव्रत पालो गुरुराज,
इस भव में मेरे हो सिरताज

छोड चले स्वामी मुनियों का साथ,
तुम बिन चैन न आवे दिन रात ..

साल बीस में किया हमने निराश,
सठ सुदी पचदश लग निवास......

प्रेम गुरुजी का जो जगे आप,
भव भव का मिटे कर्म संताप......

दास कन्हैया की यही अरदास,
शिवपुर नगरी का हो मुझे वास......

★

गुरु गुणगान

तर्ज—देखा रूठोजी   रचयिता—सुवालसिंह जैन (उज्जैन)

आये, आये, जी हाँ, हाँ आप आप जी,
मुनि मांगीलालजी मेरे मन भाये ॥टेर॥

नगर रायचुरका जन्म मगन पुत्र कहलाए।
बाल हुए गम्भीर ज्ञान के, जन-मन अति हुलसाए ——

पूज्य रघुविजय गुरु के कर से, मुनिवर का पद पाए।
संयम व्रत को धार आपने, धर्म को खूब दिपाए.. ..

जैनागम तत्त्वार्थ ग्रन्थ पढ़ धर्म बोध बतलाए।
के शिष्य मुनि हस्तीमल का नगर नगर यश पाए——

स्थान-स्थान पर ठहर मुनिवर, जैन धर्म फैलाए।
चारों ओर कीर्ति फैली अब, सौ में एक कहाए ——

पुण्य उदय से नयापुरा में गुरु चौमासा ठाए।
गुरुवर के पावन चरणों में, शीश 'सुवाल' झुकाए——

★

तर्ज—तेरे पूजन को भगवान

रचयिता-सुजानसिंह सेठिया

खुशी का आता नहीं कुछ पार
पधारे जैन मुनि अणगार.. टेर

नगरी उज्जैनी के माय, कृपा कर आए दो मुनिराय।
संघ में छाया हर्ष अपार ...

मुनि श्री मांगीलालजी ज्ञानी, जिनकी अमृत जैसी वाणी।
श्रवण कर खुश होते नरनार

हुआ यहां चातुर्मास ये पहला, जिससे दयाधर्म बहु फैला।
गुरु के गुण गावो हर बार..

जैन बालकों की यह अर्जी, कृपा करके सुनिये गुरुवरजी।
हमारी नाव लगादो पार.

ईस्वी सन् पचास का आया, प्रेम से भजन 'सुजान' बनाया।
गुरु के चरण नमे हर बार

—०—

कवितामयी श्रद्धांजलि

रचयिता-ख्यालीलाल जी बोल्या

बहुत दिनों से अभिलाषा थी।
गुरु दर्शन की आशा थी॥

हो न सकी अभिलाषा पूरी।
रही अन्तराय कर्म से दूरी॥

कहा किसी ने 'गुरु स्वर्ग सिधाए' ।
धक्का लगा हृदय घबराए ॥

अब इस जन्म दर्शन आपके पावेंगे कहाँ ।
दर्शन बिन नैन तरसते रहेंगे यहाँ ॥

कहाँ अब आपके अमृत वचन बरसेंगे ।
कैसे हमारे शुष्क हृदय सरसेंगे ॥

जीवन के आधार ज्ञान भंडार थे ।
शासन के शृंगार तुम्हीं हृदय के हार थे ॥

परम उदार परंपरा पालक मुनि पूर्ण करुणाकर थे ।
संयम पथ विहारी जैन धर्म रत्नाकर थे ॥

जो थे गुण उनमें और वृद्धि कर डालिये ।
फिर केवल ज्ञान प्राप्तकर मोक्ष पधारिये ॥

के एल की तुच्छ श्रद्धांजली स्वीकारिये ॥

सन्तों में सन्त-रत्न

तर्ज—छन्द त्रिपदी — हस्ती मुनि राजकरेडा

जय जयकारी, बाल ब्रह्मचारी शुभ संयम धारी, धर्मवंता ।
मान परि ध्यावे, अति सुख पावे मन हरषावे, स्तुति करंता ॥
नियम नीति उत्तम प्रीति, साधुपन रीति, हृदय धारं ।
जनराय मति प सं, मार्ग दयालं, मुनि (गुरु) मांगीलालं अणगारं ।१।

पंच महावरति, पांचों सुमति, तीनों गुप्ती, दिल ठानी ।
समता सागर, दयानिधि आगर, ज्ञान उजागर गुणखानी ॥
सप्तभय टारी, अष्टमद हारी, महिमा तुम्हारी, विस्तार ।
छकाय प्रतिपाल, आप दयाल, मुनि (गुरु) मागीलाल अणगार ।२।

आज्ञा आराधक, पूरण साधक, प्रतिज्ञा पालक अनुरागी ।
श्रेष्ठ मतिदाता, शीश नमाता, त्याग की बाता, उग्जागी ॥
महा उपकारी, सहन शक्ति भारी, कोमलता सारी, बेशुमार ।
छकाय प्रतिपाल, आपदयाल, मुनि (गुरु) मांगीलाल, अणगार ।३।

आगम के ज्ञाता गुरु गम बाता, रहस्य बतलाता, हितकारी ।
दयालु मुनिवर, शीतल सरवर, जपते जिनवर आलस टारी ॥
गुरुसेवा किनी, यशकीर्ति लिनी, क्रिया जिणी, उरधार ।
छकाय प्रतिपाल, आप दयाल मुनि (गुरु) मागीलाल अणगार ।४।

प्रसन्नचाथी मनमें, आलस नहिं तनमें, निर्मल मुनिपन में, था उजेला ।
अन्तसमै सथारा स्ववश दिन धारा चार शरण स्वीकारा अन्तिमवेला॥
गये स्वर्ग पधारी, हजारों नरनारी, आखे आंसू डारी पुकार ।
छकाय प्रतिपाल, आप दयाल, मुनि (गुरु) मागीलाल अणगार ।५।

अरे! काल कराला, क्या कर डाला, गुण रत्नों की माला लूट गया ।
सतों की जोड़ी, पलक में तोड़ी, हे गुरु–मुख मोडी, उठ गया ॥
एक बार पधारो, हय को रखवारो, सेवक चरणारों अवधार ।
छकाय प्रतिपाल, आप दयाल, मुनि (गुरु) मागीलाल अणगार ।६।

★

गुरु-गुणसागर

हरीगीतिका (पचक)

सं-वेग वरती हृदय जिनका था दया करुणा भरा ।
य-त्न पूर्वक सफल करणी जैन मारग में खरा ॥
म-धुर भाषी नित्य करते, धर्म की शुभ मण्डना ।
र-त्न मंजूषा मुनिराज को, हो हमारी वन्दना ॥१॥
क्ष-मा धारी ब्रह्मचारी, कष्ट सयम हित सहे ।
क-र्तव्य पालक दीनबन्धु, साम्य भावों में रहे ॥
द-र्श उनका था मगलमय कभी न करते खण्डना ।
या-द कर गुरुराज को, मैं नित्य करता वन्दना ॥२॥
क्षु-भ कर सब पाप को, वे स्वच्छ मन गभीर थे ।
मु-ख्य उनकी शान्त मुद्रा धर्म के वे वीर थे ॥
नि-लिप्त किंचित् कषाय से, उत्कृष्ट करते मथना ।
मां-ग करते धर्म की वे, हो हमारी वन्दना ॥३॥
गि-रते हुए को साथ लेते दूरदर्शी थे सदा ।
ला-यक बनाते प्रेम से, वह दुःख नहीं पाता कदा ॥
ल-ग्न से वे रटन करते थे, श्री सिद्धार्थ नन्दना ।
जी-वन सफल उनका बना था, हो हमारी वन्दना ॥४॥
म-हिमा उन्हों की अतुल है वे दीन के प्रतिपाल थे ।
हा-र्दिक हिताहित सोचते जैन शासन के ढाल थे ॥
रा-ही बने शिवधाम के, वे कर्म शत्रु निकन्दना ।
ज-गत में उन सत मुनि को हो हमारी वन्दना ॥५॥

गुरुराज छोड़ चले

तर्ज-मेरी आनकी

।टेर। गुरुवर गजब करी रे ।
परलोक पधारे उमंग भरी रे ॥

॥१॥ युगल युग अम्बर पाकर, कैसी ममता मरी रे ।
भवसागर तिरण इच्छा से संयम भेख धरी रे ॥ गुरुवर ॥

॥२॥ सर्वोत्तम तप जप निरंतर, विनय वृत्ति चढ़ी रे ॥
ज्ञान क्रिया की धून लगी पर श्रद्धा अटूट खरी रे ॥ गुरुवर ॥

॥ ३ ॥ कषाय रिपु को दूर हटाया समता शील भरी रे ।
निमल नियम सबके हितैषी श्रेष्ठ आत्मा तुम्हरी रे ॥ गुरुवर ॥

॥ ४ ॥ महामुनि मांगीलाल जी, गुण रत्नो की लड़ी रे ।
पय पच्चीस शरण गज प्रीति पलक मे हरी रे ॥ गुरुवर ॥

तर्ज – ख्याल की

लेखकः—मा. शोभालालजी महता, उदयपुर

आछो दीपायो मारग जैन को, मुनि मांगीलालजी–आछो–॥ध्रूव॥

मेदपाट में है मञ्जुल अति, राजकरेड़ा भारी।
पिता आपके गम्भीरमलजी, मगनबाई महतारी ॥१॥ मुनि ॥

संवत् गुन्नी से साल सतेसठ, शुभ वेला शुभ वारी।
जन्म लियो पोपी अमावस, आनन्द मंगलकारी ॥२॥ मुनि ॥

पूज्य श्री एकलिङ्गदासजी से, बोधामृत पाया।
ऊँचे भाव से दीक्षा लीनी, मन वैराग्य समाया ॥३॥ मुनि ॥

शांत स्वभावी बड़े विचिक्षण, थे गम्भीर महान।
किस मुख से तारीफ करू में, जाणे सकल जहान ॥४॥ मुनि ॥

ग्राम नगर पुर पाटण विचरत, खूब ही धर्म दिपाया।
जिन शासन की शान वढ़ाई, भव्य जीव समझाया ॥५॥ मुनि ॥

दो हजार इकीस साल में, गांव सहाड़े आया।
जेठ सुदि चतुर्दशीदिन, मुनीजी स्वर्ग सिधाया ॥६॥ मुनि ॥

दो हजार बावीस सालमे, कार्तिक शुक्ला मांही।
त्रयो दशी मंगल के दिन, यह "शोभा" जोड़ बनाई ॥७॥ मुनि ॥

श्री

स्वर्गीय गुरुदेव श्री माँगीलालजी महाराजस्य

अष्टक

प्रेषक : मदन मुनि (पथिक)

शार्दूल विक्रीडित छन्दः

मेवाडे प्रथिते शुभे गुणयुते, वंशे च शौर्यान्विते ।
ग्रामे राजकरेड नामनि जनैः स्तुत्ये विशुद्धे कुले ॥
प्रभा मातुरयो जनि समभवद् गम्भीरमल्लाद् पितुः ।
माँगीलाल इति प्रमोदमनसा तस्याभिधानं कृतम् ॥१

* * *

वर्षेष्विन्दु विधुमद् मिताय शिशुतां भासः स पौगण्डताम् ।
विद्याऽभ्यासपरायणोऽनुदिवसं जातो दशाब्दः क्रमात् ॥
वैराग्यान्वितमानसः समभवच्चैकादशाब्दे यदा ।
तथाऽऽगाद् गुरुरेकलिङ्गगणिराड् ज्ञानादिरत्नाकरः ॥ २

* * *

श्रुत्वाऽसौ गुरुसन्निधौ जिनगिरं दीक्षां शुभामग्रहीद् ।
शास्त्राणां पठने सदुद्यतमतिर्जातो गुरूपासकः ॥
वर्षे नेत्रयुगाधिके प्रतमयो संपाल्य भावान्वितः ।
संप्राप्त सुरलोकमद्य सकलो लोको हि शोकाऽऽकुलः ॥ ३

* * *

ज्ञानं यस्य तपश्च दर्शनयुतं चारित्रमात्यन्तिकं ।
नित्यं रत्नचतुष्टयी प्रविकसा मोई भमार्थु समाः ॥
तस्याऽऽत्मा सततं गतः परमसं शान्तिं परामाप्नुयात् ।
भव्यानां शुभभावना इति सदा लोके समुज्जृम्भते ॥ ४

* * *

श्री

बालब्रह्मचारी गुरुवर्यश्री मांगीलालजी म० श्री

का

यशोगान

* हिन्दी हरिगीतिका *

अतिशूर जग विख्यात श्री मेवाड देश प्रसिद्ध में ।
राज करेडा ग्राम विच, गुण युक्त वंश विशुद्ध में ॥
गम्भीरमल्ल पिता तथा मग्ना सुमाता के यहाँ ।
शुभ काल में उत्पन्न "मांगीलाल" नाम रहे जहां ॥ १ ॥

* * *

वर्धिष्णु विधुवद् बालता को छोड़कर पौगण्ड में ।
विद्याभ्यसन में निरत नित दशवर्षजात उमंग में ॥
वैराग्य युत मानस हुये जब ही एकादश वर्ष में ।
तब ही मिले गणिराज गुरुवरएकलिङ्ग सहर्ष में ॥ २ ॥

* * *

जिन वचन गुरु के निकट सुन दीक्षा ग्रहण कर आपने ।
अंगादि शास्त्राध्ययन में मन को लगाया आपने ॥
ब्यालीस वर्षों से अधिक शुभ भाव से व्रत पालन कर ।
इस लोक को व्याकुल किये सुरलोक आज सिधारकर ॥ ३ ॥

* * *

चारित्र दर्शन ज्ञान तप जिनका निरन्तर चन्द्र सम ।
विख्यात था इस लोक में मोहान्धकार विनाश तम ॥
पर लोक गत वे मुनि परम सुख शान्ति पावे सर्वदा ।
यह भव्य जन के हृदय में शुभ भावना है सर्वदा ॥ ४ ॥

* * *

आसीत्लोकहिताय केवलमहो यस्य प्रवृत्तिः शुभा ।
यस्यासीत्प्रकृतिश्चिरन्तनमुने स्तुल्यैव निःसंशयम् ॥
य दृष्ट्वा समभूद् सुखी जनमनो मोदान्वितं सोऽधुना ।
शून्यं लोकमिमं विधाय गतवान् तेनैव खिद्यामहे ॥५॥

* * *

संसारस्य विनश्वरत्वमनिशं यश्चिन्तयन् सन्ततम् ।
स्वात्मानं च परं च शाश्वतपदं नेतुं प्रयत्नान्वितः ॥
शुद्धाऽऽचारविचारधर्मनिरतो यो भावनां भावयन् ।
अस्माकं हृदयेऽपि बीजमवपत् सर्वं जगन्नश्वरम् ॥६॥

* * *

तस्मा मोक्षपदं च नश्वरमिदं त्यक्त्वा जगद्रतो ।
धर्मध्यानपरायणा भवतरे ? ज्ञात्वा च मोक्षे सुखम् ॥
सर्वा सृष्टिरियं च उन्नतमना येऽन्ये महान्तः परे ।
ते धर्मेण तरन्ति पूर्वमतरन् सर्वे तरिष्यन्ति च ॥७॥

* * *

धर्माचार्यपदंगतस्य पुरतो मार्गं निजं स्मरे ।
कारुण्यार्द्रहृदः परोपकृतिमच्चित्तस्य हार्दं शुभम् ॥
शिष्येभ्यः स्वजनेभ्य इभ्य जनता सर्वेभ्य इ[illegible]रपि ।
स्वप्ने दर्शनमस्तु सर्वभगवान् भूयात् सदा मङ्गलम् ॥८॥

卐 卐 संपूर्णम् 卐 卐

जिनकी प्रवृत्ति थी निरन्तर लोक हित के ही लिये ।
प्राचीन मुनि सम प्रकृति भी थी लोक हित के ही लिये ॥
थी देखती जनता जिन्हे आनन्द से निशदिन अहो ।
है आज उनके ही विरह में शोक से आकुल अहो ॥ ५ ॥

*　　*　　*

संसार नश्वर भावना मय नित्य यतना वान थे ।
अपने पराये को परम सुख प्राप्ति हित यतना वान थे ॥
सबके मनोमय भूमि में संसार नश्वर भावना ।
शुभ बीज रोपित कर लगाई मुक्ति वल्लि कामना ॥ ६ ॥

*　　*　　*

अतएव धर्म ध्यान रत इस मोह मय संसार को ।
अति दूर से ही त्याग दो अति दुःख पारा वार को ॥
संसार में सब तर गये, तरते तरंगे धर्म से ।
यह जान कर सब धर्म संचय ही करो शुभ कर्म से ॥ ७ ॥

*　　*　　*

हम मांगते अति पूज्य धर्माचार्य करुणावान से ।
वरदान केवल एक अंजलि जोड़कर मतिमान से ॥
निज शिष्य गण अरु मित्र गण हित जो सदा थे चन्द्र सम ।
निज रूप का दर्शन करावे स्वप्न में कल्याण सम ॥ ८ ॥

卐 卐 समाप्तः 卐 卐

* श्रद्धा पुष्प *

रचयिता:—सौभाग्य मुनि

तर्ज: दिल लूटने वाले

ये जैन जगत की दिव्य विभूति, संयम पालक मुनिवर थे
'शत' कोटि नमन शतः कोटि नमन, पुरुषोत्तम गुण रत्नाकर थे ॥

मां "मगन" कुंवर के लाड़ प्यारे, जिन शासन के उजियारे थ
"गंभीर" पिता के शुभ रत्न गंभीर, धीर दिल वाले थे
सार्थक सचेती गोत्र हुआ, अति सरल सर्वदा गुरुवर थे ॥१॥

धन्य "रामकरेड़ा" जन्मभूमि जहां गुरुवर ने अवतार लिया
संवत् उन्नीसो सड़सट् (६७) के, शुभ पौष मास को अमर किया
दसवर्ष की कोमल लघु वय में, वैराग्य मूर्ति प्रियंकर थे ॥२॥

संवत् उन्नीसो अट्ठोत्तर, अक्षय तृतिया अविस्मृत है
अक्षय निधि संयम पाये थे, क्या इस से बढ़कर अमृत है
आचार्य एकलिंग गुरु पाये, महामक्तिक गुण के सागर थे ॥३॥

है "रायपुर" भी धन्य धन्य जहां मुनिपद पर आसीन हुये
आरम्भ परिग्रह त्याग किया शिव मारग के शौकीन हुये
गुरु मोप मुनिवर सम मोकिक, गुरु भ्राता से समादर थे ॥४॥

गुजरात मालवा महाराष्ट्र, यू पी और मरु देश गये
भारत भूमि पर घूम घूम मधु, सन्मति के सन्देश दिये
जिन पथ पहरी आदर्श प्रचारक, मौलिक सौम्य सुधाकर थे ॥५॥

यह दिव्य विभूति लुप्त हुई, यह भाग्य मन्दता अपनी है
गुरू देव स्वर्ग मे मुस्काये, यह दुःखकी घड़ियां अपनी है
संतोष सभी धारे मिल कर, वे अस्तंगामी दिनकर थे ॥६॥

है धन्य "हस्तीमलजी" मुनिवर, पुष्कर मुनि कन्हैया है
सेवा सहायता देकर के, की पार संयम की नैया है
युग युग तक अमर रहेगा यश, गुरू देव दयालु हितकर थे ॥७॥

है धन्य सहाड़ा संघ को भी, अन्तिम सेवा कर पाये हैं
है कुछ "सौभाग्य" हमारा भी, जो चार घड़ी मिल पाये हैं
अन्तिम सेवा अन्तिम झांकी, अहा ? क्षण वे कितने दुर्लभ थे ॥८॥

स्वामी तज हमको आप गये, हम तुच्छ क्या भेंट चढ़ा सकते
तुम सब कुछ थे हम कुछ भी नहीं, हम क्या चरणों में देसकते
यह हृदय "कुमुद" का अर्पण है, स्वीकारो नाथ क्षमाकर थे ॥९॥

जिन्दगी जीत गये

[दोहा]

आओ प्यारे भक्तगण ! करलें सफल जबान ।
मांगीलाल महाराज के, गाकर के गुण गान ॥

मेवाड़ में ग्राम करेड़ा एक, रामाश्री का कहलाता है ।
मुनिवर का जन्म हुआ यहां पर, सुनकर जी आनंद पाता है ॥
गंभीरमल्ल कुलउजियारा मगना के प्राणों का प्यारा ।
आनन अवलोकन कर बोले, हम सब की आँखों का तारा ॥
शुभ आशीष बोले मगन बहन, चिरंजीवी हो बालक तेरा ।
गुरु बोले यह बालक होगा, छः काया का पालक तेरा ॥
बच्चे को खेलाने खातिर, सब मांग-मांग कर लेते हैं ।
अतः पुत्र का नाम सभी जन, मांगीलाल कह देते हैं ॥१॥

पाँच वर्ष का था तभी, मांगीलाल सुजान ।
पिता निधनपर मगर का, था आराम हराम ॥

एकलिंगदास पूज्यराज श्री, पावन करने यहां आये हैं ।
दर्शन पाकर के नर-नारी, सब फूले नहीं समाये हैं ॥
महावीर की वाणी पूज्यश्री, धारामवाह फरमाते हैं ।
श्रोतागण सारे हर्षित हुए, वाह-वाह क्या समझाते हैं ॥
जनता को सम्बोधन कर के, पूज्यवर ने यों उपदेश दिया ।
क्यों हाड़-माँस के पाछे में, सुख होते हो संकेत किया ॥

भगवान् वीर फरमाते हैं, यह जन्म चिन्तामणि पाये हो।
यह नाशवान तन है प्यारो, क्यों भोगों में ललचाये हो ॥२॥

वानी सुन कहने लगा, यह दश वर्षी वाल।
मुझको दीक्षा दीजिये, वोला मांगीलाल ॥

मुनिवर बोले यह होनहार, वालक मुझको दिखलाता है।
माता बोली गुरुदेव इसे तो, खेल कूद मन भाता है ॥
माता से वोला हाथजोड़, मैं आजसे कभी न खेलूंगा।
महाराज यदि कृपा करदें, तो मै तो संयम ले लूँगा ॥
देखा वालक का दृढमन है, संसार से तिरना चाहता है।
जबरन फिर क्यों रक्खा जाये, यह रहना भी नहीं चाहता है ॥
माता का मन भी ऊब चुका, झूठे जगके व्यवहारों से।
वैरागिन को अब क्या मतलब, इस दुनियाँ के व्यापारों से ॥३॥

मुनिवर ने तब कर दिया, रायपुर प्रस्थान।
संघ विनन्ती कर रहा, आचारज भगवान ॥

वैरागी मांगीलालजी को, दीक्षित यहीं पर कर लीजै।
जो कुछ भी और इजाजत हो, यह आज्ञा हमको दे दीजे ॥
पूज्यवर वोले वैरागी की, माता की जब आज्ञा होगी।
सँघ के सम्मुख हाँ कहदेंगी, तब ही इसकी दीक्षा होगी ॥
माता वोली हर्षित होकर, गुरुवर इसको दीक्षा देदो।
और मैंभी दीक्षित होती हूं, हे पूज्यवर जी कृपा करदो ॥
श्रीपूज्य एकलिंगदासजी ने, सयम दे शिष्य वनाया है।
श्रीमांगीलालजी साधु वन के, ज्ञान में ध्यान लगाया है ॥४॥

मांगीलाल महाराम अब, हुए पूर्ण विद्वान् ।
युवाचार्य पद प्राप्त कर, किये हैं कार्य महान् ॥

गुरुकी सेवा तनमन से कर, आगम की ज्योति जगाई थी ।
देदे करके सद्‌बोध यथार्थ, खोटी दूर हटाई थी ॥
जो लड़ते थे आपस में ही, वहां प्रेम की बेल बढ़ाई थी ।
जहां खून बरसता था वहां पर, मुनि शांति सुधा बरसाई थी ॥
यों घूम-घूम कर देश-देश में, ज्ञान का सूरज चमकाया ।
जो पड़े हुए मिथ्यातम में, उनको सन्मार्ग बतलाया ॥
भारत भू—को पावन करते, वापस मेवाड़ पधार गये ।
सथारा करके स्वामीजी, सहाड़ा में स्वर्ग सिधार गये ॥५॥

प्रेम सहित गुरुदेवके, जो गुण गावे कोय ।
सुख सपति पावे सदा, आनंद मगल होय ॥

परम पूज्य गुरुदेव

मेरा जीवन

जैन परिवार में जन्म लेने पर भी १४ वर्ष की अवस्था तक समुचित जैन संस्कृति के समर्थक संस्कारो के अभाव में मैं धार्मिक कृत्यों से वंचित ही रहा। वाल्य सुलभ चांचल्य में धर्म के संस्कार एकाएक न पड सके। वही धमा चौकडी का शिशु जीवन व्यतीत हो रहा था। इधर पिताश्री भी घरेलू व्यवसायों में फंसाना चाहते थे। इससे मन ऊब गया, विचार आया कि कहीं नौकरी ही क्यों न कर ली जाय? मन में कई सांसारिक मनोरथ थे, पर वे स्वप्न हो गये। साकार न हो पाये। सचमुच जीवन में मानव वहुत कुछ सोचता है, पर मनुष्यका सम्पूर्ण चिन्तन कभी भी साकार नहीं होता।

धर्म पर विश्वास

एक समय उदास मन मुद्रा में जैन साध्वी हगाम कुँवरजी की सेवा में वैठा था। उनके तपोपूत वाक्यों का मुझपर गहरा प्रभाव पड़ा, उनकी संयमशील वृत्ति ने आकृष्ट किया। सांसारिक वासनाजन्य दुखों का वर्णन श्रवण कर हृदय में तीव्र भावना ने घर कर लिया। किसी ऐसी विषम विडंवना में अपने आपको नहीं फंसाना। धर्म के प्रति आस्था वलवती हुई। संसार विषवत् प्रतीत होने लगा।

जैन संस्कारारोपण

यह सनातन सत्य है कि मानव जन्म बहुत ही दुर्लभ है परम पुण्योदय से ही संप्राप्त होता है। जीवन के उद्धार का यही एक माध्यम है। अतः "आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्" उक्ति जीवन में साकार करना नितान्त वांछनीय है। व्यर्थ के असत्य, चोरी, अनाचार, छल प्रपंच परनिंदा आदि से अपने को बचा कर सत्धर्म में प्रवृत्त होकर कर्मक्षय का मार्ग-अपनाना नहीं, यह श्रेयस्कर है। आत्मा तभी बलवती होती है जब दुष्कर्मों से बचा कर सत्कार्य में शक्तिका सद्व्यय हो। विवेक वृत्ति का तभी तो जागरण होता है जो मानव जीवनोत्कर्ष का सोपान है। अतः मैंने गुरुदेव से, सुख से, निभ सके वैसे व्रतो को अंगीकार किया।

गुरुवर्य की शरण में

बिना पुण्योदय के सद्गुरु का संयोग भी प्राप्त नहीं होता। "बिनु सत्संग न हो हिं विवेका" में सचाई है वि स १९९६ के वसंत के प्रारम्भ में देवगढ़ (जिला उदयपुर) में विराजित परमाराध्य गुरुदेव की पुनीत सेवा में पहुँचा उनकी समभावमयी मुख-मुद्रा के दर्शनानन्तर आंतरिक अभिलाषा व्यक्त की और निवेदन किया कि मैं अपने आपको आपके चरणों में समर्पित करना चाहता हूँ। आर्य संस्कृति में आस्थावान भला कौन ऐसा होगा जो शरणागत की रक्षा नहीं

करे। मुझे उनके चरणों में रहने की आज्ञा मिल गई। संयम में साधक धार्मिक पाठ याद करने लगा और यथाशक्ति संयम में रहने का अभ्यास करने लगा। गार्हस्थिक वेशभूषा में रहकर भी सावद्य काम में कम ही प्रवृत्ति करता था, नंगे पैर चलना, किसी भी प्रकार के वाहन का उपयोग न करना और किसी की भी आत्मा को न सताना ऐसे कुछ नियम मैं भावी साधना के लिए निभा रहा था। मन वैराग्य की भावनाओं से परिपूर्ण था। वृत्ति आत्मलक्षी हो चली थी।

दीक्षा प्रसंग पर

मोह के बंधन बड़े विकट होते है। मोहनीय कर्म की प्रकृतियाँ भी सापेक्षितः अधिक ही हैं। माता पिता और परिवार के बंधुजन सर्वप्रकार के संयम ग्रहण करने में बहुत सी बाधाएँ खड़ी कर रहे थे। यहाँ तक कि पूज्य गुरूदेव को भी परिवार की ओर से वाग्बाणों का सामना करना पड़ा, पर वह तो थे "संत हृदय नवनीत समाना"। परिवारिक सदस्यों को गुरुदेव ने समझाया और समस्या को समाधान का रूप मिला। दीक्षा की आज्ञा कठिनाई से मिली और क्रमशः संयम ग्रहण किया। एवम् हस्ती मुनि के नाम से अभिहित किया गया।

शिष्य में संयम रीति

परम पूज्य गुरूदेव ने संयम की साधना को सफल बनाने हेतु समुचित शिक्षा, संत सेवा, परदुःख कातरता आदि का

बोध दिया। पर प्रमादवश कभी बालबुद्धि कारण कई बार आपकी आशातना हुई, पर वाह रे वाह ! दया के सिंधु आपने अपने मन में कभी भी मेरे प्रति दुर्भाव न आने दिया यह थी आपकी अनुपम सहनशीलता और उदारता। समयानुसार मीठे-मीठे उपालंभो द्वारा आपने मुझे ज्ञान दान दिया, सत्य मार्ग प्रदर्शन करवाया और जिनाज्ञा परिपालन में और उत्साहित कर संयम का मार्ग प्रशस्त किया।, ऐसे परमाराध्य संत-शिरोमणि शान्ति के अवतार मुनिवर श्री मांगीलालजी महाराज के चरणों में मुझे आज हृदयोद्गार व्यक्त करने का स्वर्णावसर मिला है, मेरा जीवन आज धन्य है।

२४ वर्ष पर्यंत सेवा में

गुरुदेव के उपकारों का सीमा में नहीं बांधा जा सकता। वर्णमाला के अक्षर उनके महत्त्व प्रगट करने में असमर्थ हैं। फिर भी शब्दों का सहारा लेना ही पड़ता है। प्रारंभ से २४ वर्ष तक मुझे आपकी सेवा में रहकर संयम, शिक्षा ज्ञान-ध्यान आदि के साधन का अवसर मिला, उनसे मुझे पिताका सा स्नेह मिला, माता सी ममता मिली और गुरुदेव सा अमृत रस मिला, इन बातों के बावजूद क्या मजाल कि वह संयम विरुद्ध काम हो जाय और आप मौन रहें। संयम विरुद्ध आचरण न तो स्वयं करते थे और न कभी शिष्य के जीवन में यह दुष्प्रवृत्तापन देते थ। इन पंक्तियों के लेखक का 'हाथी' 'हाथी' कह कर संबोधित करते थ।

छोड़ चले गुरुदेव

पूज्य गुरुदेव की शारीरिक संपदा अस्वस्थ्य के कारण दिनानुदिन क्रम होती जा रही थी, पर आत्मिक बल पूर्ववत् बनाही रहा। स्वाध्याय, आत्मचिंतन कभी नहीं रुका। तन थका पर मन और भी सुदृढ होता चला गया। "एगे आया" ही आपका आदर्श था। अशाता वेदनीय कर्म का उदय होने पर भी आपने कभी उफ् नही किया, सहाड़ा आते हुए कष्ट सहने पर भी आपने अपना नित्य क्रम न छोड़ा। अंतिम समय तक "अर्हम्" की ध्वनि मुख से गूंजती रही। ऊर्ध्व-गति प्राप्त की।

भयंकर आघात

वर्षों से जिनके चरण कमल में बैठकर, लालित-पालित होकर सभी प्रकार की शिक्षा ग्रहण की, जिनने सयम पलवाने में मोह तक का परित्याग किया। ऐसे मेरे मार्गदर्शक गुरुदेव का ऋण मैं न उतार सका इसका मुझे हार्दिक दुःख है पर उनके प्रति मेरे मन में जो श्रद्धा के कुसुम संजोये हुए है उन्हें मैं इस प्रार्थना के साथ समर्पित करना चाहता हूँ कि भवोभव में मुझे ऐसे ही गुरुदेव की प्राप्ति हो मन तो चाहता है गुरुदेव का संयोग पुनः कभी प्राप्त हो? पर यह आशा ही है।

आपके वियोग से अभिभूत
मुनि "हस्ति" (मेवाड़ी)

श्रद्धापुष्पाञ्जलि

रचयिता "लब्धि"

पं–क्ति पर्वत अटल रहते हैं, कितना भी हो पवन प्रचण्ड।
डि–गना नहीं प्रशस्त कार्य से; कहीं के दुख आवे असंख्य॥

त–म का राज्य निष्कासन हेतु, भास्कर ही परगटता है।
गु–णि मानव की सत्संगत से, सौम्य जीवन बन जाता है।
रु–चि सत्य शुभ भाव से हरदम, मन में स्फूर्ति लाता है।
दे–ह धारी से ऋषि पुकारे, सत्य धर्म का शरण गहो।
व–न्दन चिन्तन मनन लीन य, उषा काल मे नियमित हो॥

श्री–जिनवानी शिव सुख दानी, पूर्ण शान्ति का सागर है।
मां–हि हृदय के भाव शुद्ध हो, यही शान्ति का आगर है॥
गी–र प्रभु की उज्ज्वल हिम सम, उस को मन में नित लावें।
ला–ओ सद्गुण जीवन में तुम, सहनशील पथ पे आवें॥

ल–ज्जादयासे मानव बनता जैसा आगम में बतलाया।
जी–वन सफल उसी का होगा, सच्चे पथ को अपनाया॥
म–हिमा लाखों वर्षों तक की दुनिया में फिर छायगी।
की–र्ति बढ़ेगी सब विश्व में आपकी जम जायेगी॥

ज–गवासी जीवों पर करुणा, आप सदा करते रहिए।
य–म की फांस टलेगी पण्डित, मरण शरण को तुम कहिए॥
ज्यों शरद काल का चान्द सितारा, चकोर लख आह्लादित होता।
त्यों "पुष्कर मुनि" गुरु गुणों का, सुमरण कर नित खुश होता॥

श्रीः

वि
भा
ग

तीसरा

❁ संयम साधना के सफल साधक ❁

ले० मदन मुनिजी "पथिक"

जिन्दगी ऐसी बना, जिन्दा रहे "दिल शाद" तू।
जब न हो दुनियां में तो, दुनियां को आए याद तू॥

यह संसार एक उद्यान के समान है जैसे उद्यानमें कई प्रकार के पुष्प होते है, उनमें कुछ तो सुगन्ध युक्त होते हैं, कुछ निर्गन्ध।

सुगन्ध युक्त पुष्प समादरत होते है, वे अपनी महक लुटा कर जन जन को प्रफुल्लित कर मिट जाते हैं फिर भी लोग उनके लिये ललचाये रहते हैं।

उसी प्रकार मानव भी जग उद्यान का एक पुष्प है। यदि उस में सद्गुण रूपी सौरभ होता है तो वह जन जन का प्यारा बन जाता है, उसके जाने पर भी जनता उन से याद करती रहती है।

सद्गुण सौरभ से हीन पुरुष पलास पुष्प के समान उपेक्षा का पात्र बनता है, उसके जाने पर भी लोगों में कोई खास प्रतिक्रिया नहीं होती, जनता उसे याद नहीं करती।

मैं जिस महात्मा का परिचय देना चाहता हूं उनका जीवन सचमुच सौरभी पुष्प के समान था, न कि निरर्थक पलास पुष्पवत्

सरल स्वभावी, तपो निधि, दीर्घ संयमी श्रद्धेय गुरुदेव श्री मांगीलालजी म. सा. उन महापुरुषों में से एक थे, जिन्हों ने जन्म ले कर मानवता के लिये कुछ काम किया, न कि केवल धरा को भार दे कर ही चलते बनें।

भीलवाड़ा जिलान्तर्गत "राजकरेड़ा" ग्राम में संचेती कुलमें जन्म ले कर भी गुरुदेव कार्य क्षेत्र केवल करेड़ा ही नहीं रहा। आयू के बढ़ने के साथ ही कार्य और यश भी सीमाएं तोड़ते बढ़ते गये।

यह माता मगनबाई के सुसंस्कारों का ही पवित्र फल था कि जब आपकी उम्र केवल १० वर्षकी थी; तभी माता के साथ खुद भी, परम प्रतापी चारीत्रचूडामणि पूज्य श्री एकलिंग-दासजी म. सा के पास दीक्षित हो गए और सयम साधना के साथ संघसेवा का पवित्र संकल्प ग्रहण कर लिया।

म. श्री दीर्घकाल गुरु सेवा में रहे उसका महान फल निर्जरा तो मिलाही साथ ही शास्त्रज्ञान रूपी उत्तम धन भी प्राप्त हुआ।

अनुभवों, विचारों को प्रकट करना भी एक "कला" है, इस दृष्टि से भी आप पीछें नहीं थे। कहने का तात्पर्य यह कि आपके प्रवचन अक्सर "सरल" और मृदु होते थे, जिनको श्रोता सहज ही ग्रहण कर लेते थे, उनका असर भी बहुत अच्छा पड़ता था। आपके प्रवचनों द्वारा कई धार्मिक सामाजिक सुधार संपन्न हुए।

आपका शुद्ध संयम से सजा हुआ जीवन हम सब के लिये आदर्श और प्रेरणादायक था। यही कारण है कि म श्री की मधुर स्मृति रह रह कर हृदय पट पर विद्युत की तरह चमक उठती है। समय सभी को जीर्ण बनाता है इस सिद्धान्त के अनुसार समयके साथ यद्यपि स्मृतियां धुंधली पड़ती जाती है फिर भी हृदय उन्हें भूलना नहीं चाहता।

जिन लोगोंने म श्री को निकट से देखा है उनके महान जीवन को परखा है वे गुरुदेव श्री के लोकोत्तर गुण, अदम्य साहस, दृढ़ लगन और सेवा भावना को कभी भुला नहीं पायेंगे। किसी मधुर स्वप्न की भांति उनकी याद उभरती रहेगी।

" समयं गोयमे मा पमायए "

यह महावीर ने फरमाया है इसका सीधा अर्थ है "क्षण मात्र भी प्रमाद मत करो" यह सूत्र स्व म श्री के जीवन में अक्षरशः उतर चुका था। प्रतिक्षण कुछ करते रहने की प्रवृत्तिने आपको उच्च कोटि में पहुंचा दिया।

संयम पालने में आप प्रायः सजग रहते थे और उसी का यह पवित्र फल मिला कि अन्त समय में भी त्याग प्रत्याख्यान कर पाए और समाधि मरण को प्राप्त हुए।

संसार में आपको अगणित जीवन ऐसे मिलेंगे जिनके संसार से चले जाने के उपरान्त लोग निन्दाएं करते है. क्यों कि ऐसे जीवन प्रायः कई व्यक्तियों के कष्ट का कारण होते हैं।

इनके विरुद्ध कुछ ऐसे जीवन होते हैं जो चले तो जाते हैं किन्तु उनका जीना सम्बन्धित परिवार, समाज प्रान्त या राष्ट्र के लिये दुःख का विषय बन जाता है। स्व. महाराजश्री का जीवन भी इसी तरह का था, उनके चले जाने से समाज को खेदानुभव हो रहा रिक्तता खल रही। यह उनके जीवन की महानता का ही परिणाम है।

दिवंगत आत्मा को शान्ति प्राप्त हों यही शुभ कामना।

× × ×

पं. प्रवर आचार्यश्री आनन्दऋषिजी म. सा. के

श्रद्धा सुमन

सहाड़ा सघ के पत्र द्वारा संयमनिष्ठ तपोनिधि श्री मांगीलालजी म. सा. के स समाधि स्वर्गवास के समाचार जान कर खेद हुआ। मुनि संस्था में एक मुनिराज की खामी हुई। संसार अनित्य है, मानव जीवन क्षण भंगुर है. इस प्रकार जिनेश्वर देवकी वाणी है। उसे ध्यान में लाते हुए पं. मुनीश्री हस्तिमलजी म. आदि ठा अपने दिल को समाधान देवें।

पं. मुनि श्री मांगीलालजी म सा. के अन्तिम समय के प्रसंग पर श्री सौभाग्य मुनिजी उपस्थित हो गये थे, यह संतोष का विषय है। अपने पूर्ण विशुद्ध धर्म स्नेह की वृद्धि होती रहे ऐसा चाहते है।

प्रेषक

पं. विद्याभूषण मणि त्रिपाठी

पं प्रवर उपाध्याय श्री हस्तिमलजी म सा के

श्रद्धा सुमन

जोधपुर श्रावक संघ के द्वारा ज्ञात कर उपाश्रय में सभा का आयोजन किया, स्व मुनिश्री के गुणों पर प्रकाश डालते हुए परमपूज्य उपाध्यायश्रीने फरमाया कि—

मुनिश्री के दिल में श्रमण संघ के लिए बड़ी आस्था व उत्सुकता थी। उनके निधन से मेवाड़ी संप्रदाय की ही क्षति नहीं हुई है अपितु श्रमण संघ में भी एक खामी अनुभव होती है। निकट भविष्य में पूर्ति होना असंभव है। उपाध्याय श्रीने आगे फरमाया कि, संतों का समाधि मरण शोचनीय नहीं होता है। काल की गति तो सब पर अबाधित प्रभाव डालती है।

स्वर्गीय संत की स्मृति में सभी त्याग वैराग्य की वृद्धि करें यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धाञ्जली है।

प्रेषक
गोकुल चन्द
C/o श्री व स्था जैन श्रावक संघ
सूपाखेड़

पं. रत्न मन्त्री श्री पृथ्वीचन्द्रजी म. सा. व उपाध्याय
श्री अमरचन्द्रजी म. सा. के

श्रद्धा सुमन

श्रद्धेय तपोनिधि श्री १००८ श्री माँगीलालजी म. सा. के आकस्मिक स्वर्गवास के समाचार से शोक की लहर व्याप्त हो गई।

श्रद्धाञ्जली अर्पण करते हुए म. सा. ने स्व. मुनिश्री के दिव्य जीवन पर प्रकाश डाला।

जनता को परिचय देते हुए म. श्री ने फरमाया कि स्वर्गीय मुनिश्री बडे शान्त व सरल एवं मधुर प्रकृति के सन्त थे। उनके मंगल मिलन से प्रायः सर्वत्र हर्ष और आनन्द का वातावरण उपस्थित हो जाता था। उन का आकस्मिक स्वर्गवास स्था जैन संसार के लिये एक बहुत बड़ी "क्षति" है जिसकी निकट भविष्य में पूर्ति होना असम्भव है। साथी मुनियों के प्रति समवेदना प्रकट करते हुए उपाध्याय श्री ने आशा प्रकट की है कि पं. मुनिश्री हस्तिमलजी म. अपने गुरुदेव के चरण चिह्नों पर चल कर दिवंगत गुरुदेव के तथा श्रमण संघ के गौरव को अधिकाधिक उंचाई पर ले जाएंगे। और जैन समाज में गुरुदेव को चिर यशस्वी बनाऐंगे।

प्रेषक :—
जैन संघ लोहामण्डी
"आगरा"

पं. प्रवर्तक श्री कस्तूर चन्द्रजी म. सा. के

श्रद्धा सुमन

प. रत्न श्री मांगीलालजी म. सा. के निधन के समाचार सुन कर बहुत दुःख पैदा हुआ।

स्वर्गीय मुनिश्री परउपकारी भद्रिक स्वभावी, बहुत प्रेमी और अनुरागी थे। परन्तु काल के सामने किसी का जोर नहीं चलता है। दिवंगत आत्मा को शान्ति मिले।

कुछ दिन पहले पूज्य तपस्वी श्री सूरजमलजी म. सा. देवलोक हो गये थे दूसरा वज्राघात श्री मांगीलालजी म. सा. के अवसान से लगा। मेवाड़ में दो रत्नों की खामी हो गई उसकी पूर्ति होना मुश्किल है।

प्रेषक :-

टीकमचन्द (ब्यावर)

पं. प्रवर मन्त्री श्री अम्बालालजी म. सा. के

श्रद्धा सुमन

परम श्रद्धेय श्री मांगीलालजी म. सा. के आकस्मिक स्वर्गवासने मेरे दिल को हिला दिया।

यों तो "जातिरैव ही भावानां विनाश हेतुरिश्यते" इस सिद्धान्त के अनुसार सभी को लुप्त होना ही पडता है किन्तु उन जाने वाले पदार्थों में कुछ व्यक्तित्व ऐसे होते है जो हमेंशा के लिये स्मृति पट पर अंकित रहते हैं।

स्वर्गस्थ महात्माश्री मांगीलालजी म. सा. का जीवन भी वैसा ही था जो विस्मृति से आवृत नहीं हो सकता है।

स्व. म. श्री से मेरा लम्बा सम्पर्क रहा कई तरह से मुझे उनके जीवन का परिचय मिला, अनुकूल प्रतिकूल सभी परिस्थितियों में उन्हें समझने का मौका मिला, उससे मैं इतना तो अवश्य कह सकता हूं कि म. श्री का हृदय भद्रिकता से ओत-प्रोत था. सरलता उनके जीवन का अग बन चुकी थी यही कारण था कि उन के जीवन में कोई उलझन स्थायी नहीं रही।

इस वर्ष म श्री के सम्पर्क को प्राप्त करने का मैंने प्रयत्न अवश्य किया था किन्तु दैवयोग ही कहिये कि कुछ ऐसे कारण बने कि हम नहीं मिल सके।

बिमारी के समाचार प्राप्त होने पर विहार होने वाला था कि दिवंगत होने के दर्दनाक समाचार मिल गए। मैं धक् सा रह गया। पार्थिव देह से भले ही भिन्न रहे; मानसिक रूप से मैं म श्री के पास था और म श्री मेरे पास।

अन्त में हार्दिक श्रद्धा पुष्प अर्पित करता हूँ जो उनके अपने ही हैं।

प्रेषक—
भवरलाल बडाला
देलवाड़ा

पं. प्रवर मन्त्री श्री हीरालालजी म. सा. के

श्रद्धा सुमन

पं. रत्न श्री मांगीलालजी म. सा. के स्वर्गवास की बात
[न कर बहुत दुःख हुआ ।

मन्त्रीजी म. सा. ने शोक समवेदना प्रकट करते हुए
. मुनिश्री हस्तिमलजी म. सा. आदि ठाणा ३ तीन को धैर्य
[रण करने का संदेश कहलाया है ।

प्रेषकः—
निर्मलकुमार लोढ़ा (निम्बाहेड़ा)

पं प्रवर मन्त्री श्री पुष्कर मुनिजी म सा के

श्रद्धा सुमन

स्व मुनिश्री में सरलता नम्रता एवं मिलनसारता अपूर्व गुण थे। वे कभी भुलाये नहीं जा सकते।

स्व मांगीलालजी म सा की स्मृति स्वरूप निम्नप्रकार पढ़िये:

मनहर छन्द

सांवरी सूरत और मूरत मोहनि भवि,
मृदुल व्यवहार और शुद्ध मन धारे थे।

सीधे सादे भोले भाले, विनय धर्म वाले,
मेदपाटी जनता के, सच्चे थे सितारे थे॥

कटु कोई लाख कहे चुपचाप सह लेते,
कभी हस देते क्षमा धर्म को धारे थे।

ऐसे मुनि मांगीलाल, 'जैनधर्म प्रतिपाल,
स्वर्गको सिधार, "मन्त्री पुष्कर"को प्यारे थे॥

गम्भीर

पं. रत्न वहुश्रुत श्री समर्थमलजी म. सा. के

श्रद्धा सुमन

पं. मुनिश्री मांगीलालजी म. सा. के स्वर्गवास के समा-
र जान कर खेद हुआ।

मुनिश्री ने लघुवय में दीक्षा ले कर ज्ञानाभ्यास किया,
ा अन्तिम समय में संथारे पूर्वक समाधि मरण हुआ।
ाधि मरण आत्म शुद्धि का प्रतीक है।

आप चिर प्रव्रजित संत थे, आप के स्वर्गवास से जैन-
ाज की महती क्षति हुई है किन्तु काल कराल की विचित्र
ते समझ कर उन के शिष्य श्री हस्तिमलजी म. आदि सन्त
 धारण कर ज्ञान ध्यान वढाते हुए जिन शासन को
पावें।

प्रेषकः—

तोलाराम हीराचन्द (देशनोक)

पंजाब के पं श्री सत्येन्द्र मुनिजी म के

श्रद्धा सुमन

सरल स्वभावी शान्त मूर्ति बालब्रह्मचारी श्री मांगीलाल म सा के अचानक स्वर्गवास के समाचार सुन कर ग आघात लगा।

ऐसे महा पुरुष का इस समय देवलोक हो जाना आप लिये, समाज के लिये बहुत हानि कर हुआ।

शुभ कामना करते हैं कि ऐसे महा पुरुष को चिर शा प्राप्त हों। हस्तिमलजी म आदि सन्त धैर्यता धारण करें।

"विजयनगर"

× × ×

प श्री समीरमुनिजी म सा के

श्रद्धा सुमन

पं श्री मांगीलालजी म सा का स्वर्गवास के अचान समाचार जान कर बहुत दुःख हुआ। मुनिश्री के स्वर्गवास पं श्री हस्तिमलजी म आदि मुनिद्वय को पालक की ए बहुत बड़ी कमी हुई। मुनिद्वय का मुनिश्री के वियोग दुःख यहां से मुनिश्री समवेदना भेजते हैं।

वयोवृद्ध मुनिश्री गोकलचन्दजी म. सा. के

श्रद्धा सुमन

पं. मुनिश्री मांगीलालजी म. सा. के स्वर्गवास के समाचार सुन कर बड़ा भारी आघात लगा। शासनदेव से प्रार्थना है कि स्वर्गस्थ आत्मा को शान्ति प्राप्त हो। काल कराल के सामने किसी का वश नहीं चलता। जैसे महापुरुष जाते हैं वैसे महापुरुषों की पूर्ति होना मुश्किल है।

प्रेषक:—
जैन श्रावक संघ
मांडलगढ

× × ×

पं. प्रवर श्री हगामीलालजी म. सा. के

श्रद्धा सुमन

मेवाड़ के प्रसिद्ध सन्त उग्र विहारी पं. रत्न श्री मांगीलालजी म. सा. के अचानक स्वर्गवास हो जाने के समाचार जान कर बड़ा खेद हुआ। असमय में ही मुनिश्री का वियोग हो जाना खटकने जैसी बात है।

मुनि श्री शान्त प्रकृति के थे, मिलनसार अनुभवी थे। ऐसे सन्तों की क्षति पूर्ति होना असंभव है काल की गति विचित्र है।

स्वर्गीय मुनिश्री का देवगढ़ चातुर्मास से ही अब तक काफी रूप से स्नेह सम्बन्ध चला आ रहा था अब सारा उत्तर दायित्व प रत्न मुनिश्री हस्तिमलजी म सा पर आ गया है आशा है आप भी स्व मुनिश्री की भांति स्नेह सम्बन्ध बनाया रक्खेंगे।

प्रेषक—
पूनमचन्द जैन (अजमेर)

× × ×

वि महासतिजीश्री सौभाग्यकुंवरजी म सा के

श्रद्धा सुमन

स्वर्गवास के समाचार जान कर महान खेद हुआ। स्व गुरुदेव श्री सरल स्वभावी भद्रिक आत्मार्थी थे महाराजश्री का वियोग रह रह कर खटकता है।

प्रेषक—
शान्तिदास जैन

विभिन्न श्रावक संघों के हार्दिक

श्रद्धा सुमन

श्रद्धेय श्री मांगीलालजी म. सा. के स्वर्गवास होने के समाचार सुनते ही सारे गांव में सन्नाटा छा गया। मानों दुःख का बादल बरस पड़ा हो। सब के हृदय पर भारी चोट पहुंची, बाजार बन्द कर श्रद्धाञ्जली अर्पित की गई।

श्रावक संघ भादसोड़ा

× × ×

स्वर्गवास के समाचारों से शोक छा गया बाजार बन्द रक्खा, दया उपवास आदि किये। पशु पक्षियो को दान दिया। श्रद्धाञ्जली अर्पित की।

श्रावक संघ कपासन

× × ×

स्वर्गवास के समाचार पढ़ कर अत्यन्त दुःख हुआ कुछ दिन पहले गुरुदेव श्री भारमलजी म. सा. का स्वर्गवास हुआ उसे भूले ही नहीं फिर इस कालकराल ने समाज पर आफत पर आफत कर दी। हम स्व. आत्मा के प्रति श्रद्धाञ्जली अर्पण करते हैं।

धर्मदास जैन मित्र मण्डल रतलाम
C/o लखमीचन्द जैन

× ×

शोक समाचार सुन कर संघ को खेद हुआ गुरुदेव के स्वर्गवास से संघ में अंधेरा छा गया। महान पुरुषों के दर्शनों का लाभ नहीं ले सके यह हमारे दुर्भाग्य की बात है।

जिनेन्द्र देव से प्रार्थना है कि स्व गुरुदेवश्री को शान्ति प्रदान करें।

जैन श्रावक संघ मजीठगढ़

× × ×

श्री मांगीलालजी म सा के स्वर्गवास के समाचार सुन कर संघ को बड़ा खेद हुआ।

स्व मुनिश्री जैन समाज की एक विभूति थी उनके स्वर्गवास से समाज की क्षति हुई है उसकी पूर्ति नितान्त असम्भव है। स्व आत्मा को चिर शान्ति प्राप्त हो।

यहां विराजित वि महा सतियांजी श्री पन्नाजी म ने भी सखेद श्रद्धाञ्जली अर्पित की है।

मन्त्री श्री व स्था जैन श्रावक संघ

सनवाड़

× × ×

स्वर्गवास के समाचार मिलते ही श्रावक श्राविका अन्तिम दर्शन को पहुंचे।

शोकसभा का आयोजन किया।

यहां विराजित पं रत्न श्री केवलमुनिजी म सा वि महा सतियांजी श्री सुगन कंवरजी म सा म मधुर व्याख्याता

वि. श्री प्रेमकुंवरजी म. सा. ने स्व. आत्मा के प्रति श्रद्धाञ्जली अर्पित की, नवकार मन्त्र का ध्यान कर शोक प्रस्ताव पारित किया।

मुनिश्री ने प्रवचन में फरमाया कि इस असैं में जो वयोवृद्ध, तपस्वी, ज्ञानी एवं प्रभावशाली मुनिराज व महा सतियांजी की क्षति हुई है उस की पूर्ति अभी नहीं हो पा रही है।

मन्त्री सोहनसिंह
भीलवाड़ा (मूवालगंज)

× × ×

पं. मुनिश्री मांगीलालजी म. सा. के स्वर्गवास के समाचार से संघ को भयकर चोट पहुंची।

स्व. म. श्री ने सं. २००० में अरावली के घने जंगलो को पार कर एकान्त में बसनेवाले हमारे छोटे से क्षेत्र को पावन किया। अमृतवाणी का पान करा कर सद्बोध दिया। म. श्री ने वहां चातुर्मास भी किये, उन्हीं उपकार का यह महान फल है कि हम आज भी मुनिराजों के उपदेशों का लाभ उठा पाते हैं। म. सा. सरल स्वभावी भद्रिक एवं गुणवान थे। वे आज हमारे बीच नहीं रहे फिर भी उनको हम कभी भी नहीं भूल सकते।

शासन देव से प्रार्थना है कि स्व. आत्मा को चिर शान्ति प्राप्त हों।

पं मुनिश्री हस्तीमलजी म सा आदि संतों के प्रति हमारी सद्भावना है और आशा करते हैं कि मुनि श्री स म सा के बतलाए मार्ग का अनुसरण कर हमें ज्ञान का लाभ देते हुए भगवान महावीर के शासन की सेवा करते रहेंगे।

कन्हैयालाल कोठारी
श्री व स्था जैन श्रावक संघ
बागपुरा

× × ×

स्वर्गवास के समाचार मिलते ही नगर में सन्नाटा छा गया मानों दुःखपूर्ण बादल बरस पड़ा हृदय पर भारी चोट पहुंची बाजार बन्द रक्खा। अगता पलाया व शोक सभा आयोजित कर श्रद्धाञ्जली अर्पित की गई।

मोहनलाल चौहान एवम
श्री व स्था जैन श्रावक संघ
पसाना कलाँ

× × ×

बाल ब्रह्मचारी पं प्रवर श्रद्धेय गुरुदेवश्री के स्वर्गवास के समाचार से सन्नाटा व्याप्त हो गया। धर्म स्थान में श्रद्धाञ्जली अर्पित की।

गुरुदेवश्री भद्रिक प्रकृति के एवं सोम्य स्वभाव के थे। उनकी वाणी में मधुरता थी। गुरुदेवश्री का स्वर्गवास हो

ये किन्तु इनकी शिक्षाएं तथा वाणी हर समय याद ाती है।

जैन श्रावक संघ पड़ासोली

× × ×

बाल ब्रह्मचारी पं. रत्न श्रद्धेय गुरुदेव श्री मांगीलालजी ा. सा. के स्वर्गवास के समाचार अचानक सुने। खबर सुनते ी सारे गांव में यकायक दुःखमय सन्नाटा छा गया।

अन्तिम दर्शन हेतु श्रावक श्राविका सहाड़ा की ओर उमड़ पड़े।

गुरुदेवश्री कोमल शुद्ध स्वभावी एवं आदर्श धर्म प्रचारक े जिनकी वाणी अमृतमय तथा हृदय लुभाने वाली थी।

स्वर्गस्थ आत्मा को चिर शान्ति मिले।

श्री व. स्था. जैन श्रावक संघ
कुंआरिया

× × ×

स्वर्गवास के समाचार सुन कर खेद हुआ। बाजार बन्द रक्खा। स्वर्गीय आत्मा को शान्ति प्राप्त हो।

जैन श्रावक संघ धारड़ी

× × ×

भक्तिवान श्रावकों के हार्दिक

श्रद्धा सुमन

पूर्ण अविश्वास के साथ गुरुदेव श्री मांगीलालजी म सा के स्वर्गवास के समाचार अफवाह के रुप में सुने, किन्तु अविश्वास को विश्वास के रुप में परिणत होते देर न लगी।

म सा के स्वर्गवास से उनके भक्तों को खेद हुआ वह वर्णनातीत है क्यों कि वे समदृष्टि थे और सब पर उनका समान प्रेम था। हंस कर मिलना सब की कुशल पूछना उनकी स्वाभाविक बात थी वे बड़े धीर और गम्भीर थे। यह मेरा निजि अनुभव है क्यों कि हम घण्टों एकान्त में बैठ अध्यात्मिक धर्म चर्चा किया करते थ।

हमारी पारस्परिक चर्चा में हो सकता है कभी मेरे द्वारा कटु शब्दों का प्रयोग हुआ हो किन्तु म सा की ओर से कभी भी कटु प्रतिक्रिया नहीं हुई जिस से मेरे हृदय को ठेस लगे।

मुझ व किस स्नेहिल दृष्टि स निहारते थ और मेरे प्रिय उनके अन्तःकरणों में कितनी जगह थी, यह तो वही व्यक्ति अनुमान लगा सकता है जि होंने हम दानों का एकान्त विचार विमर्श सुना है।

मर जैसे अनभिज्ञ और अयोग्य के प्रति भी म सा के

कैसे उंचे भाव थे, यह समय समय पर उनके मुखारविन्द से प्रकट हुआ करते थे।

ऐसी पवित्र आत्मा का यकायक उठ जाना हमारे लिये असह्य हो रहा है। किन्तु क्या किया जाए, कालकराल का कार्य अपरिहार्य है।

मैं श्रद्धेय श्री हस्तिमलजी म. सा. से आशा करता हूं कि वे धैर्यता धारण करेंगे और अपने भक्तों पर वैसा ही अनुराग रक्खेंगे जैसा कि दिवंगत म. सा. रखते थे।

डा० पन्नालाल लोढा
उदयपुर

× × ×

एक आकस्मिक झटके के साथ पं. मुनिश्री मांगीलालजी म. सा. के स्वर्गवास के समाचार सुने। हमारे सम्पूर्ण परिवार को बहुत खेद हुआ स्व. महाराज सा. जैन जगत की महान निधि थे। उनके जाने से जो महान क्षति हुई है, उसकी पूर्ति नितान्त असंभव है।

भावी को मंजूर था उसके आगे किसी की नहीं चल सकती है।

प्यारचन्द जैन
कांकरवा

× × ×

समाचार सुन कर बहुत रंज हुआ। क्या करें इस में किसी का जोर नहीं चल सकता है मेरा तो गुरुदेव से २३ वर्ष का पुराना सम्बन्ध था।

गुरुदेवश्री बड़े कृपालु और संयमी महा पुरुष थे। उन्हें चिर शान्ति प्राप्त हो।

मांगीलाल जैन
कालादेह

× × ×

समाचार सुन कर शोक की लहर दौड़ गई। आप का जीवन एक महान ज्ञानवेत्ता व विद्वता से परिपूर्ण था। आप का धर्म प्रेम और शिक्षाएं आदर्श रहे हैं। जो भी एक बार आप का संपर्क पा लेता वह आप के गुणों व वाणी से प्रभावित हो जाता था। आप महान उच्च कोटि के संतों में से एक थे। आप का वियोग भुलाया नहीं जा सकता है। काल की गति विचित्र है।

उनके निधन पर हम शोक प्रदर्शित करते हुए चिर शान्ति की कामना करते हैं।

स्व श्री कन्हैयालालजी म सा के स्वर्गवास का खेद तो अभी भूला ही नहीं पाए कि यह दूसरा धक्का और लग गया।

मुनित्रय धैर्यता धारण करें ।

नेमीचन्द भंवरलाल रुपात्रत
मनासा (म. प्र.)

× × ×

स्वर्गवास के समाचार सुन कर हम को वहुत ही वड़ा खेद हुआ । हम को गुरुदेव के दर्शन नहीं हो सके, कितने अभागे हैं ।

इस वार तो हमारा अनुमान था कि निकट चातुर्मास है अतः दर्शनलाभ मिल सकेगा किन्तु.. ।

मुनिराज धैर्यता धारण करने का कष्ट करें ।

जवाहरलाल गन्ना
"भीम"

× × ×

अति ही खेद का विषय है कि पं. रत्न श्री मांगीलालजी म. सा. आज हमारे सामने नहीं रहे हैं। मुनिश्री की सेवा का सौभाग्य मुझे भी प्राप्त हुआ ।

वे अति ही सरल, शान्त, व शीतल स्वभाव के थे। वे सागर के समान थे सर्वगुण संपन्न हृदय को लुभाने वाले महापुरुष थे ।

यह हमारे पुण्यों की कसर है कि, एक एक कर के ऊंचे से ऊचे महापुरुष संत रत्न, हम से विदा होते जा रहे हैं.

मानों संसार की पाप प्रगति को वे नहीं देखना चाहते हों।

इस महात्मा को चिर शान्ति प्राप्त हो।

ओंकारलाल बोलमी
गागेड़ा (विजयनगर)

× × ×

स्वर्गवास के समाचार सुन कर सन्नाटा छा गया। बाजार बन्द कर, शोक मनाया। शासन देव से प्रार्थना है कि स्वर्गीय आत्मा को चिर शान्ति प्राप्त हो।

छीतरमल गोखरू
राजाजी का करेड़ा

× × ×

मुनिवर श्री मांगीलालजी महात्मा से मिलन का सुअवसर मुझे उदयपुर में प्राप्त हुआ था, अधिक सांनिध्य तो प्राप्त न हो सका पर जो स्वल्प क्षण उन के साथ व्यतित किये वे अविस्मरणीय रहेंगे। संयम मार्ग में उन की प्रवृत्ति इतनी उदात्त थी कि कितनी भी आपत्तियें-विपत्तियें क्यों न उठानी पड़े–कभी विचलित न होते थे। रोगग्रस्त देह होते हुए भी कभी उन ने चिकित्सा की परवाह न की। बल्कि वे इतने सन्तोषि थे कि अपनी पीड़ा व्यक्त ही न करते थे। ऐसे मुनियों से ही महावीर का मार्ग चमकता है। उन की

वैनयिक वृत्ति और सरलता ने मुझे प्रभावित किया। उनकी आत्माको शान्ति मिले यही अभ्यर्थना।

उदयपुर मुनि कान्तिसागर
४–६–६४

× × ×

॥ श्री ॥

दुःख ? दुःख ? ? घोर दुःख ? ? ?

परम श्रद्धेय शास्त्रवेता वीर शासन प्रदीप बाल ब्रह्मचारी पं. गुरुवर्य मुनिश्री मांगीलालजी महाराज आज इस संसार में नहीं है। जैन शासन का चमकता चांद अस्त हो गया। आप के भव्य लिलाट पर ज्ञान और वैराग्य दमकता हुआ नजर आता था। शांतता, सहनशीलता, दयालुता, धीरता, वीरता, तो आप में कूट–कूट भरी थी। आप का व्याख्यान जनता को अतीव प्रिय था। आप महोपकारी, क्रांतीकारी महापुरुष थे। गुरुदेव, मेवाड़ी मुनिश्री रचित ज्ञान खजाने का प्रचुर प्रचार कर के भारत के कोने २ में आप ही ने पहुंचाया है। आप के आकस्मिक वियोग से सारा जैन समाज अत्यन्त क्षुब्ध है। मानो–एक रंक के हाथ से अनमोल हीरा खो गया है। गुरुदेव ? आपको स्वर्ग की अप्सराओं ने खेंच लिया।

तड़फते हुए चतुर्विध संघ को निराधार छोड़ कर चले गये। दयालु देव ! आपकी आत्मा को अखंड शान्ति प्राप्त हो, यही कृपा पात्र शिष्य की श्रद्धाञ्जली है।

चरण सेवक—
कन्हैयालाल सिंगवी
मरलों की पीपली (राम)

॥ दोहा ॥

गंभीर गुण गंभीर थे, चंचल नहीं तिल मात।
रात दिवस रहते मगन, मगन मात अंग जात॥

श्री

शुद्धाशुद्ध निर्णय पत्र

पृष्ठ	लाइन	असुद्ध	सुद्ध
७	१९	धर्म	धर्म
९	२६	काधा	कीधा
११	१६	पौर	और
१७	१	भविप्य	भविष्य
१७	६	भांगीलाल	मागीलाल
१८	१२	वनाने	वनाने
१९	२५	परवार	परिवार
२४	१४	वडे	वड़े
२६	१	तेजस्वी	नेजस्वी
३१	१९	धम	धर्म
३१	२५	दापक	दीपक
३४	२३	अत्यन्त	अत्यन्त
३८	२१	प्रज्जित	प्राप्त
३९	११	सप	सप
४०	११	गुन्दरी	सुन्दरी

४० — १९ओ लाइन के बाद ' वि. सं. १९० का चौमासा उज्जैन' [illegible]

पृष्ठ	लाइन	असुद्ध	सुद्ध
४८	२४	द	यह

पृष्ठ	कालम	अशुद्ध	शुद्ध
११०	२४	वगा	दूगा
१२६	९	कर	होकर
१२७	२३	लूंगा	रालूंगा
१३०	७	कर्ते	वर्ते
१३२	६	मिते	चित्ते
१४९	४	दमर्ल	दमार्ल
१५०	६	प्राचाम	प्राचीन
१५	१६	सक्षम	संक्षम
१५४	१९	क्षमा	क्षमा
१५४	४	मेहु	महे
१५६	१५	इन्म	इन्य
१६५	१	माहनीम	मोहनीय

इनके अलावा और भी गल्तियां रह गई हो तो पाठक शुद्ध कर के पढ़े।